श्री ज्ञान पंचमी.

ज्ञानना आराधन माटेनी आ तिथिनु
आराधन करनारना उपयोग माटे
तेने लगती अनेक बाबतोनो संग्रह.

ज्ञानपंचमी तप करनारने भेट आपवा माटे
तैयार करावनार जिज्ञासु

वहेन माणेक.

शेठ जमनाभाइ भगुभाइना पत्नी.
तेमनी आर्थिक सहायथी
तैयार करी छपावी प्रसिद्ध करनार

श्री जैन धर्म प्रसारक सभा तरफथी
शा. कुवरजी आणंदजी-भावनगर.

आवृत्ति २ जी — प्रत २०००
वीर संवत २४४० — विक्रम संवत १९७०

किंमत आठ आना.



अमदावाद्

श्री सत्यविजय प्रीन्टींग प्रेसमां शा. सांकळचंद हरीलाले छाप्युं





સ્વર્ગવાસી શેઠ મનસુખભાઈ ભગુભાઈ

प्रथमावृत्तिनी प्रस्तावना.

आवी नानी बुकनी प्रस्तावना लखवानी विशेष आवश्यकता होती नथी, परतु आ बुक तैयार करवानु कारण शाथी उत्पन्न थयुं ते जणाववा माटे टुकामा प्रस्तावना लखवानी जरुर छे.

अमदावादनिवासी उदारता, धैर्यता, गाम्भिर्यता, विचक्षणता अने धर्मचुस्तता विगेरे गुणोथी अलंकृत शेठ मनसुखभाइ भगुभाइ प्रस्तुत वर्षना मागशर वदि १२ से अकस्मात पंचत्व पामवाथी तेमनुं स्मरण दीर्घकाळ पर्यंत टकी रहे अने अन्य पण भवळ लाभ थाय एवी इच्छावाळा तेमना लघुबंधव शेठ जमनाभाइना सुशील अने अनेक गुण संपन्न पत्नी अ. सौ. बहेन माणेकबाए पोते करेला ज्ञान पंचमीना तपने माते ते तप करनाराओमा ल्हाणी करवाना इरादाथी तेज तपनी पुष्टि करनार बुक छपाववा विचार कर्यो अने ते विचारने अनेक स्थानेथी पुष्टि मळता अमारी सभाना प्रमुख मी. कुंवरजी आणदजीने ते काम सोंपवामा आव्यु तेमणे प्रथम खरेखरी ज्ञानाचारनी ओळखाण थवा माटे श्री आचार प्रदीप ग्रथमाथी ज्ञानाचार पुरता विभागनु भाषातर करावी तेने सुधार्यु अने त्यार पछी ज्ञान पचमीने लगती पूजा, चैत्यवंदन, स्तवन, स्तुति, सज्झाय विगेरेनो संग्रह करी, श्री विजयलक्ष्मी सूरिना करेला ज्ञानपचमीना देव के जेना अर्थ साधारण बुद्धिवाळाने मुश्केल लागे तेवा छे ते लखी काढी विद्वान जैन बंधुओ पासे तपासरावी ते तैयार कर्या पछी

ते सर्व संग्रह आ बुकमां दाखल कर्यो. अने प्रारंभमां ते तप करवानो विधि अने अतमां ते तपना प्रकार तथा उजमणानो विधि सविस्तर दाखल करवामां आव्यो आ रीते आ बुक तैयार करवामां आवी छे

ज्ञान पचमी तपनु आराधन करनार वरदत्त ने गुणमंजरीनी कथानु भाषांतर आ बुकमां आपवानी धारणा हती, परतु ज्ञानपंचमीना मोटा स्तवनमां ते कथा आवी जती होवाथी पुनरावर्तन न थवा माटे ते दाखल करवामां आवेल नथी.

आ बुकनु कद धार्या करता मोटु थयु छे, तेमज विलंब पण वधारे थयो छे, परतु एक उपयोगी संग्रह तैयार थयेलो होवाथी ते ज्ञान पचमी तपनु आराधन करनारने अवश्य उपयोगी थइ पडशे एम धारी थवाथी प्रसिद्ध कर्त्ताने तेमज तेमां उदार दीलथी द्रव्यनो व्यय करनारने संतोष प्राप्त थाय छे.

आ बुक ज्ञानपचमी तप करनारा भाइओ तथा बहेनोने शेठ जमनाभाइ भगुभाइना पत्नी तरफथी भेट दाखल आपवा माटेज छपाववामां आवी छे तेथी आ ज्ञानदानना पुन्यना भागी तेओ थयाछे, एटलुज नहीं पण आ बुक वाचवाथी अनेक भव्य जीवो ए तप करवा उजमाळ थशे तेमज त्रिविशुद्ध ए तपनु आराधन करशे एना पण ए पुन्यशाळी कारणिक थशे आटलु जणावी आ टुकी प्रस्तावना समाप्त करवामां आवे छे. इत्यलम् विस्तरेण

भाद्रपद शुदि ९. } श्री जैन धर्म प्रसारक सभा.
स. १९६२ } भावनगर

बीजी आवृत्तिनी प्रस्तावना

उदार दीलनां माणेक बहेन पासेथी प्रथमावृत्तिनी तमाम बुको थोडा वखतमांज भेट तरीके अपाइ गइ एटले तरतमांज बीजी एक हजार नकल छपाववा तेमणे इच्छा जणावी एटले मूल्यथी लेवा इच्छनारने पण आ बुकनो लाभ मळी शके तेटला माटे एक हजार नकल अमारी तरफथी वधारीने आ बीजी आवृत्तिनी बे हजार नकलो छपाववामां आवी छे.

प्रथमावृत्ति करतां प्रारंभनां भागमां तो सहज अक्षर शुद्धिज करवामां आवी छे, परतु मांते आवेला ज्ञानपंचमीना देववंदनना अर्थ आ आवृत्तिमां जे दाखल करवामां आवेला छे तेनी अंदर प्रथम करतां घणोज सुधारो वधारो करवामां आव्यो छे एटलुं ज नहीं पण देववन्दनना अर्थ अने नोट तदन नवांज लखवामां आव्या छे. आ अत्युत्तम प्रयास 'पूज्यपाद अनेक सद्गुणालंकृत आचार्य श्री विजयनेमिसूरिना शिष्य पूज्यपाद पन्यासजी श्री उदयविजयजी गणिए' कर्यो छे तेने माटे तेओ साहेबनो अंतःकरणथी आभार मानवामां आवे छे. एओ साहेबे मेळवेला ज्ञानतु अने तेमने थयेला अपूर्व अनुभव बोधतु आमां किंचित् दिग्दर्शन कराव्यु छे पोते मेळवेला ज्ञाननो आ प्रकारे अनेक जीवोने लाभ मळी शके छे. उत्तम मुनिमहाराजानु ए कर्तव्यज छे.

आशा छे के आ बुक अनेक जीवोने उपकारक थशे. इत्यलम्.

श्रावण शुदि ५.
सं १९७०

श्री जैन धर्म प्रसारक सभा.
भावनगर.

अनुक्रमणिका.



श्री ज्ञान पंचमीनो तप.

"ज्ञानना" आराधन माटे एटले आत्मानो ज्ञानगुण जे अनादि कालथी ज्ञानावरणीय कर्मना संयोगे अवरायेलो छे तेने प्रगट करवा माटे अने ज्ञानवरणीय कर्मनो क्षय (क्षयोपशम) करवा माटे "ज्ञान पचमी" नो तप अति उत्कृष्ट साधनभूत छे ज्ञानना आराधन माटे शास्त्रकारे बीज, पाचम ने अग्यारश ए त्रण तिथिओ बतावी छे. परतु तेमा मुख्यता पाचमनी छे. प्राये प्रवृत्ति पण पचमी तप करवानी विशेष छे. आ तप कोइपण वर्षना कार्त्तिक मासनी शुक्ल पंचमीथी शरु करवामां आवे छे आ पचमी "सौभाग्य पचमी"ना नामथी ओळखाय छे. ज्ञान मेळववाना उत्सुक श्रावक श्राविकाओ अने साधु साध्वीओ आ तप विशेषे करे छे. आ तप पाच वर्ष ने पाच मास पर्यंत करवानो छे. ते एकासणाथी, आयंबीलथी अथवा उपवासथी करवामां आवे छे. शारीरीक शक्तिवाळा तो प्राये उपवासथीज करे छे चार मास उपवास न करी शके ते पण कार्त्तिक शुदि ५ मे तो अवश्य उपवास करे छे अने ते दिवसे बनतां सुधी चार के आठ पहोरनो पौषध पण करे छे. ए तपना आराधन माटे संपूर्ण विधि करवाना इच्छके नीचे प्रमाणे विधि दरेक मासनी शुक्ल पचमीए करवो

तप करवानो विधि

१ एकासणु, आयंबील के उपवास यथाशक्ति करवो

ज्ञान, दर्शन, चरण (चारित्र), तप अने वीर्य जो के मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान अने केवळज्ञान, ए प्रमाणे ज्ञानना पांच भेद छे, तो पण अहीं काळ, विनय, विगेरे आठ प्रकारनो ज्ञानाचार कहेवामां आवशे, अने ते श्रुतज्ञानमांज संभवे छे, तेथी अहीं श्रुतज्ञान विषेज अधिकार छे, एम जाणवु श्रुतज्ञानथीज बाकीना ज्ञानो प्रगटे छे, केमके श्रुतज्ञान प्राप्त थया पछीज प्राये बीजां ज्ञानो प्राप्त थाय छे वळी एक अपेक्षाए केवळज्ञान करतां पण श्रुतज्ञाननु अधिकपणु छे (उत्कृष्टपणु छे), ते विषे पिंडनिर्युक्तिमां कह्यु छे के–' ओघे करीने (सामान्य रीते) पिंडविशुद्धयादिक श्रुतज्ञानने विषे उपयोगवन्त एटले के श्रुतने अनुसारे " आ कल्प्य छे, आ अकल्प्य छे " एवी रीते जाणता श्रुतज्ञानी जो कोइ पण कारणथी अशुद्ध आहार लावे, तो पण केवळज्ञानी (केवळी) तेनो आहार करेछे जो केवळी ते आहार ग्रहण न करे तो श्रुतज्ञान अप्रमाणिक थाय, कारण के छद्मस्थ साधु श्रुतज्ञानना बळे करीनेज शुद्ध आहारनी गवेषणा करी शके छे, ते सिवाय बीजी रीते करी शकता नथी. तेथी जो कदाच श्रुतज्ञानीए श्रुतने अनुसारे गवेषणा कर्या छता पण " अशुद्ध आहार आप्यो " एम कहीने केवळी तेनो आहार न करे, तो श्रुतउपर अविश्वास थाय, अने तेथी कोइ पण श्रुतनु प्रमाण न करे तथा श्रुतज्ञानना अप्रामाण्य थी सर्वत्र क्रियाना लोपनो (अभावनो) प्रसंग आवे, केमके छद्मस्थोने श्रुतविना क्रियाकांडनु ज्ञान शाथी करवु ? " तथा विशेषावश्यकमां पण कह्यु छे के–" श्रुतज्ञान महर्द्धिक (सौथी मोटु) छे, अने

त्यारपछी केवळज्ञान छे. कारण के श्रुतज्ञान पोतानो अने बीजा ज्ञानोनो विभाग करनार छे. अर्थात् श्रुतज्ञानथीज श्रुतज्ञान अने बीजां ज्ञानोनी समजण पडे छे. श्रुतज्ञान एटले द्वादशांगी संबंधी ज्ञान.

ज्ञानाचारना आठ भेद छे. ज्ञान आ भव अने परभवने विषे हितकारक छे, कारण के मायें ज्ञानथीज इष्टकार्यनी सिद्धि थाय छे ज्ञान विना विपरीत फळनी पण प्राप्ति थाय छे, अने ते सर्वजनने अनुभवसिद्ध छे. जेमके–भोजन, गमन, आच्छादन (पहेरवु), शयन, बेसवु, बोलवु, थयेली वात केहेवी, स्नान, पान, गायन, विज्ञान (कळा), दान, ग्रहण, निवास, प्रीति, वैर, स्वजनता, पिशुनता, सेवा (नोकरी), युद्ध, औषध, मंत्रसाधन, देवनी आराधना, थापण मूकवी विगेरे विश्वासना कार्यो, तथा राज्यनो व्यपार ए विगेरे सर्व कार्योमा जो कदाच भावी (थवाना) अनर्थनु ज्ञान होय तो तेमा मनुष्य शीरीते प्रवर्ते ? अने तेज अनर्थनी शंकावाळा भोजनादिकमा इष्ट सिद्धि थशे, एवु जो ज्ञान होय तो तेमा केम न प्रवर्ते ? कह्यु छे के–" द्वेषादिक सर्व दोषो करतां पण अज्ञान ए मोटु कष्ट छे, केमके अज्ञानथी आवरेलो जीव हित अथवा अहित पदार्थने जाणतो नथी अने ज्ञान ए प्रयत्नविनानो प्रदीप (दीवो) छे, निरंतर उदय पामेलो सूर्य छे, बीजु लोचन छे अने चोरी न शकाय के हरण करी न शकाय तेवु धन छे, " वळी कह्यु छे के–" पापथी निवृत्ति, कुशळपक्षमा प्रवृत्ति अने विनयनी प्राप्ति ए त्रणे ज्ञानथीज थाय छे. " तत्त्वने विषे श्रद्धा राखवा रूप जे दर्शनादिक, ते पण ज्ञानथीज प्राप्त थाय छे. केमके

आप्त विगेरेना उपदेशवडे ज्यां सुधी तत्त्वनु ज्ञान न थाय त्यां सुधी तेनापर श्रद्धा शी रीते थइ शके ? ते विषे शास्त्रमा कह्यु छे के-"ज्ञानवडे पदार्थो जणाय छे, दर्शनवडे तेपर श्रद्धा थाय छे, चारित्रवडे तेनु ग्रहण थाय छे, अने तपवडे शुद्ध थवाय छे " तेथी दर्शनेग पाचे आचारोमा ज्ञानाचार सौथी प्रथम कहेराय छे, अने त्यारपछी दर्शनाचार छे. दर्शनाचार होवाथीज माये चारित्र ग्रहण कराय छे, तेथी दर्शनाचारनी पछी चारित्राचार होय छे चारित्र ग्रहण कर्या पछी कर्मनी निर्जरामाटे तपस्या करवी जोइए, माटे चारित्राचार पछी तपाचार कहेराय छे ज्ञानाचार आदि चारेने विषे सर्व शक्तिए करीने यत्न करवो, परतु एकेने विषे वीर्यने गोपववु नहीं, ए हेतुथी वीर्याचारने छेल्लो कहेलो छे आथी ज्ञाननु परम उपकारीपणु सिद्ध थाय छे. ज्ञानमा पण श्रुतज्ञाननु मुख्यपणु होवाथी तेना आराधन माटे सर्वशक्ति पूर्वक यत्न करवो कह्यु छे के-" जो कदाच आख दिवसमा एकज पद भणी शकाय, अथवा पदर दिवसमा अर्ध श्लोक ज भणी शकाय, तो पण जो ज्ञान शीखवानी इच्छा होय तो तेनो उद्यम पण छोडवो नहीं "

सम्यग्दृष्टिए ग्रहण करेलु सर्व कोइ शास्त्र श्रुतज्ञानज छे कह्यु छे के-" व्याकरण, छन्दस्, अलकार नाटक, काव्य, तर्क अने गणित विगेरे रूप श्रुतज्ञान सम्यग्दृष्टिना ग्रहण करवाथी पवित्र थयु छतु जयवतु वर्ते छे. " समग्र शास्त्रनी वात तो दूर रहो, परतु एक श्लोक विगेरेनु ज्ञान पण मोटा गुणने माटे थाय छे कह्यु छे के-"जेम दोर-

हानी राश कुमार्गे चालता बळदने तथा चोक्कु घोडाने सन्मार्गे लइ जाय छे, तेज प्रमाणे ज्ञान पण ' आम ' नामना राजाने, ' मुंज ' राजाने तथा ' यव ' नामना ऋषि विगेरेने सन्मार्गे लइ जनार थयु छे. " श्रुतज्ञाननु आराधन करवाथी "पृथ्वीपाल" राजानी जेम तेज भवमां केवळज्ञान पण सुलभ थाय छे तेनी कथा नीचे प्रमाणे–

पृथ्वीपाळ राजानी कथा.

" पृथ्वीपुर " नामना नगरमा समग्र पदार्थोनी परीक्षा करवामा विचक्षण अने तात्कालिक बुद्धिवाळो " पृथ्वीपाळ " नामे पृथ्वीपति (राजा) हतो " धर्मथी इष्टनी प्राप्ति अने अधर्मथी अनिष्टनी प्राप्ति थाय छे " आ प्रमाणेना शास्त्रना वाक्यनो जूदा जूदा दर्शनमां सवाद होवाथी ते राजाने शास्त्रो उपर बहुमान नहोतु कारण के ते राजा केटलाएक पुण्यवंत मनुष्योने निरंतर दारिद्र अने आधि व्याधिथी दुःखी थता जोतो हतो, तथा केटलाएक पुण्यरहित मनुष्योने साम्राज्यसुखने भोगवता जोतो हतो. ते चतुर राजा एकदा (रात्रे) नगरचर्या जोवाने गुप्त वेष धारण करी फरतो फरतो कोइ विश्रामठ पासे आव्यो. त्यां तेणे पाठके बोलातो एक उज्वळ यशनी जेवो श्लोक सांभळयो––

" सर्वत्र सुप्रिया सन्तः, सर्वत्र कुधियोऽधमा ।
सर्वत्र दुःखिनां दुःख, सर्वत्र सुखिनां सुखम् ॥१॥"

अर्थ––" सत्पुरुषो सर्वत्र अति प्रिय होय छे, अधम पुरुषो

सर्वत्र दुष्ट बुद्धिवाळा होय छे, दु:खी माणसोने सर्वत्र दु:ख होय छे, अने सुखी माणसोने सर्वत्र सुख होय छे. ”

आ श्लोकमां कहेली बाबत सत्य छे के नहीं ? तेनी परीक्षा करवानी इच्छाथी ते राजाए बीजे दिवसे कृत्रिम कोप करीने एक घणा गुणोवडे प्रसिद्ध एवा महा सत्पुरुषने पोताना सेवको द्वारा बोलाव्यो, अने तेने कह्यु के–“ हाथीनी जेम मदांध थयेला तारा पुत्रे मारी आपेली आज्ञारूपी अर्गला (सांकळ)ने मारा चर पुरुषना समस्त वळथी तोडी नाखी छे ” आ प्रमाणे अत्यंत कृत्रिम कोप करीने दोषनो आरोप करी राजाए तेने तेना पुत्रसहित चोरनी जेम कारागृहमां नाख्यो अने पोताना अति विश्वासु चर पुरुषोने गुप्त रीते तेमनी वातो सांभळवा माटे आज्ञा करी पछी राजाए कपटथी पोताना शरीरमां अत्यंत व्याधि थयानु प्रगट कर्यु तेथी गुप्त चर पुरुषो पण परस्पर आ प्रमाण बोलवा लाग्या के–‘ आमे राजानु शरीर आयुष्यना अंत समय जेवु थयु जणाय छे आवा आकस्मिक महाव्याधिथी जीवितनी आशा क्याथीज होय ? ” आ प्रमाणे नजीकना चर पुरुषोथी थती वात सांभळीने स्वभावथीज परहितकांक्षी एवा ते पिता अने पुत्र महा शोक पाम्या, अने निझरणानी जेम चक्षुमांथी अश्रुने मूकवा लाग्या पछी ते बन्ने परस्पर हृदयमां रहेली वातो करवा लाग्या के–“ हा ! हा ! राजाना शरीरमां आ अकस्मात् शु थयु ? गमे ते थयु होय पण परिणामे आ राजानु कांई पण अहित न थाओ. जो के आ राजाए आपणने सहसात्कारे फोगट

दुःखमां नाख्या छे, अने आ राजानु मरण थयेथी आपणे जलदी छूटी शकीए खरा. कारण के नवो राजा राज्य मळवाथी समग्र केदीओने छोडी मूके छे अने केदीओने छोडया पछीज नवा राजाने अभिषेकोत्सव करवानो रीवाज छे, ए सिवाय बीजी रीते आपणे छुटीए तेवु कोइ प्रकारे जणातु नथी. वळी आज्ञाभंगनो आक्षेप करनार अने अत्यंत क्रोधायमान थयेलो आ राजा आपणने कोण जाणे केवी कदर्थना पमाडशे ? तेनी खबर पडती नथी. कह्यु छे के–" राजाओनी आज्ञानो भंग, महा पुरुषना माननु खंडन, अने ब्राह्मणनी वृत्ति (जीविका)नो नाश, ए शस्त्रविनानो वध कहेवाय छे " आ प्रमाणे होवा छता पण जगतुना जीवनरुप आ राजा चिरकाळ सुधी जीवतो रहो. बीजा जीवनु पण अनिष्ट चिंतववु योग्य नहीं, तो राजानु अनिष्ट शी रीते चिंतववालायक होय ? वळी आपणने जे आ दुःख प्राप्त थयु छे, ते तो आपणाज दुष्कर्मे थयेलु छे, तेमा आ राजानो काइपण दोष नथी जो एमन होय तो आ हुशीयार राजा परीक्षा कर्या विना आम केम करे ? कह्यु छे के–' सर्व जीवो पोताना पूर्वे करेला कर्मोना फळविपाकने पामे छे, तेमा अपराध (हानि) अथवा गुण (लाभ) करवाने विषे बीजो तो निमित्तमात्र ज छे " ज्यारे कर्म बळवान् होय छे त्यारे अचिंत्योज मर्मस्थानमां घा वागे छे अने ते वखते प्राणनु रक्षण करनार कोइपण थतुं नथी. तेमज काइ पण आचार के विचार पण काम आवता नथी तथा आपणा कर्मना वशथी आपणु जे थवानु होय ते थाओ, परन्तु आ राजानुं तो सर्वथा शुभज थाओ, एटलाथीज आपणने सर्व रीते संतोष छे "

आ प्रमाणे ते पिता अने पुत्रनी परस्परनी वातोने गुप्तरीते सांभळनारा चर पुरुषोए तत्काळ आवीने राजा पासे स्पष्टरीते जाहेर करी. एटले राजा मनमां आनंदित थयो पछी पुष्ट बुद्धिमान् अने तुष्ट थयेला राजाए क्षणवार पछी पोताना शरीरनी हुशाकारी प्रगट करी. अने तेज बन्नेने घणा मानपूर्वक पोतानी पासे बोलाव्या पछी निर्मळ बुद्धिवाळा राजाए कार्यनी व्यग्रताथी समाळ लेतां विलंब थयातु जणावी तेमनो सत्कार करी तेमने रजा आपी. एटले ते बन्ने हर्ष पामता पोताने घेर गया. आ सर्व शुभ स्वभावनुं फळ छे

श्लोकना पहेला पादनी आ प्रमाणे परीक्षा कर्या पछी राजाए बीजा पादनी परीक्षा करवानो आरंभ कर्यो. नगरना कोइक अति नीच प्रकृतिवाळा पिता पुत्रने कृत्रिम बहुमान आपीने मंत्री विगेरेथी पण अधिक मानवाळा कर्या पछी एकदा प्रथमनी ज जेम राजाए पोतानी कृत्रिम तीव्र व्याधिने प्रगट करी, पोताना आयुष्यना अन्त्यनी स्थिति चरपुरुषो द्वारा तेमने जणावी ते सांभळीने अधम स्वभाववाळा ते बन्ने पोतानी प्रकृतिने योग्य एवी वातो करवा लाग्या, केमके एकांत समये हृदयनो भाव प्रकट थाय छे ते समये गुप्त रीते राखेला चर पुरुषो तेमनी वातो पण सांभळता हता. ते पिता तथा पुत्र आ प्रमाणे परस्पर बोलवा लाग्या—"आ राजा जो हमणाज मरे, तो आपणे आनंदथी अपुत्रीया राजाना समग्र साम्राज्यनो उपभोग करीए. राज्यमां आपणने कोण मान्युं नथी ? सर्व माने छे अथवा कदाच कोइक नहीं माने, तो तेने तत्काल हणीने

पण आपणे राज्य करशुं नवा राजानी एवीज रीत होय छे कदाच राज्य लेवाने आपणे समर्थ नहीं थइए, तो पण स्वेच्छाए राजानुं सर्वस्व लुंटी लइने अंतःपुरनी राणीओ साथे अने नगरनी स्त्रीओ साथे सुखभोग तो सुखेथी भोगवशुं माटे आ राजानुं पोतानी मेळे ज मरण थाय छे, ते सारु छे; नहीं तो आपणे तेने मारवानी जरुर पडत. केमके राजगृहनी अंदर फरनारा आपणने शुं दुःसाध्य छे ?" आ प्रमाणे ते दुष्टबुद्धिवाळा दुष्टोनी पापिष्ट वातचित साभळीने पेला गुप्त चर पुरुषोए ते वात राजानी पासे कही शकाय तेवी न होवा छता पण गुप्तरीते जणावी ते साभळीने अत्यंत कोपथी कंपता जागृत न्यायवाळा ते राजाए तत्काळ ते बन्नेनो निग्रह कर्यो राजाओने दुर्जननो तिरस्कार अने सज्जननी पूजा करवी उचितज छे

आ प्रमाणे बे पादनी परीक्षा करीने त्रीजा पादनी परीक्षा करवा माटे राजाए पोताना चरपुरुषद्वारा जन्मथीज दारिद्र्यवडे दग्ध थयेला एक रांक भिक्षुकने बोलाव्यो तेना हाथमा भिक्षा मागवालायक एक कर्पर (ठीकरु) हतु, तेणे कंथानी जेवा फाटेला जूना वस्त्रनो एक ककडो पहेरेलो हतो, चालता टेको आपवा माटे लाकडीनो ककडो हाथमा हतो, तेनी गति स्खलित थती हती, अने तेनुं शरीर अत्यंत कृश हतुं आवा ते भीखारीने जोइने राजाए तेने कह्यु के-" हे भिक्षुक ! तारा शरीरने अभ्यंग, मर्दन, उद्वर्तन, स्नान, भोजन, वस्त्र, शय्या अने आसन ए विगेरे इप्सित वस्तु आपवावडे हु तने सुखी करीश, तु मारी पासे रहे अने सुखेथी मनुष्यने मळता सुखो भोगव

आ भिक्षुकना वेषने छोडी दे अने बीजा उत्तम वेषने धारण कर सारा नसीबने पण फेरवी नाखीने हु तने पृथ्वीपति समान बनावी दइश, केमके कल्पवृक्षनी जेम हु प्रसन्न थयेथी तारे दुष्प्राप्य शु छे ?" आ प्रमाणे घणीरीते कह्या छता पण ते आरम्भहीन भिक्षुक जरा पण विश्वास न पाम्यो, अने जेम मिथ्यात्वी प्राणी मिथ्यात्वनो त्याग न करे, तेम तेणे पोताना वेषनो त्याग कर्यो नहीं ज्यारे राजपुरुषो तेने बळात्कारे वेष मूकाववा लाग्या, त्यारे तेने जाणे कोइए मार्यो होय तेम ते रोवा लाग्यो ते जोइने राजाए तेने कह्यु के-" तारो वेष कायम राखीने पण तु भोजनादिकवडे सुख भोगव "ते सांभळीने प्रसन्न थयेलो ते भिक्षुक जेम पहेला कषाय (अनतानुबधी)ना उदयवाळो जीव (प्रथम पामेला) सर्व सम्यक्त्वने वमी नाखे, तेम प्रथम भेतनी जेम घणु जम्यो, अने पछी तत्काळ ते सर्वज्ञ वचन कर्यु कह्यु छे के-" दैवनु (कर्मनु) उल्लघन करीने जे कार्य करवामां आवे छे, ते फळीभूत थतु नथी चातक पक्षीए ग्रहण करेलु सरोवरनु पाणी गळाना रध्रद्वाराए बहार नीकळीजाय छे " पछी राजाए सायकाळे तेने फरीथी भोजन करावीने तांबूलादिक आप्यां ते वखते पण ते नारकीनी जेम पेटनी व्यथादिक दु खने स्पष्टरीते भोगववा लाग्यो. ते व्याधिनो राजाए उपचार कराव्यो त्यारे अतिसार (झाडा)ना व्याधिथी ते अत्यत पीडायो, अने ते अतिसारनो उपचार कराव्यो त्यारे तत्काळ मृत्युने सूचन करनारा विसूचिका नामना व्याधिवडे पीडावा लाग्यो आ प्रमाणे उत्तम राजाए यत्न कर्या छता पण ते रक्त,

अतिसार, तीव्रज्वर, पित्त, कफ अने वात विगेरेना व्याधिथी पीडा-यो, पण दैवथी हणायेलो ते जरा पण सुख पाम्यो नहीं. मति जड बुद्धिवाळाने गुरु महाराजनी जेम राजाए तेने कोइ पण प्रकारे विविध प्रकारना दुष्कर उपायोवडे साजो कर्यो. 'उद्यमवडे शुं न थाय?' पृथ्वीपाल राजा तेने साजो थयेलो जोइ अत्यत खुशी थयो त्यारे अहंकार अने हुंकार करतो ते द्रमक एक दिवसे पोताना कर्मथी क-रायेला दुर्दैवथी प्रेरायो होय तेम विषवैद्यने घेर गयो त्यां दवाओनी मेळवणीथी विषम थयेलुं एक जातनुं विष तेनी दृष्टिए पडयुं. एटले तरतज नष्ट बुद्धिवाळा ते द्रमके तेने सुंघ्युं, सुंघवा मात्रथी पण ते विष पराधीनताने करनारु हतुं तेथी ते वैद्ये तेने एकदम अटकाव्यो अने कह्युं के-" आ तें शुं कर्युं ? विचार्याविना जे काम करवुं ते मरण-पर्यंत दुःखने देवावाळुं थाय छे " एटले ते भिक्षुक बोल्यो के-" हे वैद्य ! जेम अनर्थथी अटकावे तेम आ सुगंधि पदार्थ सुंघता मने केम अटकावो छो ? " वैद्ये कह्युं के-" हे मूर्ख! तीव्र विपाकथी गौरवताने पामेलुं आ महाविष तें सुंघ्युं, तेथी आ जन्ममां तो तारे सुखनो विनाश ज थयो आजथी पांचे इंद्रियोना विषयोने लगता पदार्थोमांथी एक पण इष्ट पदार्थ तारे सुखने माटे सेववो नहीं, अने जो सेवीश तो त-त्काळ तारु मरणज थशे. हवे तारे लूखुं रसविनानुं अल्प भोजन करवुं, खेरुं तेनुं पाणी पीवुं, जीर्ण अने फाटेलां वस्त्रो पहेरवा, तथा भोगनो त्याग करवो, परीषह सहन करवा अने अनियमित व-सवुं. ए विगेरे मुनिनी जेवी मर्यादावडे जो रहीश, तो तुं जीवतो

सिद्धिओ अने समृद्धिओ मनथीज सिद्ध थाय छे. ” ते साभळीने राजाए कह्यु के-“ हे देव ! तमे आ माटे जुठ्ठ बोलो छो ? देवोनु पण मनोवाछित सिद्ध थतु नथी देवो पण घणा दु खी होय छे, केमके इर्ष्या, विषाद, मद, क्रोध, मान अने लोभ इत्यादिवडे देवो पण दु खी होय छे तेओ बीजा पोताथी अधिक ऋद्धिवाळाथी पराभव पामे छे. माटे तेमने पण सुख क्याथी ? तेथी जो देवोथी पोतानु वाछित पण सिद्ध थतु नथी, तो ते बीजानु शीरीते सिद्ध करशे ? माटे देवोथी पण अन्यनु मनोवाछित सिद्ध करायज नहि. शु रक माणस धाजाने राज्य आपी शके ? माटे हे देव ! तमे विद्वान् थइने गर्वथी अविवेकनी जेम आम केम बोलो छो ? सत्यवक्ता मनुष्य पण आवु असत्य बोलता नथी, तो तमे देव थइने केम बोलो छो ?” आ प्रमाणे राजाए तत्त्व अने युक्तिवाळु कह्यु, ते साभळीने चित्तमा चमत्कार पामेलो यक्ष बोल्यो के-“ हे महापुरुष ! तें आ जे कह्यु ते सर्व सत्य छे देवोने पण बीजानी जेम पूर्वे करेला पोतपोताना पुण्यने अनुसारे ज कार्य सिद्धि थाय छे तो पण देवनी शक्ति अचिंत्य छे तेथी ते चितवेलु कार्य करी शके छे जेवु सुख मनुष्योथी साधी शकातु नथी, तेवु सुख देवता शीघ्रताथी साधी शके छे, माटे तु मारी पासे काइ पण माग. तु जे मागीश, ते माराथी अवश्य सिद्ध थशे, हु ते सर्व तने आपी शकीश. केमके देवनु दर्शन निष्फळ होयज नहि, ” आ प्रकारे साभळीने ते देवनु वचन अत्यत दृढ करवा माटे राजाए कह्यु के-“ हे देव ! जो तमारी इच्छा एमज होय तो हु ज्यारे तमारु स्मरण

करु त्यारे तमे मारुं कार्य सिद्ध करजो." ते देवे तेनु वचन अंगीकार कर्यु केमके जे पुण्यवान होय छे, तेनु कार्य अवश्य सिद्ध थाय छे, अने चिंतव्या करतां पण अधिक समृद्धि प्राप्त थाय छे, त्यार पछी हर्ष पामेलो राजा विचार करवा लाग्यो के-"अहीं पण हु अधिक सुखी तो थयो, ते छता पण परीक्षाने माटे हु परदेश गमन करु" एम विचारीने ते राजाए यक्षने कह्यु के-"हे देव! मने हमणांज परदेशमा (दूर देशमा) पहोंचाडो." एटले देवशक्तिथी ते राजा वायुनी पठे क्षणवारमा परदेश पहोंच्यो. त्या परम नीतिना अवधिरूप कुशस्थळ नामनु नगर हतु. ते नगरना समीपना उद्यानमा मुसाफरनी जेम ते राजा गवाता कोढीया पुरुष जेवु रुप धारण करीने बेठो.

ते कुशस्थळ नगरमा चद्रनी जेम लोकने आनद करतो चद्र नामे राजा राज्य करतो हतो. ते राजा नामवडे चद्र छता सूर्यनी जेम शत्रुना तेजनो नाश करतो हतो ए आश्चर्य छे. ते राजाने चद्र जेवा मुखवाळी प्रियवचना अने प्रियवदना नामनी बे राणीओ हती, पहेली राणी गुणवडे अधिक हती, अने बीजी चंद्रना जेवा सुदर मुखवाळी हती. पुत्ररहित एवी ते बन्ने स्त्रीओने अत्यत प्रीतिनां पात्रभूत एक एक पुत्री हती. तेमा पहेलीनु नाम सुलोचना अने बीजीनु नाम सुवदना हतु ते बन्ने पुत्रीओ सरखी उम्मरवाळी, सुंदर अने समान रुपवाळी, गुणोवडे अत्यत श्रेष्ठ अने पृथ्वीपर आवेली देवकन्याओज होय, तेवी शोभती हती. योग्य वये ते बन्ने राजाए घणी कळाओ शीखवी ज्यारे ते बन्ने युवावस्था पामी, त्यारे एक

दिवस तेमनी माताओए तेमने विशेष आभूषणादिकवडे शणगारीने राजा पासे मोकली, सभामंडपमां बेठेला राजाए कमळ उपर हंसीओनी जेम तेमने पोताना उत्संग (खोळा) मां बेसाडी. पछी प्रश्नोत्तर आदि अनेक प्रकारनी पृच्छाओना ते बन्ने कन्याओए साक्षात् सरस्वतीनी जेम तत्काळ उत्तर आप्या पछी राजानी आज्ञाथी मोटा मोटा पंडितोए पण तेमनी कळा कुशळतानी परीक्षा माटे अनेक प्रकारना प्रश्नो पुछया ते दरेकना जवाबो पण ते बन्ने कन्याओए घणाज संतोषकारक आप्या,[1]

त्यार पछी राजाए पोते बन्ने कन्याओने कह्युं के–" मारा प्रश्नो जवाब तमे बेउ बराबर आपो के–कर्म (प्रारब्ध) अने उपक्रम (उद्यम) ए बेमां मुख्य कोण ? पहेलुं के बीजुं ? के ते बन्ने समान छे? ते कहो " त्यारे पहेली कन्या बोली के–' पराक्रमनी जेम सर्व स्थळे उपक्रमज (उद्यमज) फळ साधननुं कारण छे उद्यमविनानुं कर्म (प्रारब्ध) निष्फळ छे भोजन, वस्त्र, धन उपार्जन, अन्यनुं वशीकरण, शत्रुनो नाश, विद्यानी प्राप्ति अने राज्यनो लाभ इत्यादि सर्व कार्य उद्यमथीज सिद्ध थाय छे कह्युं छे के–"उद्यमेडज सर्व कार्य सिद्ध थाय छे, पण मनोरथोवडे सिद्ध थतां नथी, केमके सूतेला सिंहना मुखमां पोतानी मेळेज मृगला प्रवेश करता नथी तेथी बिलाडीनी जेम निरंतर उद्यमज करवो. जेमके बिलाडो ज मथीज तेनी पासे गाय

१ आ स्थळे घणा प्रश्नोत्तरो विस्तारवाळा छे, पण ते आ ग्रन्थना अभ्यासीनेज उपयोगी होवाथी अहीं लख्या नथी. जिज्ञासुए आचारप्रदीप ग्रन्थमांथी ते वांची लेवा.

नथी तो पण हमेशा उद्यम करवाथी दूध पीए छे " ते सांभळीने बीजी कुमारी बोली के-' कर्म (प्रारब्ध) विना उद्यमनुं शुं फळ ? कांइज नहीं. जेम बीजविना खेती करवाना सर्व उद्यम निष्फळ छे, तेम कर्मरूप बीजविनानो उद्यम निरर्थक छे. कह्यु छे के-" घणा उपायो कर्या छतां पण भाग्यविना तेनुं फळ प्राप्त थतुं नथी. केमके राहु अमृत पींवा जतां उलटो अंगरहित थइ गयो. वळी उद्यमी माणसनो उद्यम पण कर्म विना फळीभूत थतो नथी. केमके-" बुद्धिः कर्मानुसारिणी-कर्मने अनुसरीनेज बुद्धि प्रवर्ते छे. " एम ज्ञानी पुरुषोए कह्युं छे. माटे उद्यमनुं पण कारण होवाथी कर्मज प्रधान (मुख्य) छे. हे बहेन ! आ स्थळे तने हुं एक दृष्टांत कहुं छुं ते तुं सांभळ--

कोइ बे पुरुषो वादविवाद करता राजानी पासे गया. तेमां एक कर्मनुं अने बीजो उद्यमनुं स्थापन करनार हतो राजाए तो ते बन्नेने जूठा पाडवा माटे चोरनी जेम कोइ कारागृह जेवा घरमा तरतज हुकम करीने तेमने नाख्या. ते घरमां गुप्त रीते सर्व भक्ष्य वस्तु रखावीने ते घरना द्वार बंध कर्या, अने ते बन्नेने राजाए कह्युं के-" हवे तमे बन्ने उद्यमनुं अथवा कर्मनुं फळ जुओ तमारी इच्छाथी भोजन करो, अथवा इच्छाथी बहार नीकळो. " त्यार पछी उद्यमवादीए विचार कर्यो के-" कोइ वखत कर्म फळीभूत थाय छे, अने कोइ वखत उद्यम पण फळनुं कारण थाय छे ए रीते सर्व वस्तुनी पण पोतपोताना समयने विषे सिद्धि रहेली छे " आ प्रमाणे विचारी

करीने कांइक विलंब करी कर्मवादी प्रत्ये बोल्यो के–" हे भाइ ! हवे आपणे आ स्थळे शु करवा योग्य छे, ते कहो." कर्मवादीए जवाब आप्यो के–" पोतानी मेळेज सौ सारा वानां थशे. सुखेथी बेसी रहो, अथवा सुखथी हरो फरो. परंतु हु तो कर्मनेज प्रमाण करीश." पछी उद्यमवादी तेना वचननी अवगणना करीने उभो थइ विचार करवा लाग्यो के–" आ घरमा कांइ पण खावा योग्य वस्तु होय तो शोधी लउ." एम विचारीने ते खोवायेली वस्तुनी जेम घरमा चोतरफ जोवा लाग्यो. तेवामां ते ओरडामां उपराउपरी गोठवेला हाल्लानी वचेडमां जोतां वचला माटल्लामांथी वस्त्रना छेडाने खेंचता वस्त्रमां वींटेला घणा घीवाळा, हर्षकारक, चार लाडु जोवामां आव्या. पछी " हु मारा उद्यमनु फळ आ पुरुषने देखाडु." एम धारीने तेणे गणपतिनी आगळ जेम लाडु धरे तेम पेला कर्मवादीनी पासे ते लाडु मूक्या, अने बोल्यो के–" जुओ ! हाथे पगे पांगळा पुरुषनाज जेवु कर्म छे के नहीं ? केमके ते कर्मवडे पोतानु काइ पण कार्य सिद्ध थतु नथी आ प्रत्यक्ष उद्यमनुज मोडु फळ देखाय छे." ते सांभळीने कर्मवादी हसीने बोल्यो के–" तमे जे मोटा कष्टथी फळने प्राप्त कर्यु, ते मारी पासे लावीने मूक्यु, ते मारा कर्मनुज फळ छे, प्रसन्न थयेला मारा कर्मेज तमने पण आ उद्यम करवानी बुद्धि आपी छे जो एम न होय, तो तु पण मारी जेम बेसीज रह्यो होत पण तने स्वस्थपणे बेसवा न दीधो, एज मारा कर्मनुं पराक्रम जाण माटे मारे तो कर्मज प्रधान छे, उद्योगादिक काइपण

प्रमाण नथी जिनेश्वरोने पण कर्मज अनंत सुख आपे छे, तथा दुःख पण आपे छे " आ प्रमाणे तेना बोलवाथी उद्यमवादीए पण तेनी वातने अंगीकार करी. केमके जेनुं दृष्टांत प्रगटपणे जोयुं होय एवा दार्ष्टांतिकने कोण न माने ! पछी भाइनी जेम वहेंचीने ते बन्ने जण लाडु जमवा लाग्या तेमा एक लाडुमांथी कर्मवादी अमूल्य रत्न पाम्यो. एक चित्तवाळो थइने जे जेनु बहुमान करे छे ते तेने अवश्य फळनी प्राप्ति करी आपे छे अने तेनापर देव, गुरु, धर्म, मत्र, राजा अने शेठ विगेरेनी जेम ते प्रसन्न थाय छे आ प्रमाणे प्रसन्न थयेला कर्मे कर्मवादीने रत्न आप्युं त्यारे समकित दर्शन प्राप्त थवाथी भव्य पुरुषनी जेम ते उद्यमवादी पण कर्मपक्षने विषे दृढ बुद्धिवाळो थयो. हवे ते निर्जन स्थानमां (घरमा) ते रत्नवाळा मोदकनो योग शी रीते थयो, ते कहुं छु. केमके जे वात सारी रीते जाणवामा न आवे ते वात शल्यनी जेम हृदयमां खुंचे छे (त्यारा) ते घरमा समृद्धिवाळो एक राजानो सेवक रहेतो हतो. तेनी स्त्रीए पोताना धणीथी छानुं पोताना जमाइने आपवा माटे एक श्रेष्ठ रत्न एक मोदकमा नाखीने चार लाडु कर्या हता ते मोदकोने एक वस्त्रना ककडामा बांधीने जीवितनी पेठे गुप्त रीते उनेडना वचला माटलामां मूक्या हता अन्यदा कोइ निमित्तथी राजा ते सेवकपर कोप पाम्यो, तेथी तेने कुटुंबसहित ए घरमांथी काढी मूक्यो. केमके राजानु मान तो स्वप्न जेवुज होय छे ते वखते राजाथी भय पामेलो ते सेवक पोतानु सर्वस्व तजीने कुटुम्बसहित घरमांथी नीकळी गयो हतो. आ प्रकारे कर्मसंयोगे ते घरमां

मोदकमां नाखेला रत्ननो योग कर्मवादी पुरुषने प्राप्त थयो. आ सर्व हकीकत राजाना जाणवामां आवी त्यारे ते चमत्कार पाम्यो, अने ते बन्नेने छोडी मूक्या आ प्रमाणे कर्मवादी अने उद्यमवादी बन्ने विवादरहित थइने अत्यंत सुखी थया

माटे हे बहेन ! समग्र कार्यने साधनारु कर्मज छे, एम तुं पण अंगीकार कर, त्रण जगतना समग्र जीवो जेने आधीन छे एवुं कर्मज प्रधान छे " ते सांभळीने प्रत्युत्तर देवामां असमर्थ परंतु छळरूपथी बोलवाना स्वभाववाळी मोटी बहेन बोली के-" जो सर्व कर्मनाज प्रसाद छे, तो तुज बोल के तुं कोना प्रसादथी (कृपाथी) सुखीछे, अथवा मान पामे छे ? तथा आ समग्र लोको कोनी कृपाथी सुखीया छे ? " त्यारे नानी बहेन बोली के-" अंत:करणमां कूडकपट राखीने केवळ मुखथी मीठुं मीठुं बोलवाथी शुं फळ छे ? सर्वने पोतपोताना कर्मना प्रभावथीज सुख दु:ख प्राप्त थाय छे जीवोने पुण्यना उदय प्राप्त थाय त्यारे राजा तेमनापर प्रसन्न थाय छे; अने सर्व इष्ट वस्तुने आपे छे तथा पापनो उदय थाय त्यारे यमराजनी पेठे ते रोष पामे छे अने सर्व वस्तुनुं हरण पण करे छे कहुं छे के-' सर्व जीवो पूर्वे करेला कर्मनुज विशेष करीने फळ पामे छे अपराधमां अथवा गुणमां (लाभमां के हानिमां) बीजो तो निमित्तमात्रज छे ' आ प्रमाणे नानी कुमारीनुं वचन सांभळीने मनमा क्रोध पामेलो राजा बोल्यो के-" हे दुष्ट ! हे दुःपंडिते ! तुं तारा कर्मनुं फळ तथा तारा वचननुं फळ तत्काळ जो. " एम कहीने राजाए पोताना सेवकोने

आज्ञा आपी के–" नगरमां चोतरफ शोध करी कोइ महादरिद्री, कोढीयो, भीखारी अने रांक पुरुष होय तेने बोलावी लावो." पछी राजाना हुकमथी चारे तरफ शोध करवाने भमता राजसेवकोए नगरना उपवनमां रहेलो पेलो कोढीयो पुरुष (राजा) जोयो. अर्थात् पूर्वे वर्णन करेला अने देवतानी सहायथी कोढी तेमज दरिद्री थइने बेठेला पृथ्वीपाळ राजाने जोयो. पछी सेवकोए तेने कोइ पण प्रकारे समजावी महा प्रयत्नथी बंधिवाननी जेम राजा पासे लावी उभो राख्यो ते वखते राजाए ते नानी कन्याने कह्यु के– "जो तु कर्मनेज माने छे, तो तारा कर्मे आपेला आ कोढीया दरिद्री वरने वर जेथी तुं केवी कृतार्थ थाय छे, ते अमे जोइशु." आ सर्व जाणीने लोकोमां हाहाकार थइ रह्यो, अने तेमना हृदय कपवा लाग्या. ते वखते पेलो कोढीयो पण सज्जनपणाने लीधे ते कन्याने परणवा माटे निषेध करवा लाग्यो तो पण कर्मनेज प्रधान माननारी अत्यंत सत्वयुक्त एवी ते कन्याए पाणिग्रहणनी रीत प्रमाणे ते कोढीयानो हाथ ग्रहण कर्यो. ते वखते ते सभामां बेठेलो एक जोशी आ वरकन्यानो लग्न समय विचारी गुप्त रीते (मनमां) बोल्यो के–" आ समये जेवु शुभ लग्न वर्ते छे, तेवु लग्न बार वरसे पण मळवु दुर्लभ छे. माटे आ स्त्री पुरुषने सर्वथा कोइ मोटा देव जेवु अनुपम सुख प्राप्त थवु जोइए ! एम अत्यारना लग्न बळथी जणाय छे " ते वखते राजाना सख्त हुकमथी कोइथी काइ पण बोली शकातु नहोतु एटले सौ मौन रह्या विवाह थया पछी तुरत राजाए ते कोढीया वरने आज्ञा

करी के-" आ कन्याने लइने तु अहींथी जा, अने आनी पासे दासीनी जेम काम करावजे " पछी जाणे तेणीए मोटी चोरी करी होय तेम तेणीने राजाए अति कोपथी कह्यु के-"आ वरनी साथे जीवित पर्यंत निर्वाह करजे, अने उत्तम सुख पामजे " ते सांभळीने साहसिक एवी ते कन्या पण " बहु सारु " एम नम्रतार्थी कहीने देवनी जेम ते वरनो हाथ झालीने पिताना घरमार्थी तेनी लक्ष्मीनी जेम नीकळी गइ राजाए निषेध करवाथी कोइ दासी पण तेणीनी साथे जइ शकी नहीं, अने राजाना कोपना भयथी अनिष्टनी जेम तेणीने कोइ बोलावी पण शक्यु नहीं ते वखते केटलाक लोको राजाने दोष देवा लाग्या, केटलाएक ते कुंवरीने दोष देवा लाग्या, केटलाएक राजाना कोपनो दोष कहेवा लाग्या, केटलाएक प्रधानादिकनो दोष प्रगट करवा लाग्या, केटलाएक ते कन्याना गुरुनो दोष काढवा लाग्या, केटलाएक तेणीना मुग्धपणानो दोष काढवा लाग्या, केटलाएक तेणीना खराब ग्रहनो दोष कहेवा लाग्या अने केटलाएक धर्मीष्ट लोको तेणीना कर्मनोज दोष कहेवा लाग्या

आ प्रमाणे नगरजनोनां नवा नवा वचनो सांभळती ते कन्या ते पतिनी साथे नगरनी बहार तेज उद्यानमा अइने जाणे जड्राज स्याद्वाळी (आनन्दवाळी) होय तेम विषाद (खेद) पाम्या विना तेनी साथेज रही अने तेवा कोढीया वरनी पण जाणे कोइ श्रेष्ठ देवता होय तेम परम प्रीतिरसे करीने सेवा करवा लागी 'सतीओनु सत्व महा आश्चर्यकारक होय छ ' पछी ते अयोग्य अने असमान

चनाव जोवाने जाणे अशक्त होय एम सूर्य बीजा द्वीपमां जतो रह्यो-(अस्त थयो.) अने तेनी स्त्री सध्या पण सतीनी जेम ते सूर्यनी पाछळ गइ. पछी ज्यारे मिथ्यात्वना समूहनी जेम अंधकारनो समूह चोतरफ विस्तार पाम्यो त्यारे ते कन्याए पतिने माटे सुंदर सथारो पाथरी आप्यो तेमा सुखे सुतेला ते पतिए तेणीनी परीक्षा करवा माटे तेणीने कह्यु के-" हे भद्रे! हा! हा! तुं आ मोटा दुःख समुद्रमा केम पडी? प्रथम तो तें भोळीए आ अयुक्त कार्य कर्यु, त्यार पछी बीजु अयुक्त कार्य में कर्यु अने राजाए तो बहुज अयुक्त कर्यु केमके पिता थईने आवु अयुक्त केम करी शकाय? कह्यु छे के-' कदाचित् अल्प प्रेमने लीधे छोरु तो कछोरु थाय, पण अत्यत प्रेमवाळा मातापिता (मावतर) कुमातापिता (कुमावतर) केम थाय?' पण हे सुदरी! हजु कांइ जनु रह्यु नथी अने काइ वगडी गयु नथी. हजु पण तु स्वेच्छाथी ज्या जवु होय त्या जा अने बीजा कोइ श्रेष्ठ वरने वर, तेथी तुं कृतार्थ थइश अत्यारे कोई जोतु पण नथी अने कोइ कांइ पूछनु, पण नथी, माटे तु इच्छा प्रमाणे जा. केमके लक्ष्मीने तथा हरणना सरखा नेत्रवाळी सुदर स्त्रीओने सर्व स्थाने पोतानी मेळेज मान मळे छे अत्यत निंदवालायक एवा हु मारो पोतानो पण निर्वाह करवाने समर्थ नथी, तो तारो निर्वाह माराथी शी रीते थशे! तेथी तारे अपवित्र वस्तुना जेम मारो दूरथीज त्याग करवो योग्य छे." आ प्रमाणना पतिना वचनो सांभळीने माथु हलावती अने बे हाथ पोताना कानने ढांकती ते कन्या बोली -के-"हा!

नाथ ! दाहना हेतुरूप आवां अयोग्य वचन आप केम बोलो छो ? "ज्यारे अनंता पापनी राशि उदयमां आवे छे, त्यारे जीवने स्त्रीपणुं प्राप्त थाय छे, पण हे गौतम ! तमे सारी रीते जाणो." आ प्रमाणेना श्री महावीरस्वामीना वचनथी जणाय छे के स्त्रीनो जन्म अति अधम छे तेमां पण जो कदाच शीलभ्रष्ट थयुं होय तो ते अत्यंत उच्छिष्ट अने अनिष्ट जाणवुं तेथी आ जन्ममां तो मारे तमारा चरणज शरण रूप छे केमके स्त्रीओने पोताना कर्मे आपेलो पति देवतुल्य छे." आ प्रमाणे ते कन्याना दृढ निश्चयथी ते राजा चित्तमां चमत्कार अने हर्ष पामीने बोलयो के—"हे भद्रे ! आ प्रमाणे तारा जन्मनो निर्वाह शी रीते थशे ? माटे हवे हुं पण जो कोइपण प्रकारे दिव्य शरीरवाळो अने नवा यौवनवाळो थाउं, तोज योग्य कहेवाय केमके असमान योगने विषे रस क्यांथी आवे ? " ए प्रमाणे कहीने देवशक्तिथी तरत पोतानुं दिव्य रूप करीने देवनी जेम शोभता ते राजाए पोतानी प्रियाने आश्चर्य तथा हर्षयुक्त करी. ते जोइने "हे स्वामी ! आ शुं ?" एम तेणी प्रश्न करे छे, तेटलामां तो तेज ठेकाणे तत्काल नावेलुं देवविमानना जेवुं मणिमय भवन जोयुं अने ते भवनमां एक दिव्य पल्यंकपर बेठेला पोताना पतिने जोया. ते वखते ते राजा छत्र चामर तथा नाटक करवामां तत्पर एवा देव तथा देवीओना समूहथी परिवरेला इंद्रना जेवो शोभतो हतो ते सर्व जोइने—"शुं आ ते स्वप्न छे ? के इन्द्रजाळ छे ? के मायाजाळ छे ? के मोहजाळ छे ? आ ते शुं छे ? " ए प्रमाणे विस्मय पामेली ते सुंदर मुखवाळी कन्याने राजाए

कह्यु के-" हे [1]रतिना जेवी सुंदर प्रिया ! तुं तारा मनमां नाना प्रकारना संकल्प विकल्प करीश नहीं. मारापर देवता प्रसन्न थयेल छे, हु राजा छु, अने तारा शुभ कर्मवडे अहीं आव्यो छु. " त्यार पछी राजा पोतानु सर्व चरित्र तेणीने कहीने बोल्यो के-" हे सुभगे (सारा भाग्यशाळी) ! तें जे कर्मने प्रमाणरूप कह्यु, तेज कर्म तारापर तुष्टमान थयु छे तारो पिता चंद्र राजा महा अज्ञानी छे अने मिथ्या-अभिमानी छे, तेनु फळ पण तुं प्रातःकाळे जोइश, ते तारी समृद्धि जोवाने अहीं आवशे " ते सांभळीने हर्षथी उल्लास पामेली ते कन्याए स्वामीना महिमाने माटे आखी रात्री दिव्य नृत्य कर्यु, के जे नृत्यथी इंद्रनु हृदय पण चमत्कार पामे

अहीं चंद्र राजाए " कोढीयाने पोतानी कन्या आपीने में मारा क्रोधनुं फळ देखाडयु, हवे संतोषनु फळ पण शीघ्र देखाडु " ए प्रमाणे विचारीने गर्व पामेला राजाए देव समान रुपवाळा एक युवान राजकुमारने उत्सवसहित पहेली (मोटी) कन्या आपी. तेज दिवसना रात्रीना त्रीजा प्रहरमां उत्कृष्ट लग्न लइने सर्व समृद्धिथी आखा शहेरमा विवाह महोत्सव आरभ्यो. जगतना लोकोने हर्ष आपनार एवा ते उत्सववडे लग्न (मुहूर्त) समये घणी प्रशंसा अने उत्साहने पात्र एवो ते बन्नेनो विवाह थयो त्यार पछी अशुभ कर्मना वशथी त्यां उग्र सर्प नीकळ्यो, ते त्रण भुवननो संहार करवामां अत्यत भयकर एवो जाणे बीजो यमराज होय तेवो देखातो

१ कामदेवनी स्त्री रति

हतो तेने जोइने कल्पांतकाळना पवनथी समुद्रना कल्लोलनी जेम सर्वे जनो भयभीत थइने क्षोभ पाम्या. ते वखते भयथी सम्भ्रांत थयेलो चर पण जलदीथी उठीने फाळ भरतो नासवा लाग्यो तेवामां तेनो पग सर्पना शरीरपरज आव्यो, तेथी रोष पामेलो सर्प तेने डस्यो. अने तरतज ते चर मरण पाम्यो. कह्युं छे के-" जूदी रीते कार्य करवा धार्यु होय, पण तेनुं परिणाम तो तेथी जूदुज आवे छे केमके कर्मने वश पडेला जीवोने एक क्षणवारमां घणां विघ्नो आवे छे." आवा समयमां आवुं अयोग्य (अघटित) थया छता पण केटलाक मनुष्योने जरा पण वैराग्य थतो नथी तेवा मनुष्योने धिक्कार छे. त्यारपछी दिव्य नाटकना ध्वनिने सांभळनार राजा विगेरे सर्व मनुष्यो अत्यंत शोकसमूहथी मुनिनी जेम मौन (स्तमित) थइ गया. तथा चित्तमां चमत्कार पामीने विचार करवा लाग्या के-" आ अकस्मात् शुं थयुं ? आ असुरेंद्रना जेवी अथवा सुरेंद्रना जेवी ऋद्धि हती, तेमां आम अकस्मात् शुं बनी गयुं ? " आ प्रमाणे सर्वे लोको चित्तमां शोकसाथे चमत्कार पाम्या. प्रातःकाळे राजाए पोताना सेवकोने मोकलीने नानी कन्याना समाचार मगाव्या. ते सेवकोए आवीने सर्व वृत्तांत यथार्थ कही बताव्यो ते सांभळीने राजा अत्यंत विस्मय, लज्जा अने आतुरताथी पराधीन थइ गया पछी अनिष्ट वस्तुना भारनी जेम अभिमानना समूहनो त्याग करीने ते राजा पोतानी कन्यानुं सन्मान करवा तैयार थयो अने कर्मनु प्रधानपणुं मानवा लाग्यो पछी चंद्रराजाए पोताना जमाइ पृथ्वीपाळ राजाने

सत्कार साथे शहेरमा लावी विवाहनी रीतप्रमाणे बहुमानपुर्वक गृह-द्रव्य विगेरे घणी वस्तुओनी पहेरामणी करी.

बीजे दिवसे ते नगरना उद्यानमां विशिष्ट ज्ञानी गुरु महाराज समवसर्या. तेने वांदवा माटे चंद्र राजा सर्व परिवारसहित गयो. गुरुने वांदी यथास्थाने बेसी देशना सांभळी देशनाने अंते अवसर जोइने राजाए पोतानी बन्ने कन्यानो पूर्वभव पुछयो, त्यारे ज्ञानी गुरु महाराज बोल्या के–" हे राजा! तारी आ बे कन्या पूर्वे "धन" अने "धनक" नामना बे श्रेष्ठीनी "धनश्री" अने "धनप्रभा" नामनी चंद्रनी अने सूर्यनी स्त्री ज्योत्स्ना अने प्रभानी जेवी स्वजनोमां अ-त्यंत मानवालायक प्रियाओ हती. ते बन्ने जैनधर्ममा आसक्त हती, अने प्राये करीने पापना स्थानकोथी निवृत्ति पामेली हती तेमज ज्ञाननु आराधन करवामा निपुण अने उपधानादिकनु बहुमान करनारी हती परंतु तेमा पहेली जे धनश्री हती ते कृपण हती, तेथी धनादिकनो व्यय करवामां तेणीनु हृदय दूभातुं हतु. ते एटली बधी कृपण हती के मुनिओने पण भावथी दान देती नहीं परंतु पोते कृपण होवाथी पोताने घेर जे कोइ मुनिराज आवता, तेमने घरना बीजा माणसो बहु आपी दे छे, माटे हु मारे हाथेज आपु " एम विचारी उठीने घणी भक्ति तथा आदर देखाडती, घरमा सारी वस्तु घणी छतां पण थोडी देखाडती, अने "जेम मुनिओने जरा पण दोष न लागे तेम थोडुं शुद्ध एवुं सुपात्र दान आपवाथी ते अनंत फळनु कारण थाय ... बोलती उठी पासे रहेला बीजा

सोने वारीने पोताने हाथेज मनना भावविना मुनिने जेवी तेवी तुच्छ वस्तु अत्यत थोडी वहोरावती कोइ वखते मुनि काइ वस्तु लेवा आवे तो परमा ते वस्तु होय छता "नथी" एम कहेती. कदाच ते वस्तु मुनिनी दृष्टिए पडे तो कहेती के—"आ वस्तु तो पारकी छे." अथवा कोइ वार ते वस्तु शुद्ध छतां "अशुद्ध छे" एम पण कहेती. आवी अज्ञान बुद्धि (दान न देवानी बुद्धि) ने धिक्कार छे ! आ प्रमाणे ते श्राविकाए बीजां धर्म कार्य (प्रतिक्रमण, पौषध विगेरे विना खर्चना कार्य) मा तत्पर छतां पण कृपणपणाना दोषथी महा उग्र भोगांतराय कर्म बांध्यु 'अहो ! निर्मळ एवा जैन धर्मने पामीने पण केटलाएक मूढ जीवो अयोग्य आचरणवडे आत्माने मलिन करे छे, ते अत्यंत खेदकारक छे.' हवे बीजी श्राविका जे धनप्रभा नामनी हती ते उदार चित्तवाळी हती तेथी तेणीए शुद्ध भावथी सुपात्र दान आपवा वडे शुभ भोगना फळवाळु कर्म बांध्यु कारण के जीवना परिणाम विचित्र प्रकारना होय छे अनुक्रमे आयुष्य पुर्ण थये ते बन्ने श्राविकाओ मरण पामीने स्वर्गमा देवपणे उत्पन्न थइ परतु तेमानी पहेली धनश्री किल्बिषीया देवना विमानमा उत्पन्न थइ त्यांथी आयुष्य पुर्ण थये चवीने ते बने देवो हे राजा ! तारा प्रेमना पात्ररूप आ बे कन्याओ रूपे उत्पन्न थयेल छे ते बन्नेने पोतपोताना कर्मना वशथी भोगनी प्राप्ति ने भोगनो नाश थयेल छे" आ प्रमाणे बने कन्याओनो पूर्वभव सांभळीने राजाए गुरुने पूछ्यु के—"हे स्वामी ! मारी एक शकानु समाधान करो के—कर्म अने उद्यम ए बेमां कयु प्रधान

छे ?" त्यारे ज्ञानी गुरु बोल्या के–" हे राजा ! ते बन्नेनुं प्राधान्य छे केमके आ जगत्मां कोइ ठेकाणे जीव बळवान् थाय छे, अने कोइ ठेकाणे कर्म पण बळवान् थाय छे. कह्यु छे के– जीवने तथा कर्मने अनादि काळथी वैर बंधायलु छे तेमां जीवो खरेखर कर्मनेज वश छे, परतु कोइक वखत कर्मो पण जीवने वश थाय छे केमके

कोइक ठेकाणे धारण करनार (आधार बळवान् होय छे, अने कोइ ठेकाणे धारण करवालायक (आधेय) वस्तु बळवान् होय छे. जो के कर्म ससारमां भमता जीवोने अत्यत दु:ख आपे छे, तो पण धर्मनो उद्योग ते सर्व कर्मने पण हणी नाखे छे. अन्यथा अनतानंत भवोवडे संचय करेलां अनतां कर्मोने हणीने अनंता जीवो शाश्वता मोक्षने केम पामे ? कुकर्मने करनार " दृढप्रहारी " अने " चुल्णी " उद्यमथीज मोक्षे गया छे, तथा " चिलातीपुत्र " अने " रोहणयक " विगेरे पण उद्यमथीज स्वर्गे गया छे. तेथी करीने धर्मार्थी पुरुषो अनिष्ट एवा उग्र कर्मना क्षयने माटे निरतर उद्यम करीज करे छे आ रीते कोइ वखत उद्यम पण बळवान् थइ शके छे. कह्यु छे के–"प्राणीओने सर्व कार्यमां हमेशां उद्यमनेज परमबंधु कहेलो छे, कारण के उद्यमविना मनुष्य मनोवांछितने मेळवी शकतो नथी." जो कदाच विविध प्रकारना उद्यमो कर्यां छतां पण कार्य सिद्ध न थाय, तो त्यां अवश्य तीव्र कर्मज भोगववालायक अने समर्थ छे एम जाणवुं. वळी महावीरस्वामीनो नीच कुळमां अवतार. मल्लीनाथ स्वामीनु स्त्रीपणे उत्पन्न थवुं. परीक्षित राजानु मरण तथा नन्दिषेण अने

आर्द्रकुमारनी भ्रष्टता ए सर्वे कर्मना वशथीज थयां छे कह्यु छे के—"ब्रह्मदत्तनो दृष्टिनो (नेत्रनो) नाश थयो, भरतचक्रीनो पराजय थयो, कृष्णना समग्र कुटुम्बनो नाश थयो, ऋषभ तीर्थंकरना नीचे गोत्रमा अवतार थयो, मल्लीनाथने स्त्रीपणु प्राप्त थयु नारदनु पण निर्वाण (मोक्ष) थयु, अने चिलातीपुत्रने प्रशमना परिणाम थया आ तमाम बाबतामा कर्म अने उद्यम ए बन्ने स्पर्धाए करीने तुल्य बळवाळा छता आ जगत्मा प्रगट रीते जयवता वर्ते छे "

आ प्रमाणे गुरुना मुखथी कर्म अने उद्यमनी समानता सांभळीने धर्ममा उद्यम करवानी बुद्धि जेने उत्पन्न थइ छे एवो चद्र राजा दुष्ट कर्मोने हणवा माटे तैयार थयो, पछी ते राजाए विधिपूर्वक पोताना जमाई पृथ्वीपालने पोतानु राज्य सोंपीने मोटी पुत्री तथा बन्ने राणीओसहित दीक्षा ग्रहण करी अने तेनु आराधन करीने अंते मोक्षे गयो

त्यार पछी पृथ्वीपाळ राजा चद्रराजाना राज्यने स्वस्थ करीने इंद्रनी जेम मोटी ऋद्धिसहित पातानी स्त्रीने लइने पोताना नगरमां गयो आ प्रमाणे पेला श्लोकना चोथा, पादनी परीक्षा करवाथी पृथ्वीपाल राजा शास्त्रोने विषे अत्यत बहुमानवाळो थयो अज्ञाननो नाश करवामा अस्त्रसमान शास्त्रोनु आदरसहित श्रवण करता ते राजानी बुद्धि धर्मनु आराधन करवामा तत्पर थइ केमके ज्ञानथी शुं न सभवे ? सर्व सभवे सर्व दर्शनीओना धर्मोने जोइ जोइने सारा रीते परीक्षा करवाथी जेना समान बीजो कोइ धर्म नथी एवा आर्हत

धर्मने तेणे अंगीकार कर्यो अनुक्रमे जेम जेम तेनी धर्ममां परिणति वधवा लागी तेम तेम श्रुतज्ञान उपर तेनु बहुमान वृद्धि पामवा लाग्यु. शास्त्रनु श्रवण करवामां अने तेनु पठन पाठन करवामां ते राजाए एवु तल्लीनपणु कर्यु के जेथी मगट एवा सुंदर संगीतना रसमां पण ते रस (आनंद) रहित थयो. बहुश्रुत एवा साधुओने बहुमान आपीने, तथा तेमनो आश्रय लइने, तेमज शास्त्रो लखाववां तथा ज्ञानना उजमणा करवा इत्यादि कार्यो करीने तेणे श्रुतज्ञाननु आराधन कर्यु

आ प्रमाणे पृथ्वीपाल राजाए श्रुतनु आराधन करवाथी दुःसाध्य एवा पण ज्ञानावरणीय कर्मना क्षयने साध्यो. एकदा ते राजा एकाग्र चित्ते श्रुतना अर्थनी अत्यंत भावना करतां मोक्षरूप महेलनी नीसरणीसमान क्षपकश्रेणिपर आरूढ थयो. तेज वखते ते राजा लोकालोकने प्रकाश करनारु केवळज्ञान पाम्यो, अने देवोए तेने मुनिनो वेष आप्यो. पछी ते केवळी राजर्षिए पोतानाज अनुभवेला दृष्टांतने स्पष्ट रीते देशनामां कहीने घणा जीवोने श्रुतज्ञानना आराधनमां सावधान कर्या. पछी प्रतिबोध पमाडवालायक भव्य जीवोने पोताना इतिहासवडे प्रतिबोध पमाडीने चिरकाळ सुधी पृथ्वीपर विहार करी ते राजर्षि मोक्षपदने पाम्या. हे भव्य जीवो ! आ रीते श्रुतज्ञाननु मात्र बहुमान करवाथी पण आ भवे केवळज्ञान तथा मोक्षरूप फळ मळे छे, एम जाणीने श्रुतज्ञाननुं आराधन करवामां अत्यंत प्रयत्नवाळा थाओ.

॥ इति श्रुताराधने पृथ्वीपाल नृप कथा ॥

श्रुतज्ञाननुं आराधन सम्यक् (रुडे) प्रकारे ज्ञानाचारना आचरणनी निपुणता होय तोज सभवे छे, अने ते ज्ञानाचार आठ प्रकारनो छे ते विषे निशीथ सूत्रना भाष्यनी पीठीका विगेरेमां कह्युं छे के—"काळ, विनय, बहुमान, उपधान, अनिह्नव (नहीं गोपववुं ते), व्यजन[१] (अक्षर), अर्थ,[२] ते बन्ने[३] (अक्षर अने अर्थ), ए आठने विषे ज्ञानाचार आठ प्रकारनो छे.

पहेला काळाचारनुं स्वरूप

काळे एटले सूत्रनी पोरसीने विषे सूत्र भणवुं अथवा गणवुं, अने अर्थनी पोरसीमां अर्थ भणवो अथवा गणवो, अथवा उत्कालिक सूत्रो विगेरे भणवां गणवां तेमां कालिक श्रुत एटले उत्तराध्ययन, आचारांग विगेरे सूत्रो दिवस अने रात्रीनी पहेली तथा चोथी पोरसीने विषेज भणवा गणवानां छे तथा उत्कालिक एटले दशवैकालिक, दृष्टिवाद विगेरे सूत्रो तो सर्व पोरसीमा भणवा गणवा लायक छे हवे कालिक तथा उत्कालिक ए बन्ने प्रकारनां सूत्रोनां अस्वाध्यायनो (असज्झायनो) काळ नानी बबे घडीनो छे. तेथी रात्री अने दिवसनी चार काळ वेळाओनो[१] (भणवा गणवामा) दररोज त्याग करवो

श्री आचार प्रदीप ग्रथनी अदर मुनिराजने सूत्रो भणवामाटे आगममा कहेलो काळ बतावीने पछी अकाळ अहकारादिकवडे भण-

---

१ आ चार काळ वेळाना संबंधमां आचार प्रदीपमा घणा धारे केटलुक विवरण करेलु छे.

चा गणवाथी आज्ञाभंग, ज्ञानाचारनी विराधना विगेरे दोषो लागवा-थी प्रायश्चित्त लेवानु कह्यं छे, तेमज अकाळे स्वाध्याय करवाथी प्रमत्तपणाने लीधे दुष्ट देवता पण तेने छळेछे, विगेरे कह्यु छे ते बाबत निशीथ भाष्यमां आ प्रमाणे कह्यु छे के–" पहेली अने छेल्ली संध्या समये, मध्याह्न समये अने अर्धरात्रि समये ए चार संध्याओ वखते जे मनुष्य स्वाध्याय करे छे, तेणे आज्ञादिकनी विराधना करी छे एम जाणवुं " वळी ते संध्याओमा स्वाध्याय करवाथी लोकमां पण निंदा थाय छे (केमके लौकिक शास्त्रोमा पण संध्यासमये स्वाध्याय करवानो निषेध कर्यो छे.) तथा संध्याने विषे गुह्यक–व्यंतरो विगेरे फरे छे. संध्या वखते स्वाध्याय नहि करवाथी आवश्यकनो उपयोग थइ शके छे (प्रतिक्रमण थइ शके छे.) तथा स्वाध्याय करवाथी थाकी गयेलाने एटलो वखत विश्रांति पण मळे छे. जोके श्रुतनो उपयोग (भणवु गणवु) तथा तप–उपधान अत्यंत श्रेष्ठ कहेलां छे, तोपण निषेध करेला काळे करवाथी ते कर्मबंधने माटे थाय छे.

लौकिक शास्त्रमां पण काळवेळाए संध्यावंदन, वैश्वदेव, तर्पण, होम विगेरे शांतिकर्म करवानुज कह्यु छे, पण स्वाध्याय करवानु कह्यु नथी, केमके स्वाध्याय परमतत्त्वरूप होवाथी दुष्ट समये तेनो निषेध करेलो छे. कह्यु छे के–" संध्याकाळे आहार, मैथुन, निद्रा अने स्वाध्याय ए चार कर्मने विशेषे करीने वर्जवा; केमके संध्याकाळे आहार करवाथी व्याधि उत्पन्न थाय छे, मैथुन करवाथी दुष्ट गर्भ उत्पन्न थाय छे, निद्रा करवाथी धननो नाश थाय छे अने स्वाध्याय

करवाथी मरण थाय छे." आथी करीने संध्या समये स्वाध्याय करवाथी लोकमां "अहो ! आ जैनो पोतानुं सर्वज्ञपुत्रपणुं प्रसिद्ध करे छे, परंतु संध्यासमये स्वाध्यायनो निषेध छे, एटलुं पण जाणता नथी " ए रीते निंदा थाय छे वळी संध्यासमये जो स्वाध्यायमां ज तत्पर रहे, तो साधुने प्रतिक्रमणादिक आवश्यक क्रियामां अने श्रावकोने देवपूजा, प्रतिक्रमण विगेरेमां उपयोग रहे नहीं अने जो ते वखते स्वाध्याय करवानो न होय, तो ते आवश्यक क्रियामां उपयोग रहे, तथा निरंतर स्वाध्याय करवाथी खेद पामेलाने विश्रांति पण मळे, तेथी करीने श्रुतपाठादिक कहेले कालेज करवा युक्त छे. कदाच कोइ विशेष कारणने लीधे काळनो अतिक्रम थाय, तो तेमां दोष नथी ते प्रमाणे निशीथ सूत्रादिकमां अनुज्ञा आपेली छे.

अहीं कोइने शंका थाय के-"जेम शुभ ध्यान मोक्षनुं कारण होवाथी सर्वकाळे करवानुं कह्युं छे, तेम श्रुतज्ञान पण मोक्षनुं कारण होवाथी सर्वकाळे स्वाध्याय केम न कराय ? केमके जे मोक्षनुं कारण छे, तेनो काळ के अकाळ काइ पण नथी " गुरु तेनो उत्तर आपे छे के-"हे भद्र ! तारी शंका साची छे परंतु जे शुभ ध्यान छे,ते सर्व क्रियामां रहेलुं छे, अने ते मानसिक छे, तेथी तेनावडे कोइपण धर्मक्रियाने बाध थतो नथी, पण उलटी सर्वे क्रियाओने पुष्टि मळे छे तेथी शुभ ध्याननुं सर्वकाळे करवापणुं घटे छे. अने श्रुतज्ञान तो भणवा-गणवा विगेरेवडे साध्य छे, माटे बे संध्याना आवश्यकादिकनी जेम नियमित समये ज उचित छे. कदाच सर्व काळे श्रुतज्ञाननुंज पठनादिक करवा-

र्यां आवे, तो पुण्य क्रियाओने परस्पर बाध थाय; अने तेम थवु युक्त नथी केमके सर्व पुण्य क्रियाओ परस्पर बाधारहितज करवानी कही छे. ते विषे श्रीओघनिर्युक्तिमा कह्यु छे के–"जिनशासनने विषे दुःखना क्षयनेमाटे प्रयोग करेलो (कहेलो) धर्मक्रियानो सर्व योग अन्योन्य बाधारहित असपत्न (कोइने बाधा थया विनाज) करवानो कह्यो छे." "मोक्षना कारणमा काळनो विभाग करवो अयोग्य छे" एवी शंका पण न करवी, केमके साधुओने आहार विहारादिक पण मोक्षनुंज कारण छे, छता आगममा तेनो काळ विभाग कहेलो छे के–"त्रीजी पोरसीमा भक्त पाननी गवेषणा करवी" कोई गुरु शिष्यने शिक्षा आपे छे के–"हे साधु! तु अकाळे गोचरी करे छे, काळने ओळखतो नथी अने आत्माने क्लेश पमाडे छे, तेथी देशनी पण निंदा करे छे." वळी निशीथचूर्णिमां आ प्रमाणे कह्यु छे–"ऋतुबद्धकाळे विहार करवो, पण वर्षाऋतुमां न करवो अथवा दिवसे विहार करवो, पण रात्रे न करवो अथवा दिवसे पण त्रीजी पोरसीए विहार न करवो, बाकीनी पोरसीमा करवो"

लौकिक शास्त्रमां पण कह्यु छे के–"पहेला पहोरमां भोजन करवु नहीं, अने बे पहोरने उल्लंघन करवा नहीं कारण के पहेला पहोरमा भोजन करवाथी रसनी उत्पत्ति थाय छे, अने बे पहोर उल्लंघन करवाथी बळनो क्षय थाय छे" "ग्रीष्म अने हेमन्त ऋतुना मळीने आठ मास सुधी भिक्षुए विहार करवो अने सर्व जीवोपरनी दयाने माटे वर्षाऋतुमा एकत्र निवास करवो."

वळी दानादिक पण योग्य अवसरे करवाथी विशेष फळवाळु थाय छे कह्यु छे के,-"विहार करवाथी थाक थयेलाने, व्याधिग्रस्तने, आगमना अभ्यासीने, लोच करेलाने तथा उत्तरपारणावाळाने आपेलुं दान अत्यंत फळदायक थाय छे योग्य समये आपेला दाननी किंमत करवाने कोइपण शक्तिमान नथी अने तेज दान अयोग्य वखते आपीए तो ते ग्राह्य पण थतु नथी" कोई स्त्रीने पुरुष कहे छे के-"हे सुंदरी ! एक अंजलि (चुलुक) प्रमाण पण जळ अवसरे आप्यु होय तो मूर्छा पामेलो माणस जीवे छे, परंतु मरी गया पछी सैंकडो घडा पाणी तेनापर नांखवाथी कांइ फळ थतु नथी"

वळी खेती, वेपार अने सेवा विगेरे पण अवसरेज कर्या होय तो ते बहु फळदायक थाय छे, अकाळे करवाथी तेनु फळ मळतु नथी. कह्यु छे के-"जेम समये करेलु खेतीकर्म बहु फळवाळु थाय छे तेज प्रमाणे सर्व क्रियाओ पोतपोताने काळेज करवी योग्य छे" वळी मंत्र, विद्या विगेरेनु साधन पण कहेले समयेज करवाथी सिद्ध थाय छे, अन्यथा ते साधन अनर्थनो हेतु थाय छे. तेथी सर्वेने अवसरेज स्वाध्याय करवो, पण अकाळे न करवो

आ स्थळे छाश वेचनारीनु दृष्टांत आ प्रमाणे छे-'मथुरा नगरीमां कोइ एक साधु प्रदोष समयी काळने विषे स्वाध्यायनी पोरसी पूरी थया छतां पण अनुपयोगने लीधे कालिक श्रुत भणता हता. ते जोइने 'आ साधुने कोइ दुष्ट देवता न छळो' एम विचारीने शासन देवता तेने बोध करवा माटे छाशनो घडो माथे लइने आभीरीन

रूपे तेनी पासे छाश वेचवा नीकळी. अने ' छाश ल्यो छाश ' एम मोटे स्वरे बोलती वारवार गमनागमन करवा लागी. तेथी ते साधुने स्वाध्यायमां विघ्न थवाथी तेणे कह्यु के-" शु आ छाश वेचवानो समय छे ? " त्यारे ते आभीरी पण बोली के-"त्यारे शु तमारे पण आ स्वाध्याय करवानो समय छे ? " ते सामळीने साधुने उपयोग आव्यो, तेथी तेणे मिथ्यादुष्कृत आप्यु. "

॥ इति प्रथमः कालाचारः ॥

बीजा विनयाचार विषे

विनय एटले-गुरु, ज्ञानवान्, ज्ञानना अभ्यासी, ज्ञान, ज्ञाननां उपकरण (पुस्तक, पाटु, कागळ, पाटी, कवळी, ठवणी, सापडो, ओळीयु, टीपणु तथा दफतर) ए विगेरेनी सर्व प्रकारनी आशातनानो त्याग करवो तथा तेमनी भक्ति विगरे यथायोग्य करवी ते आशातनाना भेदो श्राद्धविधिनी वृत्तिथी जाणवा अने गुरुनो तथा ज्ञानवान्नो विनय-प्रगटपणे उभु थवु, आसन आपवु, शय्या करी आपवी, हाथमांथी दांडो लइ लेवो, पग धोवा, पगचपी करवी, वदना करवी, आज्ञाप्रमाणे वर्तवु तथा शुश्रुषा (सेवा) करवी-विगेरे जाणवो ते विषे आगममां कह्यु छे के-" उभा थवु, हाथ जोडवा, आसन आपवु, भक्ति करवी, ए रीते भाव शुश्रूषा विनय कहेलोछे " तथा-" गुरुथी नीची पोतानी शय्या करवी, तथा गमन, स्थिति अने आसन पण गुरुथी नीचाज राखवा, शरीरने नमावी गुरुपादनी वं-

दना करवी, तथा नीचा वळीने हाथ जोडवा " भाव शुश्रूपा एटले गुरुना आदेशने सांभळवानी इच्छा अथवा गुरुनी सेवा. ए प्रमाणे श्रीउत्तराध्ययननी वृत्तिमां तेनी व्याख्या करी छे अने दशवैकालिक वृत्तिमां तो शुश्रूषाविनय दश प्रकारनो प्राकृत गाथावडे वर्णव्यो छे—" सत्कार करवो १, अभ्युत्थान एटले उभा थवु २, सन्मान—मान आपवु ३, आसनाभिग्रह—आसन देवानु कहेवु ने देवु ४, आसनानुप्रदान—अन्यत्र एइ जइने आसन पाथरी आपवु ५, कृतिकर्म—वंदना करवी ६, अंजलिग्रह—बे हाथ जोडवा ७, इंगित अनुसरण—तेमना मननो अभिप्राय जाणीने ते प्रमाणे वर्तवु ८, गुरु बेठा होय त्यारे तेमनी सेवा करवी ९, तथा चालता होय त्यारे तेमनी पाछळ चालवु १० आ दश प्रकारनो शुश्रूषाविनय कह्यो छे."अहीं सत्कार एटले स्तुति वंदनादिक करवु ते,सन्मान एटले वस्त्र पात्रादिकवडे पूजन करवु (आपवु) ते, आसनाभिग्रह एटले गुरु उभा होय त्यारे आदर—पूर्वक आसन लावीने " आ आसनपर पधारो " एम बोलवु ते, आसनानुप्रदान एटले ते स्थानेथी गुरु बीजे स्थाने जाय त्यारे तेमनु आसन त्यां लइ जवु ते आ प्रकारनो शुश्रूषाविनय उपचारविनयने विषे पण अंतर्गत थाय छे. श्रीदशवैकालिक वृत्तिमां प्राकृत गाथाओवडे उपचार विनयना सात प्रकार आ प्रमाणे कह्या छे.—" समीपे रहेवानी प्रार्थना एटले आदेशादिकनी इच्छाथी निरंतर गुरुनी समीपे बेसवु १, छंदोनुवर्तन एटले गुरुनी आज्ञाप्रमाणे वर्तवु २, कृतनी प्रतिक्रिया एटले " भक्तपानादिवडे उपचार करवाथी गुरु प्रसन्न

यशे अने सूत्रादिक देवाए करीने मत्युपकार करशे, ए पण निर्जरा छे" एम धारीने गुरुने भक्तपानादिक आपवामां प्रयत्न करवो ३, कारितानिमित्तकरण एटले श्रुतने ग्रहण करवा विगेरे कार्य करवुं, कादपण निमित्त करीने विशेष प्रकारे विनयमां प्रवर्तवु तथा सूत्रना अर्थनु अनुष्ठान करवु ४, दुःखार्त गवेषण एटले व्याधि विगेरेथी पीडाता ग्लान साधुओने औषधादिक लावी आपीने उपकार करवो ५, देशकालज्ञान एटले अवसरनुं जाणवापणुं ६, तथा सर्व अर्थमां अनुमति एटले सर्व कार्यमां अनुकूलपणे वर्तवु ७ ज्ञानना अभ्यासीओनो विनय करवो, तेमा सारां शोधेला पुस्तको आपवा. सूत्र अने अर्थनी परिपाटी आपवी, तथा आहार अने उपाश्रय विगेरेनो आश्रय आपवो; वळी श्रावकोए ज्ञाननो विनय करवो, तेमां उपधान विगेरे विधिवडे सूत्र अने अर्थनु ग्रहण तथा अभ्यास करवो, विधिप्रमाणे बीजाने सूत्र तथा अर्थ आपवां, तेमां कहेला अर्थनी सारी रीते भावना भाववी, तेमा यथाप्रमाणे सारी रीते अनुष्ठान करवुं. पोते पुस्तक लखवा अथवा बीजा पासे लखाववा, कपूर विगेरे सुगंधि वस्तुवडे ज्ञाननी पूजा करवी, ज्ञाननी आराधना माटे पंचमी विगेरे तपस्या करवी तथा तेनु उद्यापन विधिप्रमाणे करवु विगेरे. ते विषे कह्युं छे के-"ज्ञानवाळो मनुष्य ज्ञान शीखे छे (अभ्यास करे छे), ज्ञानने गणे छे (संभारे छे), ज्ञानवडे समजीने योग्य कार्यो करे छे अने नवां कर्म बांधतो नथी तेथी करीने ते ज्ञानना विनयवाळो थाय छे" तथा ज्ञानना उपकरणोनो विनय आ प्रमाणे कर

वो—नवां पुस्तको लखवा, लखाववा तथा शुद्ध कराववां; पुठा, पोथी बंधन अने बांधवानी दोरी विगेरे साहित्यो उत्तम उत्तम (सारां सारां) एकठां करवा, तथा नाश पामता पुस्तकोने लखावी लेवां, तेने शोधा ववां, तथा कपूर, हीरागळ (रेसमी) वस्त्र विगेरेवडे तेनु पूजन करवु विगेरे. शास्त्रमां कह्यु छे के—" त्रण जगत्ना सूर्यरुप सर्व जिनेश्वरो अस्त पाम्या छे, तेथी आधुनिक समयमा पुस्तकरूप दीवा-वडे पदार्थोने विषे सारो प्रकाश पाडी शकाय छे " विनय ए लोकमा तथा लोकोत्तरमा सर्व ठेकाणे सर्व अर्थनी सिद्धिमां अवश्य कारण छे. ते विषे कह्यु छे के—" विनय लक्ष्मीने आपे छे, विनयवान् पुरुष यश अने कीर्तिने पामे छे. विनयरहित माणस कदापि पोताना कार्यनी सिद्धिने पामतो नथी " लोकमा पण सेवको, शिष्यो, पुत्रो, वहुओ विगेरे सर्वे विनयथीज पोताना स्वामीनी पदवी पामता जोवामां आवे छे अने विनय रहित एवा ते सेवको विगेरे विपरीत दशाने पामता पण जोवामां आवे छे वळी गायो, भेंशो, बळदो, घोडाओ विगेरे पशुओ पण दुर्विनयने लीधे बंधन ताडनादिक दुःखने पामता देखाय छे, अने तेओ जो विनयवान् होय तो क्लेश पाम्या विना सुखे सुखे खावा पीवानु तथा मान सत्कार पामता देखाय छे वळी विद्या, विवेक, औदार्य, गांभीर्य, चातुर्य, धैर्य, सख्याति, प्रतिष्ठा विगेरे गुणोनुं मूळ कारण विनयज छे केमके विनय होवाथीज ते ते गुणोनो संभव छे, अन्यथा नथी कह्यु छे के—" सर्व सुखनु मूळ कारण क्षमा छे, सर्व दुःखोनु मूळ कारण क्रोध छे, सर्व गुणोनु मूळ कारण विनय

छे अने सर्व अनर्थोनु मूळ कारण लोभ छे " वळी धर्मनुं पण मूळ विनयज छे; कह्यु छे के–" धर्मनु मूळ विनय छे, विनयवतज सयत (मुनि) थइ शके छे; विनयरहित माणसने धर्म अने तप वने क्याथी होय ? नज होय. " ज्ञाता आगमां कह्यु छे के, एक हजार परिव्राजकना परिवारमां मुख्य एवा व्यासना पुत्र शुकदेव नामना भट्टारके पोताने शौचमूळ धर्म सौगंधिका नगरीना निवासी सुदर्शन शेठने ग्रहण कराव्यो हतो. तेथी ते शेठने प्रतिबोध करवामाटे हजार शिष्योना परिवारवाळा अने चौद पूर्वने धारण करनारा थावच्चापुत्र नामना श्री नेमिनाथना शिष्य आचार्य महाराजे ते नगरीमा आवीने ते शेठ प्रत्ये आ प्रमाणे कह्यु के–" हे सुदर्शन ! विनयमूळ धर्म कहेलो छे. अने ते विनय सर्व धातुओना मध्ये सुवर्णनी जेम प्राये शुभ प्रकृतिवाळानेज प्राप्त थाय छे कह्यु छे के–'कमळोमां सुगध कोणे उत्पन्न करी छे ? शेरडीमां मधुरता (मीठाश) कोणे उत्पन्न करी छे ? उत्तम जातीना हस्तीओने लीलापूर्वक गमन कोणे शीखव्यु छे ? तथा उच्च कुळमा जन्मेलाने विनय कोण शीखवे छे ? वळी हरणीओनां नेत्रोमा अंजन कोण करे छे ? मोरनां पींछा कोण चीत्रे छे ? कमळोने विषे पत्रनी रचना कोण करे छे ? तेमज उच्च कुळमां उत्पन्न थयेला पुरुषोने विनय कोण शिखवे छे ? अर्थात् ए सर्व स्वभावथीज सिद्ध छे ' वळी श्रुतज्ञानना अर्थी पुरुषे विशेषे करीने गुर्वादिकनो विनय करवामां प्रवर्तवुं. कह्युं छे के–" अग्निने स्पर्श करेला गुरुरूपी कुवामाथी ज्ञानरूपी अमृत जळ लेवा माटे मात्र एक विनयज घडना आवर्तनी धुरताने धारण करे छे "–

यथा-" विनयथी ज्ञान, ज्ञानथी दर्शन (समकित), दर्शनथी चारित्र अने चारित्रथी मोक्ष प्राप्त थाय छे, मोक्षमां निराबाध सुख छे " वळी विनयथी ग्रहण करेलु श्रुत तत्काळ फळदायक थायछे, ते शिवायनु फळदायक थतु नथी ते उपर दृष्टांत नीचे प्रमाणेः-

विनय उपर दृष्टांत

राजगृह नगरमा श्रेणिक राजाए एकदा श्री महावीर स्वामीना मुखथी चेल्णा राणीना सतीपणानो निर्णय सांभळीने तेणीना गुणथी रजीत थइ तेने कह्यु के-" हे प्रिया! बीजी राणीओना करतां केवो अधिक मनोहर प्रासाद हु तारे माटे करावु ?" त्यारे चेल्णाए कह्यु के-" मारे माटे एकस्तभवाळो प्रासाद करावी आपो " राजाए तेवो प्रासाद करावत्रा माटे अभयकुमारने आज्ञा करी अभयकुमारे कारीगरोने आज्ञा करी कारीगरो तेवा प्रासादने योग्य मोटा काष्टने माटे अटवीमा परिभ्रमण करवा लाग्या तेमणे सारा लक्षणवाळु, घणी छायावाळु, आकाश सुधी वधु, पुष्प फळथी फलेलु, मोटी मोटी शाखावाळु अने मोटा स्कंध (थड) वाळु एक वृक्ष दीठु. ते जोइने हर्ष पामेला कारीगरो विचार करवा लाग्या के,-"खरेखर आ वृक्ष देवताधिष्ठित होवु जोइए कह्यु छे के-'जेवु तेवु स्थान पण देवरहित होतु नथी, तो पछी शुभ लक्षणवाळां मोटां वृक्ष तो देवताना वासरहित शेनाज होय ?' परन्तु " आवा देवताधिष्ठित वृक्षनो छेद करवाथी आपणा स्वामीने (राजाने) कांइ विघ्न न थाओ." एम वि

चारीने ते दिवसे ते वृक्षना अधिष्ठायक देवनी आराधनामाटे उपवास करीने तथा गंध, धूप अने पुष्पादिकवडे तेनी पूजा करीने कारीगरो पोतपोताने स्थानके गया तेमनी भक्तियी ते वृक्षना अधिष्ठायक देवे प्रसन्न थइने रात्रीए अभयकुमारने कह्युं के—" हुं सर्व ऋतुओना पुष्प फळवाळा वृक्षोथी सुशोभित, नंदनवननी जेवा उद्यानवडे अलंकृत अने चोतरफ किल्लावाळो एकस्तंभी प्रासाद करी आपीश, माटे मारा भुवननी उपर रहेला वृक्षने तमे छेदावशो नहीं " ते सांभळीने अभयकुमारे ते वात अंगीकार करी, एटले अचिंत्य शक्तिवाळा ते व्यंतर देवे तेवा प्रकारनो प्रासाद तरतज बनावी आप्यो. कह्युं छे के:— " वचनथी बंधायेला देवो किंकरथी पण अधिक सेवा करनारा थाय छे " श्रेणिक राजा के जे एकला प्रासादनोज अर्थी हतो, ते आवा प्रकारना उद्यानथी सुशोभित प्रासादने जोइने दूध पीवानो आरंभ करता तेमां जेम साकर पडे तेम मानवा लाग्यो पछी राजाना आदेशथी चेल्लणा राणी पद्म (कमळ) सरोवरमां मग्न थएली लक्ष्मीनी जेम ते प्रासादमां रहीने निरंतर क्रिडा करवा लागी.

एकदा ते नगरमां वसनारी एक मातंगी (चंडाळनी स्त्री) ने अकाळे आम्रफळ खावानो दोहद थयो तेथी तेणीए पोतानो पति के जे विद्यासिद्ध हतो तेने चेलणाना उद्यानमांथी आम्रफळ लाववा माटे अत्यंत आग्रहपूर्वक कह्युं. ते मातंग श्रेणिक राजाथी अत्यंत भय पामतो हतो तो पण स्त्रीना आग्रहने लीधे 'अवनामिनी' नामनी विद्यावडे आम्रवृक्षनी शाखा नीचे नमावी इच्छाप्रमाणे आम्रफळो

रेइने पछी 'उन्मादिनी' विद्यावडे शाखाने वचे हतो तेवी करी चोरनी जेम नाशीने घेर जतो रह्यो कह्यु छे के,—

न किं कुर्यान्न किं दद्यात्स्त्रीभिरभ्यर्थितो नरः ।
अनश्वा यत्र हेषन्ते शिरोऽपर्वणि मुंडितम् ॥ १ ॥

अर्थ—" स्त्रीए प्रार्थना करेलो पुरुष शु न करे ? अने शु न आपे ? स्त्रीने वश थयेल पुरुष गधेडो थइने हेषारव करे छे (हणहणे छे, अने [1]पर्व विना पण शिरमुंडन करावे छे. "

आ श्लोक संबंधी कथा भोजप्रबंधमां छे, तेनो सार ए छे के— भोजराजा तथा काळीदास कवि ए बन्ने एकज वेश्यापर आसक्त हता एक दिवस भोजराजाए वेश्याने कह्यु के—" ज्यारे काळीदास तारी पासे आवे, त्यारे तारे तेने कहेवु के—तमे दाढी मूछ मुंडावीने मारी साथे विलास करो " वेश्याए काळीदासने तेम करवा कह्यु, त्यारे काळीदासे तेज प्रमाणे कर्यु पछी "आ काम भोजराजानु छे " एम जाणीने काळीदासे ते वेश्याने कह्यु के—"ज्यारे भोजराजा आवे,त्यारे तारे तेने कहेवु के—"हु तमारी उपर स्वारी करु,अने तमे गधेडानी जेम मारा घरमां भमता भमता हेषारव (घोडानी जेवो शब्द) करो, तो हु तमारो संग करु,नहींतो नहीं करु "ते सांभळीने वेश्याए ते वात कबूल करी त्यार पछी भोजराजा आव्यो, त्यारे तेणीए तेने कह्यु एटले तेणे

[1] पर्व एटले ग्रहण विगेरे योग ते दिवसे तीर्थ स्थाने दाढी मूछसहित मुंडन कराववानो विधि लौकिक शास्त्रमां छे.

ते प्रमाणे कर्यु पछी बीजे दिवसे राजसभामां काळीदास आव्यो, त्यारे भोजराजाए कह्यु के–" कालिदास कविश्रेष्ठ ! कस्मिन् पर्वणि मुंडनम् (हे उत्तम कवि काळीदास ! कया पर्वमां तमे आ मुंडन कराव्यु ?) " ते सांभळीने काळीदासे कह्यु के–"अनश्वा यत्र हेषन्ते तस्मिन् पर्वणि मुंडनम्–जे पर्वमां गधेडा हेषारव करे छे, ते पर्वमां में मुंडन कराव्यु छे " इत्यादि.

प्रातःकाळे चेलणा राणीए आम्रवृक्षपरथी फळ चुटायेला जोइने राजाने जणाव्यु त्यारे राजाए अभयकुमार मंत्रीने बोलावीने कह्युं के–" जेनी आवी शक्ति छे, ते अंतःपुरमां पण उपद्रव करी शके, माटे सात दिवसमां आ आम्रफळना चोरने प्रगट करजे (हाजर करजे); नहीं तो चोरना जेवो तारो दंड करवामा आवशे " ते सांभळीने अभयकुमारे राजानी आज्ञा स्वीकारी चोरनी शोध करवा मांडी छेल्ले दिवसे कोइ ठेकाणे पौरलोकोनो मोटो समुदाय एकठो थयो हतो, त्यां अभयकुमारे पोतानी बुद्धिथी ' वृहत्कुमारीनी ' कथा कहीने ते चोरने प्रगट कर्यो ते कथा आप्रमाणेः–

वृहत्कुमारीनी कथा.

वसतपुरमा निर्धन " जीर्ण " शेठने " वृहत्कुमारी " नामनी अत्यत स्वरूपवाळी पुत्री हती. ते कुमारी हंमेशां कामदेवनी पूजा करवा माटे उद्यानमांथी पुष्पोनी चोरी करती हती तेणीने एक दिवसे माळीए पुष्प चोरतां जोइ पकडी. अने तेणीना स्वरूपथी मोह पामेला ते उद्यानपाळे भोगमाटे तेणीनी प्रार्थना करी. त्यारे ते बोली

के–" हु कुमारी छु, तेथी स्पर्श करवालायक नथी. कह्यु छे के—
" रजस्वला, समान गोत्रवाळी, पोतानी जातथी उंची जातवाळी,
प्रव्रज्या (दीक्षा) लीधेली, तथा मित्र, राजा अने गुरुनी स्त्री–ए
आठ स्त्रीओ गमन (स्पर्श) करवालायक नथी " त्यारे उद्यानपाळ
बोल्यो के–" तु जे वखते परणे तेज दिवसे प्रथम मारी पासे तारे
आववु " कुमारीए ते वात स्वीकारी अने पोताने घेर गइ. पछी अ
नुक्रमे केटलेक काळे ते कुमारी परणी रात्रे तेणीए पोतानी प्रतिज्ञा
पोताना पतिने कही,त्यारे पतिए तेणीने सत्यवक्ता जाणी माळी पासे
जवानी रजा आपी, एटले ते सुवर्ण अने रत्नना अलंकारो धारण
करीने उद्यानपाळ पासे जवा चाली मार्गमां चोरोए तेणीने रोकी
तेमनी पासे सत्य वात जाहेर करी अने " पाछी वळतां तमे लुटी ले
जो " एम कह्यु, त्यारे तेओए तेणीने सत्य प्रतिज्ञावाळी जाणी तथा
"पाछी आवशे त्यारे लुटीशु " एम धारी तेणीने रजा आपी आगळ
जतां क्षुधाथी कृश थयेला राक्षसे तेणीने रोकी त्यां पण तेज रीते
तेणीए सत्य वात कही एटले तेणे तेणीने छोडी दीधी अने " पा-
छी आवशे त्यारे खाइ जइश " एम धारीने त्यांज बेठो. पछी ते स्त्री
माळी पासे गइ माळीए आश्चर्य पामीने तेणीने मातानी जेम नमस्कार
करी मुक्त करी पाछी वळतां राक्षसे अने चोरोए पण तेणीने छोडी
दीधी. घेर आवी पतिनी पासे सर्व हकीकत सत्य रीते कही बतावी,
तेथी पतिनी विशेषे मानीती थइ.

आ प्रमाणे कथा कहीने अभयकुमारे सर्व माणसोने पुछ्युं के–

" हे लोको ! आ चारमाना कोणे दुष्कर कार्य कर्यु कहेवाय ? " त्यारे केटलाक इर्ष्यालु पुरुषोए पतिने दुष्करकारी कह्यो, केटलाक क्षुधातुरोए राक्षसने दुष्करकारी कह्यो, जार पुरुषोए माळीने दुष्करकारी कह्यो, अने पेला आम्रफळ चोरनारा मातंगे चोरने दुष्करकारी कह्यो. तरतज अभयकुमारे तेने पकडयो अने पूछयु, एटले तेणे सत्यवात कही दीधी पछी अभयकुमार तेने राजानी पासे लइ गया. राजाए क्रोधथी तेनो वध करवानो हुकम कर्यो, त्यारे अभय कुमारे कह्यु के "हे स्वामी ! आनी पासे बे अपूर्व विद्याओ छे ते तो तमे ग्रहण करो, पछी जेम योग्य लागे तेम करजो कह्यु छे के—

बालादपि हितं ग्राह्यममेध्यादपि काञ्चनम् ।
नीचादप्युत्तमां विद्यां स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि ॥१॥

अर्थ—बाळक पासथी पण हित वचन ग्रहण करवु, अपवित्र वस्तुमांथी पण सुवर्णने ग्रहण करवु, नीच माणस पासेथी पण विद्या शीखी लेवी, अने नीच कुळमांथी पण स्त्री रत्न लेवु. "

ते सांभळीने राजा सिंहासनपर बेठा बेठा मातंगने पोतानी सन्मुख नीचे बेसाडीने तेनी पासेथी उन्नामिनी अने अवनामिनी नामनी विद्या शीखवा लाग्या. परतु घणीवार गोखता छतां पण हृदयमां जरा पण ते विद्या आरुढ थइ नहीं, त्यारे श्रेणिक राजा तेन.पर क्रोधायमान थया अने " अरे ! मारी साथे पण तु कपट राखे छ " एम कहीने तेनो तिरस्कार करवा लाग्या. ते वखते अभयकुमारे रा-

फळदायक थाय छे ते विषे गौतमपृच्छामां कह्यु छे के-" जे माणस मिथ्या विनयवडे विद्या अथवा ज्ञानने ग्रहणकरीने गुरुनी अवगणना करे छे, ते माणसनी विद्या तथा ज्ञान निष्फळ थाय छे तथा विनय सहित अने गुण करीने युक्त एवो जे माणस गुरुनी पासे बहुमान-पूर्वक विद्या ग्रहण करे छे, तेनी ते विद्या सत्वर सफल थाय छे "

बहुमान उपर वे निमित्तियानी कथा

कोइ एक सिद्धपुत्रनी पास बे शिष्यो अभ्यास करता हता. बन्ने जणा विनय तथा भक्ति विगेरे बराबर करता हता परंतु ते बन्नेमांथी एकने गुरुने विषे बहुमान हतु, अने बीजाने तेवु नहोतु ते बन्ने अनुक्रमे अष्टांग निमित्त शीखीने हुशीयार थया एकदा ते बन्ने घास अने काष्ठ लेवा माटे वनमां गया. मार्गमां पगलां जोइने एके कह्यु के-" आगळ हाथी जाय छे " त्यारे बीजो बोल्यो के-" हाथी जतो नथी, पण हाथणी जाय छे ते पण डाबी आंखे काणी छे, तेनापर एक स्त्री अने एक पुरुष बेठेला छे, तेमां जे स्त्री छे ते गर्भिणी अने सरत प्रसववाना समयवाळी छे, तेणीए रातु वस्त्र पहेरेलु छे, तथा ते थोडी मुदतमां ज पुत्रने प्रसवशे " ते सांभळीने बीजो बोल्यो के-" हे भाइ ! केम आम दीठा-भाल्या विना सत्यविनानु बोले छे ? " त्यारे ते बोल्यो के-" जे ज्ञान छे ते प्रतीति (खात्री) ना सारवाळु ज होय छे, तेथी मारी करेली सर्व हकीकत आगळ जणाशे." पछी ते बन्ने केटलीक पृथ्वी आगळ गया, तेटलामां तेमणे ते ज प्रमाणे सर्व जोयु. तथा ते स्त्रीने प्रसवनो समय थयेलो होवाथी त्यां एक

चेलाओनी झुपडी करी हती अने तेमां ते स्त्री रहेली हती. तेथी सर्व वात तत्काल मळती आवी. पछी ते बन्ने त्या क्षणवार रह्या, तेटलामां तेणीए पुत्र प्रसव्यो, ते सर्व जोइने बीजो ' आणे आ सर्व शी रीते जाण्युं ?' एम विचारीने आश्चर्य पाम्यो, तथा " में कांइ पण जाण्यु नहीं" एम विचारीने खेद पाम्यो त्याथी ते बन्ने चालता चालतां नदीने किनारे गया ते वखते एक वृद्ध स्त्री पाणी भरवा त्या आवी. तेणीनो पुत्र परदेश गयो हतो घणा दिवस थया छतां घेर आव्यो न होतो तेथी तेणीए ते बन्नेने पूछ्यु के–" मारो पुत्र क्यारे आवशे ? " आ प्रमाणे पूछतांज तेणीना मस्तकपरथी माटीनो घडो पडी गयो, अने भांगी गयो ते वखते मदबुद्धिवाळाए तेणीने कह्यु के–" कोइ प्रश्न पूछे तेज वखते जे कार्य नीपजे ते प्रश्ननो उत्तर थयो एम जाणवु, अथवा ते वखते जेवु कार्य थयु होय तेना जेवो ज उत्तर थयो जाणवो, अथवा ते वखते जे रूपे कार्य थयु होय ते रूपेनेनो उत्तर जाणवो. ए प्रमाणे सदृशपणावडे सदृश उत्तर जाणवो; आ प्रमाणे निमित्तशास्त्रमा कह्यु छे, तेथी हे वृद्धा ! तारो पुत्र मृत्यु पाम्यो छे, एम जणाय छे." ते साभळीने बीजो बुद्धिमान बोल्यो के–"हे भाइ ! एम न बोल तेणीनो पुत्र घेर ज आव्यो छे." एम कहीने तेणे वृद्धाने कह्यु के–" हे वृद्धा ! तु तारे घेर जल्दी जा तारो पुत्र घेर आवी गयो छे. खोटी शंकामां पडीश नहीं " ते साभळीने ते वृद्धा हर्ष पामीने तरत ज पोताने घेर गइ, तो त्यां पोतानो पुत्र आवेलो हतो तेने जोयो, अने मा तथा पुत्र स्नेहथी मळ्या पछी ते बन्ने शिष्यो जेटलामां गुरु पासे आव्या तेटलामां घणुं धन तथा घोडीयानो जोटो लइने

छुद्धा पण त्यां आवी, अने सत्य निमित्त कहेनारनो सत्कार कर्यो ने जोइने पेलो मद बुद्धिवाळो शिष्य गुरुपर क्रोध करीने बोल्यो के– " निरुपम ज्ञानवाळा अने सर्व जाणनारा आप जेवा गुरु पण विनयवंत एवा पोताना सरखा शिष्योमा पण जो आ प्रमाणे विद्या आपवामां अंतर राखे तो ते कोनी पासे कहेवु ? अने शु कहेवु ? कोनी पासे आ उपालभ आपवो ? जो चद्रमाथी पण अगारानी दृष्टि थाय, सूर्यथकी पण अधकारनी उत्पत्ति थाय, कल्पवृक्षथकी पण दारिद्यनी प्राप्ति थाय, चदनवृक्षथी पण दुर्गंध नीकळे, अमृतथकी पण विपनो आवेश प्राप्त थाय, सज्जनपणे पण दुर्जनतानु अधिकपणु जणाय, सारा वैद्यथी पण उलटी व्याधिनी उत्पत्ति थाय अने जळथकी पण जो अग्नि नीपजे तो तेमा कोने दोष देवो ? " ते सांभळीने गुरु बोल्या के–"हे शिष्य ! तु शा माटे आम बोले छे ? में तने अने आने विद्या आपवामां अने शास्त्र शीखववामा कोइ वखत भेद राख्यो नथी " पेलो शिष्य बोल्यो के–" त्यारे आणे मार्गमा हाथणी विगेरेनु वृत्तात शी रीते जाण्यु ? अने में केम न जाण्यु ? " गुरुए साचु जाणी शकेला शिष्यने पूछ्यु के–"हे सारी बुद्धिवाळा ! तें ते सर्व वृत्तांत शी रीते जाण्यु ?" त्यारे ते बोल्यो के–" हे गुरुजी ! आपना प्रसादथी तथा ते ते प्रकारनी निशानीओ जोवाथी में जाण्यु ते आवी रीते के–मार्गमा हाथणी मूतरेली हती, तेना रेला हाथी करतां जूदा आकारना होय छे तथी में हाथणी जाय छे एम जाण्यु मार्गमा मात्र दक्षिण (जमणी) बाजुए ज कोइ कोइ ठेकाणे सूकवडे घास लइ लइने तेणीए

भक्षण कर्युं हतुं, तेथी डाबी आंखे काणी छे, एम जाण्युं. मार्गमां उपर बेठेला स्त्री पुरुषे नीचे उतरीने कायिकी (लघुशंका) करी हती, ते परथी तेनापर स्त्रीपुरुष बेठा छे, एम जाण्युं. जे स्त्री हती तेणे कायिकी करीने उठतां वखते हाथे पृथ्वीपर थोभो (टेको) दीधो हतो, तेथी ते तरत प्रसववावाळी छे एम जाण्युं काटावाळा नाना झाडउपर वस्त्रनो छेडो भरायो हशे, तेना राता तातणा त्यां वळगेला हता, ते परथी ते स्त्रीए रातुं वस्त्र पहेर्युं छे एम जाण्युं मार्गमां थोडीवार चाली हती, तेमां जमणा पगनुं पगलुं रेतीमां वधारे खुंची गयुं हतुं, ते परथी तेना गर्भमां पुत्र छे एटले पुत्रने प्रसवशे एम जाण्युं. वृद्धा स्त्रीनो पुत्र घेर आव्यो, ए वात में ए परथी जाणी के—जेम घडो पडीने फूटी गयो, ते पृथ्वी (माटी)माथी उत्पन्न थयो अने पृथ्वीनी साथे मळी गयो, तेम आनो पुत्र पण आ वृद्धाथी उत्पन्न थयेलो छे, ते तेणीने मळवो जोइए,एम धारीने में घेर आव्यानुं कह्युं." ते सांभळीने तेनी अत्यंत तीक्ष्ण बुद्धिथी हर्ष पामेला गुरुए बीजा शिष्यने कह्युं के—" हे वत्स! तुं मारे विषे विविध प्रकारनो विनय करतां छतां पण तारुं तेवा प्रकारनुं मारा विषे बहुमान नथी, अने आ तो मारा प्रत्ये अत्यंत बहुमान धरावे छे, तेमज तेनी विनयवाळी बुद्धि छे, माटे सारी रीतना बहुमानयुक्त विनय होय, तो ज विद्या फळदायक थाय छे तेथी आ बाबतमां मारो काइ पण दोष नथी ' आ प्रमाणे घणो विनय छतां पण बहुमानवाळाने फळनी सिद्धि थइ अने बहुमान रहितने फळनी असिद्धि थइ एम समजवुं.

हवे विनय थोडो छतां पण बहुमाने करीने फळनी प्राप्ति थाय छे, तेपर दृष्टांत कहे छे. कोइ एक पर्वतमांथी पाणीना झरणां वहेता हता ते ठेकाणे एक शिवनी मूर्त्ति प्रत्यक्ष प्रभाववाळी हती तेनी कोइ एक ब्राह्मण हमेशां शुद्ध थइने चंदन पुष्पादिकवडे बहु भक्तिपूर्वक पूजा करतो हतो. अने एक भिल्ल एक हाथमां धनुष अने बाण राखीने, एक हाथमां बिल्लिपत्र लइने तथा मुखमां पाणी भरीने तेनी पूजा करवा आवतो ते प्रथम करेली ब्राह्मणनी पूजाने पगवडे काढी नाखी-ने कोइ प्रकारनी बीजी पूजानी सामग्री विना मात्र मुखमां भरेला पाणीना कोगळावडे ते मूर्त्तिने नवरावी तेनापर बिल्लिपत्र चढावतो, परंतु ते अंतःकरणना बहुमानथी पूजा करतो हतो. मूर्खपणाने लीधे योग्य प्रकारनो विनय करवानुं तेने ज्ञान नहोतुं तोपण केवळ बहुमानथीज प्रसन्न थयेला शिव तेनी साथे हमेशां कुशळ प्रश्नादिक वार्ता करता हता एक दिवस ते वृत्तांत पेला ब्राह्मणना जाणवामां आव्युं, त्यारे तेणे क्रोधथी शिवने उपालंभ दीधो के–" हे शिव ! तुं पण ते भिल्ल जेवो ज जणाय छे " त्यारे शिवे तेने कह्युं के–" ए भिल्ल मारापर अत्यंत अनुरागी छे तेनी तने काले सवारे खात्री थशे. " ते सांभ-ळीने ब्राह्मण तेनी अवगणना करीने घेर गयो. बीजे दिवसे प्रात काळे शिवे पोतानुं एक नेत्र काढी नाख्युं थोडीवारे ब्राह्मण पूजा करवा आव्यो, ते ते प्रमाणे जाइने कांइक खेद करीने उभो रह्यो एटलामां पेलो भिल्ल आव्यो तेणे पण शिवनुं एक नेत्र जोयुं नहीं तेथी ते घणो ज खेद करवा लाग्यो, अने तरत ज भालावडे पोतानुं

नेत्र काढीने ते शिवने अर्पण कर्यु. ते वखते शिवे प्रसन्न थइने तेने बेनु नेत्र पाछु आप्यु, अने राज्य आप्यु

आ परथी एम समजवानुं छे के हृदयना बहुमानथी ज गुरु तथा देवो तुष्टमान थाय छे जिनस्तुतिमा पण कह्यु छे के-"हे प्रभु ! तमे आ आलोवडे देखाता नथी, तथा महा पूजावडे पण आराधन कराता नथी, परंतु घणा भक्तिरागे करीने तथा आज्ञानु पालन करवावडे करीने ज प्रसन्न थाओ छो."

ते भिल्लनु बहुमान जोइने ब्राह्मण चित्तमां चमत्कार पाम्यो. आ प्रमाणे बहुमान अने अबहुमाननु फळ जाणीने विवेकी पुरुषे गुर्वादिकनुं सारी रीते बहुमान करवामां यत्न करवो.

॥ इति तृतीयो बहुमानाचार ॥

चोथा उपधानाचार विषे

श्रुतज्ञानना अर्थीए विधिप्रमाणे उपधान वहन करवा जोइए. तेमा " 'उप' एटले समीपे, 'अधीयते' एटल सूत्रादिक भणाय " ए शब्दार्थवड उपधान एटले श्रुतना आराधन माटे अमुक प्रकारनी शास्त्रविहित तपस्या विशेष तेमा साधुओने आवश्यक विगेरे श्रुतना आराधनमाटे आगाढ अन अनागाढ योगरूप सिद्धान्तने अनुसारे पोतपोतानी सामाचारी प्रमाणे क्रिया जाणवी. अने श्रावकोने माटे तो पंच परमेष्टि नमस्कार विगेरे सूत्रना आराधन माटे श्री महानिशीथ सूत्रमां कहेला उपधान प्रसिद्ध छे ते आगवा जेम साधुओने

योगनु वहन कर्या विना सिद्धांतनु वाचवु भणवु शुद्ध थतु नथी, तेम उपधान तप कर्या विना श्रावकोने पण नमस्कार (नवकार) आदि सूत्रनु भणवु गणवु शुद्ध थतु नथी. महानिशीथ सूत्रमां अकाळ, अविनय, अबहुमान, अनुपधान विगेरे आठ प्रकारना ज्ञानकुशीलमा अनुपधान नामना कुशीलने घणा दोषवालो कह्यो छे. तेमा आ प्रमाणेना अर्थवालो आलावो छे—"हे गौतम ! आ आठ प्रकारना ज्ञानकुशीलमां जे कोइ माणस अनुपधाने करीने (उपधान कर्या विना) प्रशस्त ज्ञाननो अभ्यास करे अथवा करावे अथवा अभ्यास करता करावतानी अनुमोदना करे, तेमने महा पापकर्मवाळा जाणवा केमके तेओ प्रशस्त ज्ञाननी मोटी आशातना करे छे, एम जाणवु." गौतम गणधर पूछे छे—"हे भगवान् ! जो एम छे तो पंचमंगल (नवकार) नु उपधान शी रीते करावबु ?" भगवान् जवाब आपे छे "—हे गौतम ! प्रथम ज्ञान अने पछी दया. अने दयावडे सर्व जगत्ना जीवोना प्राणरूप सत्त्वोने पोताना समान जोवा, ते दया विगेरे सर्व ज्ञानथी ज प्रवर्ते छे हे गौतम ! जे विधिवडे पंचमंगळनु उपधान करावबु योग्य छे ते आ प्रमाणे—सारां एवां तिथि, करण, मुहूर्त, नक्षत्र, योग अने लग्न होय तथा चंद्रनु बळ होय त्यारे आत्यादिक आठ मदनो त्याग करीने, तथा अत्यंत तीव्र श्रद्धा अने संवेग उत्पन्न थवाथी उल्लास पामता महा शुभ अध्यवसायने अनुसारे भक्ति अने बहुमानपूर्वक, तथा निदान (नियाणा) रहित, द्वादश भक्त (पांच उपवास) करीने, चैत्यालयमां जतुरहित प्रदेशने विषे जइने नवा न-

ा संवेगवडे उछळता अने अत्यत गाढ, अचिंत्य तथा परम शुभ परि-
णाम उत्पन्न थवाथी उल्लास पामता दृढ अतःकरणवाळा श्रावके पांच
म-ययन अने एक चूलाए करीने सहित तथा श्रेष्ठ एवा प्रवचन देव-
ाए अधिष्ठित पचमगल रूप महा श्रुतस्कंधनुं पहेलुं अध्ययन के जे
ण पदे करीने व्याप्त, एक आलावावाळु, सात अक्षरथी बनेलुं,
ग्नंत गम, पर्याय अने अर्थने साधनारुं तथा सर्वे महामंत्रो अने प्रवर
उत्तम) विद्याओनां परम बीजरूप छे, ते (नमो अरिहंताणंरूप) प-
लुं अध्ययन भणवु. ते दिवसे आचाम्ले (आवेले) करीने पारणु
रवु ते ज प्रमाणे बीजे दीवसे बे पदे करीने व्याप्त, एक आलावावाळुं
ने पांच अक्षरवाळु'नमो सिद्धाणं'बीजु अध्ययन आचाम्ल करीने भणवु.
ज प्रमाणे पांच दिवस करीने पांच अध्ययन आचाम्ल करीने भणवा.
छी त्रण आलावावाळी अने तेत्रीश अक्षरवाळी "एसो पच नमुक्कारो
त्यादि" चूलाने छठे सातमे अने आठमे दिवसे दररोज आचाम्ल
रीने भणवी. पछी अठमभक्त (त्रण उपवास) करीने अनुज्ञा लइने
ाखो मत्र अवधारवो.

त्यार पछी इर्यापथिक सूत्र (इरियावही) भणवु गौतम गण
र पुछे छे-"हे भगवान्! ते इर्यापथिक सूत्र कइ विधिए भणवु ?"
गवान् जवाब आपे छे-"हे गौतम! पचमगल महाश्रुतस्कधनी ज
म तेटलाज तपवडे इर्यापथिक सूत्र भणवुं. २ शक्रस्तव (नमुथ्थुण)
क अठम अने बत्रीश आंबिलवडे भणवु. ३ अर्हत्स्तव (चैत्यस्तव—
रिहंतचेइआणं) एक उपवास अने त्रण आंबिलवडे भणवु. ४ चतु-

विंशति स्तव (लोगस्स) एक छठ, एक उपवास अने पचवीश आं-निलवडे भणवु ५ तथा ज्ञानस्तव (श्रुतस्तव ने सिद्धस्तव) एक उपवास अने पाच आंबिलवडे भणवु ६ " इत्यादि *

उपर प्रमाणे उपधाननु वहन कर्या पछी उत्तम एवु तिथि, करण, मुहूर्त, नक्षत्र, योग, लग्न अने चंद्रनु बळ होय त्यारे शक्ति अनुसार जगद्गुरु श्रीजिनेश्वरनी पूजा करीने तथा मुनिवर्गने प्रतिलाभीने गुरु-सहित साधु, साध्वी, साधर्मिक अने बंधुवर्गने साथे लइने वाजते गाजते प्रथम गामना चैत्योने वंदना करवी त्यार पछी गुणवान् साधुओनु तथा साधर्मिक जनोनु पोतानी शक्तिप्रमाणे प्रणाम विगेरे करवाथी तथा सूक्ष्म, बहु मूल्यवाळां, कोमळ अने उज्वळ वस्त्र विगेरेथी महा सन्मान करवु पछी गुरुए धर्मदेशना आपवी. पछी अत्यंत श्रद्धा अने संवेगवान् ते श्रावकने यावज्जीवनो अभिग्रह आपवो के "तारे आजथी आरंभीने जीवन पर्यंत त्रणे काळ दररोज चैत्यवंदना करवी (दर्शन पूजा करवी) विगेरे." पछी मंत्रेली गंध मुष्टिओ सातवार तेना मस्तकपर 'नित्थारगो भविज्जासी' 'तु निस्तारक था' (संसार समुद्रनो पार पाम) एम बोलतां गुरुए नाखवी पछी चतु-र्विध संघ पण तेना मस्तकपर गंध मुष्टिओ नांखवी त्यारपछी गुरुए जगद्गुरु श्रीजिनेश्वरनी करेली पूजाना एक भागमांथी सुगंधवाळी,

---

* आमा पेहेलु बीजु चोथु ने छठ्ठु उपधान एक साथे वहन करवामा आवे छे, अने त्रीजु ने पांचमु उपधान त्यार पछी जुदु जुदु [illegible] शकाय छे

नहीं करमायेली अने उज्वळ (श्वेत) एवी पुष्पनी माळा ग्रहण करीने पोताना हाथवती तेना बन्ने खभापर आवी जाय तेम नाखवी,[1] अने नाखता नाखता गुरुए तेना उपबृहणादिक बोलवा. गौतमस्वामी पूछे छे "हे भगवान्! ते उपबृहणा शु ?" भगवान् कहे छे–"हे गौतम! पांच मंगळनी जेम सामायिक विगेरे समग्र श्रुतज्ञान तेने भणाववु, अने ते विनय उपधानवडे भणाववु. विशेष एटलु के– भणवा इच्छनार श्रावकोए आठ प्रकारनो काळादिक ज्ञानाचार प्रयत्नपूर्वक पाळवो न पाळे तो मोटी आशातना लागे वळी द्वादशांग श्रुतज्ञान भणवा भणाववानो काळ रात्रि अने दिवसना प्रथम अने छेल्ला प्रहरनो छे, पण पचमंगळ भणवा भणाववानो काळ तो आठे प्रहरनो छे. तथा पचमंगळ (नवकार) सामायिक लीधु होय अथवा न लीधुं होय तोपण भणाय छे, परतु सामायिकादिक श्रुत तो आरभ अने परिग्रहना त्यागपूर्वक यावज्जीव सामायिक उचरेलु होय तेनाथीज (साधुथीज) भणी शकाय छे, पण आरभ अने परिग्रहधारी तथा जेणे सामायिक लीधु नथी एवा श्रावकने भणवा योग्य नथी.

पांच महा मंगळने आलावे आलावे (दरेक आलावे) आंबिल करवु, तथा शक्रस्तवादिकने विषे पण आंबिल करवु तेमज द्वादशांग श्रुतज्ञानना उद्देशना अध्ययनने विषे पण एज प्रमाणे आंबिल करवुं गौतमस्वामी पूछे छे " हे भगवान्! पचमगल महाश्रुतस्कधनुं आ विनयोपधान आपे अत्यत दुष्कर कह्युं. तेथी आ मोटी नियंत्रणा

१ हालमा [illegible] माळा पहेराववामा आवे छे.

बाळ जीवोथी की रीते बने ?" भगवान् जवाब आपे छे के "हे गौतम ! जे कोइ माणस आ नियंत्रणाने न इच्छे एटले न करे, अने विनयोपधान कर्यां विनाज पचमंगलादिक श्रुतज्ञान भणे, अथवा भणावे, अथवा तेनी अनुमोदना करे, तेओ परस्पर एक बीजाने पापमा नाखे छे, तेमने धर्मनी प्रीतिवाळा कहेवा नहीं, तेओ गुरुनी आशातना करनारा जाणवा, तथा अतीत, अनागत अने वर्तमान तीर्थंकरोनी अने श्रुतज्ञाननी आशातना करनारा जाणवा, तथा ते अनत ससारसागरमां भ्रमण करे छे. केमके आ विनयोपधाननी चिरकाळनी नियत्रणा छे. वळी हे गौतम ! जे कोइ आ विधिप्रमाणे करे, जरा पण अतिचार लगाडे नहीं, अने यथोक्त विधान प्रमाणेज पचमगलादिक श्रुतज्ञाननु विनयोपधान करे ते सूत्रनी हीलना करनारो नथी, तथा वारवार भवमा भ्रमण करवारूप गर्भवासादिक अनेक प्रकारना दु:खोने पामतो नथी अहीं विशेष एटलु छे के–हे गौतम ! जेओ बाळक छे तथा पुण्य पापने पण नहीं जाणनारा छे, तेओ पच-मगल भणाववाने सर्वथा अयोग्य छे तेओने पचमंगल महाश्रुतस्कधनो एक पण आलावो आपवो (शीखववो) नहीं. केमके अनादिकाळ भवभ्रमण करवाथी उपार्जन करेलां अशुभ कर्मराशिने दहन करवा समर्थ एवा आ पचमगळने पामीने बाळजनो तेनु सारी रीते आराधन करी शके नहीं, अने उलटा ते पचमगळने लघुता पमाडे तेथी तेवा लोकोने केवळ धर्मकथा कहीनेज भक्तिवाळा करवा. पछी ज्यारे धर्मनी श्रद्धावाळा, दृढ धर्मवाळा तथा भक्तियुक्त थाय त्यारे आ प्रत्याख्या-

ननो निर्वाह करवामां ते समर्थ थाय अने ते प्रमाणे थयेल छे एम जाण्या पछी ज तेने आ विनयोपधान कराववुं.

पछी उपधान वहन करनारने रात्रिभोजननु पण बे प्रकारे, त्रण प्रकारे, के चार प्रकारे (दुविहार, तिविहार के चौविहारनी रीते) जेनी जेवी शक्ति होय ते प्रमाणे तेने प्रत्याख्यान करावत्रु वळी हे गौतम ! पीस्तालीश नवकारशीवडे एक उपवास थाय छे. तथा चोवीश पोरसीवडे, चार पुरिमड्ढवडे, दश अपार्ध (अवड्ढ) वडे, त्रण नीवी वडे, चार एकलठाणावडे, बे आंबीलवडे अने एक शुद्ध आंबीलवडे एक उपवास थाय छे. (सांसारिक रौद्र ध्यान अने विकथा रहित तथा स्वाध्यायमां एकाग्र चित्तवाळानु एक आंबील मासक्षपणथी पण वधी जाय छे) तेथी करीने ते प्रकारे अने ते रीते उपधानसंबंधी तप करे, पछी एनी गणत्री करीने ज्यारे एम जणाय के " हवे आ आटला तप उपधानथी ए पंचमंगळ भणवाने योग्य थयो छे " त्यारे गुरु ए तेने भणाववो, अन्यथा भणाववो नहीं."

गौतम स्वामी प्रश्न करे छे के-" हे भगवान् ! घणा काळ सुधीनी आ क्रिया करतां जो कदाच वच्चे ज ते मृत्यु पामे, तो नमस्कार रहित ते शी रीते मुक्तिमार्ग साधी शके ?" भगवान् कहे छे के-" हे गौतम ! जे समयथी तेणे सूत्रना आराधन निमित्ते अशठ भावथी पोतानी शक्तिप्रमाणे यत्किंचित (थोडो) पण आरंभ कर्यो छे, ते ज समयथी तेने सूत्र तथा अर्थने भणेलो जाणवो, केमके ते (श्रावक) पंचनमस्कार सूत्रने, अर्थने तथा ते बन्नेने अविधिए ग्रहण करे नहीं.

परतु तेवी रीते ग्रहण कर के जेथी भवांतरमां पण ते नाश पामे नहीं एवा शुभ अध्यवसायपणाने लीधे ते आराधक थाय " फरी थी गौतम स्वामी भगवानने पूछे छे के–" हे भगवान् ! बीजाने भण ता सांभळीने ज जेओने श्रुतज्ञानावरणना क्षयोपशमने लीधे पचमंगळ (नवकार] कंठे थइ जाय छे, तेमने पण तप उपधान करावु ?" भगवान् कहे छे–" हा, तेने पण करावबु " गौतम स्वामी पूछे छे " हे भगवान् ! तेने शामाटे उपधान करावबुं ? " भगवान् कहे छे– " हे गौतम ! सुलभबोधिपणानी मार्गने निमित्ते तेने पण उपधान करावबु ए प्रमाणे नहीं करनाराने ज्ञानकुशीलीया जाणवा "

अहीं कोइ शका करे के–श्री आवश्यक सूत्रमां नमस्कारने सामायिकना अंग तरीके कह्यु छे, अने महानिशीथमां महा श्रुतस्कंध तरीके कह्यु छे ते बन्ने शी रीते घटे ! एनो जवाब ए छे के–जेम आवश्यक सूत्रना पहेला अध्ययननी निर्युक्तिमां जूदु बतावेलु सामायिक पहेलु अध्ययन कहेवाय छे, अने तेज (सामायिक) प्रतिक्रमण नामना चोथा अध्ययनमां तेना एक देश (एक भाग) पणे देखाय छे ए ज प्रमाणे नमस्कार पण ज्यारे सामायिकना आरंभमां बोलाय त्यारे तेने जूदं श्रुतस्कंध जाणवु, वळी महानिशीथ सूत्र बीजा श्रुत करता वधारे विशिष्ट छे एम जणाय छे केमके तेना अगाढ योग छे, अने तेमां पीस्तालीश आंबील एक साथे करवामा आवे छे तेथी बीजा योगोना तप करतां तेना योगनो तप अति दुष्कर छे, माटे तेनु उत्कृष्टपणु सिद्ध थाय छे आ (उत्कृष्टपणाना) कारणने लीधे पण जेओ महानिशी

अने प्रमाणिक मानता नथी, तेओनी शी गति थशे ? ते अमे जाणी शकता नथी (अर्थात् घणीज माठी गति थवी जोइए) केमके श्रुतनो अपलाप करवो ए महा मोटु पाप छे. मूढ बुद्धिवाळाए "महानिशीथ नामनु सूत्र श्रुत कहेवाय के नहीं, एवो संदेह रहे छे" एम कदी पण कहेवु नहीं केमके नंदिसूत्र अने पाक्षिकसूत्र विगेरेमा "निसीह महानिसीह" ए प्रमाणे प्रत्यक्ष कह्यु छे (तेथी ते श्रुत छे, एम सिद्ध थाय छे) वळी "नंदिसूत्रादिक पण श्रुत गणाय के नहीं ?" एवी शका करवी नहीं कारण के एम कहेवाथी श्री आचाराग अने औपपातिक (उववाइ) विगेरे सूत्रो के जे हालना समयमां वर्तमान छे, तेमनु पण नंदिसूत्रादिकमा श्रुतपणु कहेलु छे तेथी तेमने पण श्रुतरहितपणानो प्रसग आवशे, ते निवारण करी शकाशे नहीं. अने ए प्रमाणे समीक्षा (विचार) कर्या विना भाषण करवावडे आशातना करनारा पुरुषोने जिनादिक देवने विषे पण जेम तेम प्रलाप करवामा वांधो आवशे नहीं. (अर्थात् तेमने कोइ अटकावे तेम नथी) आ प्रमाणे महानिशीथनु प्रमाणपणु सिद्ध थाय छे, छतां जेओ अनंत संसारना दुःसह दु खोथी पण नहीं भय पामतां छतां केवळ कदाग्रहने लीधे मोटा साहसने अंगीकार करीने महानिशीथने प्रमाणरूप न मानता होय, तेओने पण उपधान तप तो अंगीकार करवानु छेज, कारण के चौद पूर्वधारी श्रीभद्रबाहु स्वामीए रचेला दशवैकालिकनिर्युक्ति आदि ग्रंथोमां-" काले विणए बहुमाणे उवहाणे० (काळ, विनय, बहुमान, उपधान," ए गाथामा उपधान प्रत्यक्ष रीते करवानु कह्यु छे समवा-

परतु तेवी रीते ज ग्रहण कर के जेथी भवांतरमां पण ते नाश पामे नहीं एवा शुभ अध्यवसायपणाने लीधे ते आराधकज थाय. " फरी श्री गौतम स्वामी भगवानने पूछे छे के–" हे भगवान ! बीजाने भण ता सांभळीने ज जेओने श्रुतज्ञानावरणना क्षयोपशमने लीधे पचमंगळ (नवकार] कंठे थइ जाय छे, तेमने पण शु तप उपधान करावु ?" भगवान् कहे छे–" हा, तेने पण कराववु " गौतम स्वामी पूछे छे " हे भगवान् ! तेने शामाटे उपधान कराववु ? " भगव न् कहे छे– " हे गौतम ! सुलभबोधिपणानी माग्निने निमित्ते तेने पण उपधान कराववु ए प्रमाणे नहीं करनाराने ज्ञानकुशीलीया जाणवा "

अहीं कोइ शंका करे के–श्री आवश्यक सूत्रमां नमस्कारने सामायिकना अंग तरीके कह्यु छे, अने महानिशीथमां महा श्रुतस्कंध त रीके कह्यु छे, ते बन्ने शी रीते घटे ? एनो जवाब ए छे के–जेम आव श्यक सूत्रना पहेला अध्ययननी निर्युक्तिमा जूदु बतावेलु सामायिक पहेलु अध्ययन कहेवाय छे, अने तेज (सामायिक) प्रतिक्रमण नामना चोथा अध्ययनमा तेना एक देश (एक भाग) पणे देखाय छे ए ज प्रमाणे नमस्कार पण ज्यारे सामायिकना आरभमां बोलाय त्यारे तेने जूदु श्रुतस्कंध जाणवु, वळी महानिशीथ सूत्र बीजा श्रुत करता वधारे विशिष्ट छ एम जणाय छे, केमके तेना अगाढ योग छे, अने तेमां पीस्तालीश आंबील एक साथे करवामां आवे छे तेथी बीजा योगोना तप करतां तेना योगनो तप अति दुष्कर छे, माटे तेनुं उत्कृष्टपणु सि द्ध थाय छे आ (उत्कृष्टपणाना) कारणने लीधे पण जेओ महानिशी

अने प्रमाणिक मानता नथी, तेओनी शी गति थशे ? ते अमे जाणी शकता नथी (अर्थात् घणीज माठी गति थवी जोइए.) केमके श्रुतनो अपलाप करवो ए महा मोटु पाप छे. मूढ बुद्धिवाळाए "महानिशीथ नामनु सूत्र श्रुत कहेवाय के नहीं, एवो संदेह रहे छे" एम कदी पण कहेवु नहीं केमके नंदिसूत्र अने पाक्षिकसूत्र विगेरेमां "निसीह महानिसीह" ए प्रमाणे प्रत्यक्ष कहु छे (तेथी ते श्रुत छे, एम सिद्ध थाय छे) वळी "नंदिसूत्रादिक पण श्रुत गणाय के नहीं ?" एवी शंका करवी नहीं कारण के एम कहेवाथी श्री आचारांग अने औपपातिक (उववाइ) विगेरे सूत्रो के जे हालना समयमां वर्तमान छे, तेमनु पण नंदिसूत्रादिकमां श्रुतपणु कहेलुं छे तेथी तेमने पण श्रुतरहितपणानो प्रसंग आवशे, ते निवारण करी शकाशे नहीं. अने ए प्रमाणे समीक्षा (विचार) कर्या विना भाषण करवावडे आशातना करनारा पुरुषोने जिनादिक देवने विषे पण जेम तेम प्रलाप करवामां वांधो आवशे नहीं. (अर्थात् तेमने कोइ अटकावे तेम नथी) आ प्रमाणे महानिशीथनु प्रमाणपणु सिद्ध थाय छे, छतां जेओ अनंत संसारना दुःसह दुःखोथी पण नहीं भय पामतां छता केवळ कदाग्रहने लीधे मोटा साहसने अंगीकार करीने महानिशीथने प्रमाणरूप न मानता होय, तेओने पण उपधान तप तो अंगीकार करवानु छेज, कारण के चौद पूर्वधारी श्रीभद्रबाहु स्वामीए रचेला दशवैकालिकनिर्युक्ति आदि ग्रंथोमां—" काले विणए बहुमाणे उवहाणे० (काळ, विनय, बहुमान, उपधान," ए गाथामां उपधान प्रत्यक्ष रीते करवानु कह्युं छे समवा-

तो सामाचारीओमां ज देखाय छे, कोइ सिद्धांतमां साक्षात् (स्पष्ट वचनवडे) देखातो नथी तेथी साधुना योगवहनना विधिनी जेम श्रावकोना उपधानोमां पण पौषध ग्रहण करवा विगेरेनो विधि प्रमाण करवा योग्य छे आथी करीने एम सिद्ध थयु के साधुओए तथा श्रावकोए बीजी सर्व तपस्याओ करता प्रथम अवश्य कर्तव्यपणे करीने उपधान तप आराधवा लायक छे. जे मनुष्यो आजीवीकाने माटे, गृहकार्यादिकनी अत्यंत व्यग्रताने लीधे अथवा प्रमाद विगेरे कारणने लीधे उपधानतु वहन करता नथी, तेओने नवकार गणवा, देववंदन करवु, इर्यावही पडिक्कमवा, प्रतिक्रमण करवु विगेरे क्रियाओ जीवन पर्यंत कदापि शुद्ध थती नथी अने भवांतरे पण तेमने ते क्रियाओनो लाभ मळवो असंभवित छे, केमके ज्ञानना विराधकोने ज्ञाननी दुर्लभता प्रतीत थाय छे तेथी ज्ञानना आराधननी इच्छावाळाए उपधान विधिमां यथाशक्ति यत्न करवो



साधुओना उपधान [योग] विषे दृष्टांत

गंगा नदीने कांठे कोइ आचार्य घणा शिष्योने निरंतर भणाववाथी तथा तेमना प्रश्नोना उत्तर आपवाथी रात्रे पण विश्रांति पामता नहीं तेथी पोतानी साथे ज दीक्षित थयेला पण थोडु भणेला पोताना भाइने स्वेच्छाए निद्रादिक सुखने भोगवता जोइने ज्ञान उपर आदर रहित थइ विश्राम लेवानी इच्छाथी स्वाध्यायने वखते पण अस्वाध्यायनो समय छे एम कहेवा लाग्या. ते ज्ञानातिचारनी आलोचना कर्या

विना मरण पामीने सौधर्म देवलोकमां देव थइ त्यांथी चवी कोइ गामडामां आभीर (भरवाड) ना कुळमां उत्पन्न थया. ते आभीर भोगादिकथी सुखी हतो. एकदा अत्यंत रूपवाळी पोतानी पुत्रीने गाडाना अग्र भागपर बेसाडीने ते घी वेचवा माटे कोइ नगर प्रत्ये चाल्यो. ते वखते तेनी साथे बीजा पण घणा जुवान आभीरो नगर प्रत्ये जता हता. तेओए मार्गमां ते कन्यानुं अद्भुत रुप जोइ परवश बनी पोतपोतानां गाडां उन्मार्गे चलाव्यां, जेथी ते गाडां भांगी गयां. रूपमां आसक्त थयेला पुरुषोने आ गाडां जेवी वस्तुनुं नुकशान कइ गणत्रीमां छे ? कोइज नथी. ते विषे परमऋषिनुं वचन छे के–

रूवेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं,
अकालिअं पावइ से विणासं;
रागाउरे से अहवा पयंगे,
आलोअलोले समुवेइ मच्चुं ॥

अर्थ–जे पुरुष रूपने विषे अत्यंत आसक्ति पामे छे, ते अकाले मृत्युने पामे छे, कारण के आलोक (दीवा) ना रूपमां आसक्त थयेला पतंगीयाओ रागातुर थइने अकाळे मृत्युने पामे छे.

पछी ते आभीरोए दु:खित थवाथी ते कन्यानुं "अशकटा" अने तेणीना पितानुं "अशकटापिता" एवुं नाम पाड्युं तेथी खेद पामीने वैराग्य उत्पन्न थवाथी तेणे पोतानी पुत्री कोइने परणावी दीधी अने पोते दीक्षा लीधी. पछी ते साधुए उत्तराध्ययनना त्रण अध्ययन सुधी

दचने कुशळ एवा माता, पिता अने बंधु विगेरेए घणे प्रकारे प्रेरणा कर्या छता पण जेम गळीयो बळद धूसरीना भारने वहन न करे तेम तेणे उपधान वहन कर्युं नहीं. "धर्मिष्ठोने पण प्रमादरुपी मदिरा पानथी उत्पन्न थयेला मदनी अधिकताना आवेशनी पुष्टता थाय छे तेने धिक्कार छे, केमके सम्यक् प्रकारनी धर्मक्रियामां कुशळ छतां पण जाणे अग्निथी दग्ध थयेला होय तेम तेओ ते धर्मक्रियाना आराधन माटे उद्यमीज थता नथी." आ प्रमाणे ते ऋषभदत्ते उपधान नहीं वहन करवाने लीधे तथा तेनी अवगणना करवाने लीधे श्रावक धर्मनु आराधन करता छतां पण तीव्र ज्ञानावरणीय कर्म बांध्यु पछी ते बन्ने भाइओ श्रावक धर्मनु आराधन करी सौधर्म देवलोकमा देवो थया. त्यांथी आयुष्य पूर्ण थये चवीने महाविदेह क्षेत्रमा मोटा इभ्यना

कुळमां साथे जन्मेला बे पुत्रो थया मोटानु नाम "देवदत्त" अने बीजानु "गुरुदत्त" पाड्यु ते बन्नेमां मोटो देवदत्त पूर्व कर्मना दोषथी बुद्धिरहित अने अत्यत मूर्ख थयो, अने नानो गुरुदत्त अत्यत बुद्धिमान अने डाह्यो थयो अनुक्रमे योग्य वय आवतां ते बन्नेने भणाववा माटे पिताए अध्यापकने सोंप्या. तेमा मोटाने घणी महेनत कर्या छतां पण अत्यत तपावेला पात्रपर जळना बिंदुनी जेम एक अक्षर मात्र पण हृदयमा आरूढ थयो नहीं घणु शु कहेवु ? पण अक्षरो वांचवा लखवा जेटलु पण ज्ञान थयु नहीं. काष्ठना पुतळानी जेम तेने लेश मात्र पण आवड्यु नहीं तेने माटे पिताए विविध प्रकारनां औषध, जत्र, तंत्र, मंत्र अने देवप्रसादिक उपायो कर्या,

तथा हंमेशां प्रयत्नपूर्वक तेने भणाववा लाग्या, तोपण ते नवकार मंत्र नुं एक पण पद शीखी शक्यो नहीं. अने नानो गुरुदत्त तो हृदयना अभिप्रायने जाणवाथी बृहस्पतिनी जेम थोडा दिवसमांज सुखे करीने सकळ शास्त्रसमुद्रनो पारगामी थई सर्व विद्वानोनां मुगटसमान थयो, अने अनुक्रमे ते सम्यक् प्रकारे श्राद्ध धर्मनी समग्र क्रियानुं जाणपणुं तथा उत्सर्ग अने अपवाद मार्गनुं जाणपणुं ए विगेरे गुणोए करीने जिनशासनने विषे अनुपम कुशळताने पाम्यो "अहो! ज्ञानना आराधन अने विराधननो कोइ (अलौकिक) अनिर्वाच्य विपाकोदय छे." त्यार पछी ते बन्ने भाइओ लोकमां अनुक्रमे राहु अने सूर्यनी, लोढानी कढाइ अने चंद्रनी, रात्री अने दिवसनी, अमावास्या अने पूर्णिमानी, अंगारा अने सुवर्णनी, धत्तूरो अने चंपक पुष्पनी, केरडो अने कल्पवृक्षनी, मेश अने दूधनी, काक अने कोयलनी, बग अने हंसनी, कलियुग अने सत्युगनी, दुर्जन अने सज्जननी तथा गर्दभ अने हाथीनी–विगेरे उपमाओने पाम्या अहो! सहोदरपणुं छतां पण विष अने अमृतनी जेम ए बन्ने वच्चे मोटुं अंतर पड्युं पछी दुर्दैवे करेला पंक्ति भेदे करीने चित्तना अत्यंत उद्वेगपणाने प्राप्त थयेलो देवदत्त अत्यंत दुःखह एवा केवळ दुःखनेज चित्तमां धारण करवा लाग्यो.

एकदा कोइ ज्ञानीने तेना पिताए तेनो प्राग्भव पूछ्यो, त्यारे ज्ञानीए यथार्थ पूर्व भव कह्यो ते सांभळीने देवदत्त पोताना मनमां अत्यंत पश्चात्ताप करवा लाग्यो. पछी सुकृत करवामां ज एक चित्त-वाळो थइने तेणे गुरुने कह्युं के–"हे भगवन्! मारा दुष्कर्मोनो क्षय

शी रीते थाय ? ते कहो. " ज्ञानीए जवाब आप्यो के–" हे देवदत्त ! उपधानने वहन करनारा तथा नमस्कारादिक सूत्रोने भणनाराओनी अश नपानथी विनय, आवर्जन, भोजन अने विश्रामणा विगेरेवडे सर्वप्रकारे भक्ति करीने तथा महर्षिनी जेम सम्यग् (उपराउपर) उपवास, आं बिल विगेरे दुष्कर [illegible] करीने तारा शरीरनुं शोषण करीश, तोज आ दुष्कर्मनो क्षय थशे अन्यथा थशे नहीं ते विषे परमर्षिनुं वचन छे के–" हे जीव ! पूर्वे जन्ममां करेला पापो तथा खराब (अविधिए) आचरण करेली क्रियाओ के जेमनी आलोचना करी नथी तेनो वेदवाथीज (भोगववाथीज) क्षय थाय छे, भोगव्याविना तेनो क्षय थतो नथी परंतु तपस्यावडे ते कर्मनो क्षय थइ शके छे " वळी कह्युं छे के- " नियाणाविना विधिपूर्वक करेली तपस्यानी शी प्रशंसा करीए ? के- जे तपस्यावडे निकाचित कर्मोनो पण क्षय थाय छे. " आ प्रमाणे गुरुना मुखथी सांभळीने ते महेभ्यपुत्रे बाल्यावस्था होवा छतां तथा सर्वप्रकारे सुखी छतां गुरुमहाराजना कह्या प्रमाणे विनयादिक विशेष प्रकारे घणां वर्ष सुधी उत्साहसहित कर्या तेथी घणा घुण जातिना जीवडाना समूहने योग्य कठिन लाकडानी जेम निबिड (गाढ) एवुं पण तेनुं ज्ञानावरणीय कर्म धीमे धीमे ओछुं थयुं. त्यारपछी महानिशीथमां कहेला मुख्य विधिवडे सावधान मनथी उपधान वहन करीने ते नमस्कारादिक सूत्रनो अभ्यास करवा लाग्यो. तेम करवाथी पूर्वभवना दुष्कर्मनो सर्वथा क्षय थयो एटले समग्र शास्त्रनो पारगामी थइ ते पण गुरुवचनी उपमाने पाम्यो ते जोइने श्रद्धा उत्पन्न थवाथी माये

सर्वे श्रावको उपधान विधिनु आराधन करवा लाग्या. पछी परम श्रावक एवा ते बन्ने वायगोप एवी रीते ज्ञाननी आराधना करी के तेज भवमां द्रव्य दीक्षा अंगीकार कर्या विना पण केवळज्ञान पामीने सिद्धि सौध उपर आरुढ थया, अर्थात् मोक्षे गया

आ प्रमाणे उपधाननी आराधना तथा अनाराधनानुं फळ सांभळीने (जाणीने) प्रमादनो त्याग करी तेनु आराधन करवामा सम्यक् प्रकारे उद्यम करवो

॥ इति श्राद्धोपधान विषये ज्ञातम् ॥

॥ इति व्याख्यातश्चतुर्थ उपधानाचारः ॥

पांचमा अनिन्हवाचार विषे.

श्रुतनो अभ्यास करीने पण गुरु तथा श्रुतादिकनो निन्हव (अपलाप) करवो नहीं जेनी पासे अभ्यास कर्यो होय, ते [गुरु] जो अप्रसिद्ध होय, तथा जाति अने श्रुतादिकथी रहित होय, तोपण तेने गुरु तरीकेज कहेवा. परतु पोतानी गौरवताने माटे बीजा कोइ युगप्रधानादिक प्रसिद्धने गुरु तरीके कहेवा नहीं. तेमज जेटलु श्रुत भण्या होइए तेटलुज कहेवुं, परतु न्यूनाधिक कहेवु नहीं केमके तेथी मृषा भाषण, चित्तनु मलीनपणु, ज्ञानातिचार विगेरे दोष प्राप्त थाय छे. गुरु विगेरेनो निन्हव करवामां मोटु पाप छे, ते विषे लोकमां पण कह्यु छे के,—

एकाक्षर प्रदातार यो गुरु नैव मन्यते ।
श्वानयोनि शतं गत्वा चांडालेष्वपि जायते ॥१॥

अर्थ.—"जे माणस एक अक्षर पण आपनार गुरुने मानतो नथी, ते सो वार कूतरानी योनिमां उत्पन्न थइने चंडाळने विषे जन्मे छे"

गुरुनो अपलाप करवा उपर सन्यासीनी कथा

कोइ एक विद्यावान हजाम विद्याना बळथी अज्ञानी कोथळीने आकाशमां निराधार राखतो हतो. ते जोइने एक परिव्राजके ते विद्या लेवा माटे तेनी घणी सेवा करी,तेथी प्रसन्न थइने ते हजामे तेने विद्या आपी पछी ते सन्यासी पेताना दंड कमंडलुने आकाशमां निराधार राखवाथी स्थाने स्थाने लोकोथी पुजावा लाग्यो एक दिवस राजाए सन्यासीने भोजननु आमंत्रण आपी पोताने घेर बोलावीने पुछ्यु के-" तमारा गुरु कोण छे ? " सन्यासीए कह्यु के-" मारा गुरु निरंतर हिमालयमा रहीने फळाहार करनार महा तपस्वी ऋषि छे" आ प्रमाणे बोलताज तेनो त्रिदंड के जे आकाशमां निराधार हतो, ते उंचे उछाळेली लाकडीनी जेम आकाशथी खडखड शब्द करतो पृथ्वी पर पडयो तथा लोकमा ते हांसी,अपमान विगेरेने पाम्यो. माटे कोइए पण कोइ प्रकारे गुरुनो निन्हव करवो नहीं. तेमां पण घणा धर्मार्थी मनुष्ये तो बिलकुल निन्हव करवो नहीं.

॥ इति पञ्चमो अनिन्हवाचार ॥

छट्ठो, सातमो ने आठमो ज्ञानाचार.

[व्यजन, अर्थ अने ते बन्ने]

वळी श्रुत ज्ञानना अर्थात् व्यजन (अक्षर) अने अर्थ तथा ते बन्नेवडे शुद्ध एवा सूत्रनो अभ्यास करवो तेमां व्यजन एटले अक्षर अक्षरने अन्यथा करवामां तथा न्यूनाधिक करवामां अशुद्ध थवाने लीधे अनेक महादोषो, महा आशातनाओ अने सर्वज्ञनी आज्ञानो भग विगेरे दोषो प्राप्त थायछे.केमके व्यजननो भेद(फेरफार)थवाथी अर्थनो भेद थायछे, अर्थनो भेद थवाथी क्रियानो भेद थाय छे, क्रियानो भेद थवाथी मोक्षनो अभाव थाय छे, अने मोक्षनो अभाव थवाथी साधु तथा श्रावकने धर्मनु आराधन, तपस्या, उपसर्गनु सहन करवु, ए विगेरे कष्टसाध्य क्रियाओ पण निरर्थक थाय छे तेमां सूत्रनुं अन्यथापणु करवु एटले प्राकृतने बदले सस्कृत करवु ते, जेम " धर्मो मगळमुत्कृष्ट (धर्म उत्कृष्ट मंगळरुप छे) ?" अथवा तेना पदोने उलट सुलट बोलवा, जेमके " पुण्णोकल्लाणमुक्कोस २ अथवा सूत्रमांना एक अक्षरने बदले बीजो अक्षर करवो, जेमके " धम्मो " ए धकारने स्थाने ककार विगेरे कोइ पण अक्षर बोलवो. ४. अथवा वर्णोने उलटा (छेलेथी) बोलवा, जेमके "देवावि" ने बदले "विवादे" एम बोलवु ५. एज प्रमाणे अर्थने तथा व्यजन अने अर्थ ए बन्नेने अन्यथा करवामां तथा न्यूनाधिक करवामां दोषो जाणी लेवा. तेमां व्यंजनने अन्यथा करवामां "चैत्यवंदनादिक सूत्रो प्राकृत भाषामां छे, तेने हु संस्कृत भाषा-

स्याच्छैशवे मातृमुखस्तारुण्ये तरुणीमुखः ।
वार्धके तु पुत्रमुखो मूढो नात्ममुखः क्वचित् ॥२॥

अर्थः—मनुष्य बाल्यावस्थामां माताने आधीन होय छे, युवावस्थामां स्त्रीने आधीन होय छे, अने वृद्धावस्थामा पुत्रने आधीन होय छे, परतु मूढ प्राणी कोइपण वखत आत्माने आधीन एटले आत्म परायण होतो नथी. २ ”

आ प्रमाणे देशना सांभळीने ते वृद्ध ब्राह्मणे आचार्य पासे वैराग्यथी दीक्षा लीधी. पछी विहारना अनुक्रमे ते गुरुनी साथे भृगुपुरमां (भरुचमां) आव्या. ते मुकुंद मुनि रात्रीए पण उंच स्वरे भणता हता, तेथी बीजा साधुओनी निद्रानो भग थवाथी तेमने दुभाता जाणीने गुरुए तेने निषेध कर्यो के—“हे वत्स ! रात्रीए नवकारवाळी गण. मने उंचे स्वरे भणवाथी हिंसक प्राणीओ जागृत थाय, अने तेथी अनर्थ दड पण प्राप्त थाय. ” आ प्रमाणे कह्या छतां पण ते वृद्ध मुनि उंचे स्वरेज घोषणा करता हता त्यारे कोइ साधुए तेनो उपहास कर्यो के—“ शु आ आटली वयवाळा (वृद्ध) मुनि भणीने मुशळ (सांबेला) ने प्रफुल्लित करशे ?” ते सांभळीने वृद्ध मुनि खेद पामीने तरतज विद्याने माटे “ नालिकेर वसति ” नामना चैत्यमा रहेली महा प्रभाववाळी सरस्वती देवीनी आराधना करवा लाग्या एकवीश उपवासे देवी तुष्टमान थइ, अने प्रत्यक्ष दर्शन आपीने बोली के- “हे मुनि ! तमने सर्व विद्या सिद्ध थाओ ” पछी ते मुनि कोइने प्रेरथी मुशळ मागी लावीने चतुष्पथ (चौटा) मा आव्या पछी

मुशळने मासुक जळवडे सिंचीने—छांटीने तत्काळ नव पल्लवित करी पुष्पवाळु कर्युं अने बोल्या के—" जे कहेता होय के—आ मुशळने प्रफुल्लित करशे ! तेनु निराकरण करवा माटे पत्र अने पुष्पवाळु करेलु आ मुशळ हु अहीं स्थापन करु छु; हवे तमे जळकागडानु शींगडु इंद्र धनुष जेवडु थयु, अग्नि शीतळ थयो, अने वायु कंपरहित थयो इत्यादि जेने जेम रुचे तेम बोलो आ हु वृद्धपणामां वादी थयो छु,मारी साथे जेने वाद करवो होय ते आवो " पछी तेणे एवा वादविवाद मोटा मोटा पंडितो साथे कर्या के जेथी गरुडनु नाम सांभळीने सर्पोनी जेम ते वृद्धवादीनु नाम सांभळीनेज सर्व वादीओ नासी जवा लाग्या ते मुनि वृद्धवादीना नामथी प्रसिद्ध थया तेमने गुरुए पोताने स्थाने स्थापन कर्या.

आ समये अवंतिनगरीमां "विक्रम" राजा राज्य करतो हतो ते सात्विकने विषे श्रेष्ठ अने परोपकारने विषे एकनिष्ठावाळो हतो ते राजाने ये सुवर्णपुरुष सिद्ध थया हता, तेथी तेणे पृथ्वीना सर्व मनुष्योने ऋण रहित करी पोतानो संवत प्रवर्तान्यो हतो तेणे पोताना कोश [खजाना]ना अध्यक्षने आ प्रमाणे आज्ञा आपी हती के " हे कोशाधिपति ! जे कोइ दीन मनुष्यपर मारी दृष्टि पडे, तेने तारे एक हजार सोनामहोरो आपवी, जेनी साथे हु कांइ पण भाषण करु तेने दश हजार आपवी,जेनी वाणी सांभळीने हु हसु तेने एक लाख महोरो आपवी, अने जेनापर हु प्रसन्न थाउ तेने एक करोड महोरो आपवी ए प्रमाणे सर्वदा मारी आज्ञा छे " आम विक्रम राजाए

कथाविना पण आपवानी स्थिति ठरावी राखी हती. एकदा ते राजाए पीवा माटे पाणी माग्युं. ते वखते उचित बोलनार एक भाट बोल्यो के-" हे राजा ! तमारा मुखकमळमां सरस्वती रहेली छे, तमारो ओष्ठ सर्वदा [1]शोण छे, काकुत्स्थ (रामचंद्र) ना पराक्रमनी स्मृति करावावामा चतुर एवो तमारो दक्षिण हाथ [2]समुद्र छे, आ तमारी पासे रहेनारी [3]वाहिनीओ एक क्षणवार पण तमारा समीप पणाने मूकती नथी, तथा तमारे स्वच्छ (निर्मळ) [4]मानस छे, तो पण तमने पाणी पीवानी केम अभिलाषा थइ ? " आ प्रमाणे सांभळीने राजाए आठ करोड सोनामहोरो, त्राणु तुला (मण) मोती, मदना गंधमां लुब्ध थयेला भमराओथी उद्धत थयेला पचास हाथीओ, लावण्यतानी वृद्धिथी दृष्टिना विस्तारवाळी एकसो वारांगनाओ (स्त्रीओ), आटलुं दान के जे पांडय राजाए विक्रम राजाने दंडमां आप्युं हतुं ते सर्व ते भाटने आपी दीधुं आ विगेरे अनेक ते विक्रम राजाना दानकृत्यो प्रसिद्ध छे.

ते विक्रम राजाना राज्यमां मानवुं पात्र जने कात्यायन गोत्रनो अलंकार " देवर्षि " नामे ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने " देवश्री " नामनी पत्नी हती. तेमने " सिद्धसेन " नामनो पुत्र हतो ते बुद्धिनो भंडार होवाथी आखा जगतने तृणसमान गणतो हतो केमके मिथ्यात्वीओने गर्व प्रकृतिथीज सिद्ध होय छे. कह्युं छे के—

---

१ शोण नामनो द्रह-ओष्ठना पक्षे रातो. २ समुद्र पटले दरियो-हाथ पक्षे मुद्रा-वींटी सहित. ३ नदी-बीजा पक्षे सेना ४ *मानस नामनुं सरोवर-बीजा पक्षे मन*

वृश्चिको विषमात्रेणाप्यूर्ध्वं वहति कंटकम् ।
विषभारसहस्रेऽपि वासुकिर्नैव गर्वितः ॥ १ ॥

अर्थ—वींछी अल्प विषे करीने पण पोताना कांटाने उंचोज राखे छे. अने वासुकी नाग हजार भार विषने धारण करे छे, तो पण गर्विष्ट थतो नथी. ?

ते सिद्धसेने विद्याना गर्वथी " जे मने वादमां जीते तेनो हुं शिष्य थाउं " एवी प्रतिज्ञा करी हती तेणे एकदा वृद्धवादीनी कीर्त्ति सांभळी, ते नहीं सहन थवाथी सुखासनमां बेसी तेनी सन्मुख चाल्यो. ते समये वृद्धवादीए भृगुकच्छथी विहार कर्यो हतो, तेथी तेओ मार्गमांज मळ्या. परस्पर संभाषण थवाथी एक बीजानी ओळखाण पडी. पछी सिद्धसेने कह्यु के—" वाद आपो " सूरि बोल्या के—" भले परंतु अत्र भाग्ययोगे मळी शके तेवा सभ्यो (मध्यस्थो) नथी तेमना विना जय पराजयनी व्यवस्था शी रीते थाय ? " ते सांभळीने वादमां उत्कंठित थयेला सिद्धसेने कह्यु के—"आ गोवाळोज आपणा सभ्यो थाओ." गुरुए तेनु वचन स्वीकार्यु. अने गोवाळोने पासे बोलाव्या. पछी गुरुए तेने कह्यु के—"प्रथम तमे स्वेच्छाए वाद करो" त्यारे ते सिद्धसेने हर्ष पामीने उंचा स्वरथी चिरकाल सुधी न्यायशास्त्र अने व्याकरण शास्त्र विगेरेना विषयपर संस्कृत भाषामां उपरा उपरी उपन्यास (कोटी) कर्यो. अनुक्रमे तेनो वाद पूरो थयो, त्यारे गोवाळ बोल्या के—" आ तो काइ पण जाणतो होय एम लागतुं नथी केवळ उंचे स्वरे पोकार करीने कठोर वाणीवडे कर्णने पीडा

करे छे माटे हे वृद्ध ! तमे काइक बोलो." त्यारे बन्ने प्रकारे[1] समयने जाणनारा वृद्धवादी सीदणी जातिना उड्वडे नृत्यने निमित्ते उंचा ताल देवापूर्वक बोल्या के–

नवि मारिए नवि चोरिए, परदारागमण निवारिए ।
थोवा थोवं दाइए, सग्गि टगिटगि जाइए ॥ १ ॥

अर्थ––कोइनी हिंसा करीए नहीं, कोइनु काइ पण चोरीए नहीं, परस्त्रीगमन करीए नहीं अने थोडामाथी पण थोडु दान दइए, एटले धीमे धीमे स्वर्गे जइए.

कालो कंबल अणुणी चट्टु, छासे भरिउं दइआणि घट्टु ।
अइ वड चाडिउ नीलइ झाडि, अवर कि सरगहासिग निलाडि ॥ २ ॥

भावार्थ––काळी कामळी अने छाशमा राधेली कणकीनी रावडी लाकडाना चाटवावडे जो कोइ मुनिने भावथी अपाय तो तेथी सर्व पापनो त्याग करीने उत्तम पुण्यवान् थवाय छे. ते विना बीजु स्वर्गलक्ष्मीना ललाटरूप शु छे ? काइज नथी. २

आ प्रमाणे सूरि बोलता हता ते वखते तेना रागने अनुसारे नृत्य करता गोवाळो प्रसन्न थइने मोटेथी बोल्या के–" आ वृद्ध जीत्या, आ वृद्ध जीत्या. आ तो साक्षात् सर्वज्ञ छे " ते साभळीने सत्य प्रतिज्ञावाळा सिद्धसेने गर्व तजीने कह्यु के–" हे पूज्य ! मने

१ समय एटले सिद्धान्त अने समय एटले वखत (अवसर)

दीक्षा आपो, हु आपनो शिष्य छु. केमके वादमा सभ्योनी समक्ष मने आपे जीत्यो छे " ते साभळीने बहुमानथी गुरु बोल्या के–" आ वादमा जय शेनो ? माटे आपणे मनोहर भृगुपुरमां घणा प्रमाणिक पुरुषोथी भरपुर अने प्रभाववाळी राजसभामा जइए त्यांज आपणो वाद हो. " सिद्धसेने कहु के–" हुं समयनो अजाण छु आप समयने जाणनार छो, अने जे समयने जाणे छे तेज सर्वज्ञ छे, माटे आपज जीत्या मने जलदी दीक्षा आपो, अने प्रशम रसथी भरेला पोताना (आपना) सिद्धांत मने भणावो. " आ प्रकारे बोलता ते वादीने वृद्धवादीए तेज ठेकाणे दीक्षा आपी

आ वृत्तांत जाणीने भृगुपुरना राजाए ते स्थाने " तालारस " नामनु मोटु गाम वसाव्यु, अने त्या जनना चित्तने आल्हाद करनारु श्री ऋषभस्वामीनु मोटु चैत्य कराव्यु. ते चैत्यमा श्री वृद्धवादीए प्रतिष्ठा करी जैन मतनी ते वखते मोटी उन्नति थइ सिद्धसेननु नाम दीक्षा समये " कुमुदचद्र " हतु, अने सूरिपद समये " सिद्धसेनदिवाकर " एवु नाम प्रसिद्ध थयु अपर अपर पूर्वधरोथी पूर्वमां रहेला श्रुतना अभ्यासवडे एवां नामो आपवामां आवे छे कहु छे के–" वादी, क्षमाश्रमण, दिवाकर अने वाचक ए सर्व शब्दो एक अर्थवाळा छे पूर्वगत सूत्रना अभ्यासथी ए शब्दो प्रवर्ते छे " स्वामी अने वाचक विगेरे शब्दोनी जेम दिवाकर ए पण सूरिनुज पर्यायी नाम छे.

सिद्धसेनदिवाकर जैनमतनो उद्योत करवाथी पोताना नामने सार्थक करता पृथ्वीपर विहार करवा लाग्या. अनुक्रमे तेओ उज्जयिनी

समीपे आव्या. एटले त्याना सकळ संघे सन्मुख आवीने मोटा उत्सव-पूर्वक तेमने नगरप्रवेश कराव्यो. मार्गमां चालतां वंदिजनो सर्वज्ञपुत्रना नामथी तेमनी विरुदावली बोलवा लाग्या ते समये विक्रम राजा हाथीपर वेसी पोताना राजद्वारमांथी नीकळेला चौटामां सूरिने सामा मळ्या. राजाए " आ सूरि सर्वज्ञपुत्र छे के नहीं ? " तेनी परीक्षा करवा माटे तेमने मनथीज वंदना करी, पण मस्तक नमाव्युं नहीं, तथा वचनथी पण काइ बोल्या नहीं. ते जाणीने समीपे आवी पहोंचेला सूरिए ते राजाने 'धर्मलाभ' एम मोटा शब्दवडे आशीर्वाद आप्यो. ते वखते राजाए कह्यु के-" हे सूरीश्वर ! अमने नमस्कार कर्या विना आपे धर्मलाभ केम आप्यो ? शुं आ धर्मलाभ नम्या विना पण सहेजे मळी शके तेवो (सोंघो) छे ? " त्यारे सूरि बोल्या के-" हे राजा ! आ आशीर्वाद कोटी चिंतामणि रत्नोवडे पण दुर्लभ छे परंतु अमारी परीक्षा करवा माटे तमे मनथी वंदना करी, तेथी तमने धर्मलाभ आप्यो छे. " ते सांभळीने राजाए प्रसन्न थइ हस्तिपरथी नीचे उतरी सूरिने वंदना करी, अने एक करोड सोनामहोरो मंगावी तेमने भेट करी गुरुए निःसंग होवाथी ग्रहण करी नहीं. तेम राजाए पण दान तरीके कल्पेली होवाथी पाछी राखी नहीं तेथी संघना आगेवानोए जीर्णोद्धारादिक शुभ कार्योमां तेनो उपयोग कर्यो. राजाना दाननी वहीमां (चोपडामां) आ प्रमाणे लखाणु के-"दूरथी उंचा हाथ करीने धर्मलाभनी आशीष आपता सिद्धसेन सूरिने राजाए करोड सोनामहोरो आपी. "

पछी सूरि महाराज विहारना क्रमे विचित्र प्रकारना शिखरवाळा चित्रकूट (चितोड)मां आव्या त्यां एक जुना चैत्यमां एक मोटो स्तंभ जोइने सूरिए एक पुरुषने पूछ्युं के-"आ स्तंभ शेनो छे ? अने तेमां शु छे ?" त्यारे ते पुरुष बोल्यो के-"पूर्वना आचार्योए आ स्तंभमां रहस्य (गुप्त) विद्यानां पुस्तको राखेलां छे, तथा आ स्तंभ ते ते प्रकारनी औषधीओना योगथी जाणे वज्रनो बनाव्यो होय तेम अग्नि जळ विगेरेथी पण अभेद्य छे" ते सांभळीने निपुण एवा ते सूरिए ते स्तंभनो गंध लइने ते ते औषधिनो प्रतिकार करनारी सामी औषधिओ शोधीने तेनो रस ते स्तंभने लगाड्यो, एटले ते स्तंभ पाका चीभडानी जेम विकास पाम्यो (फाट्यो) पछी तेमाथी एक पुस्तक छोडीने तेनु प्रथम पानु सूरि वाचवा लाग्या, तेमां पहेलीज लीटिए वांचतां बे महा विद्याओ मळी आवी पहेली सर्षप विद्या अने बीजी चूर्णना योगथी सुवर्ण करवानी विद्या पहेली सर्षप विद्यानो एवो प्रभाव हतो के कार्य आवे छते जेटला सर्षवना दाणा मंत्रीने जळाशयमां नांखे तेटला घोडेस्वारो बेंतालीश जातिना शस्त्रोसहित तेमांथी नीकळी परसैन्यनो नाश करीने पाछा अदृश्य थइ जाय, अने बीजी विद्या एवी हती के कोइ पण धातुनी साथे तेमा बतावेली वस्तुना चूर्णनो योग करवाथी विना यत्ने जातिवंत सुवर्ण उत्पन्न थाय. आ बे विद्याने बराबर ग्रहण करीने सूरि जेवामा आगळ वांचवा जाय छे, तेवामां शासनदेवताए ने पुस्तक अने ते पानु तेनी पासेथी लइ लीधु, तथा पुस्तकनो स्तंभ पण प्रथमनी जेवोज मजबुत बंध थइ गयो.

ते वखते आकाशवाणी थइ के–" आवा प्रकारनां पूर्वमां रहेलां रह स्योने तमे लायक नथी माटे चपळता (प्रयत्न) करशो नहीं, अन्यथा जीवितनो संशय थशे. " ते सांभळीने सूरि भयने लीधे तेथी विरम्या.

त्यार पछी सूरि विहारना क्रमे अपूर्व एवा पूर्व देशनी पृथ्वी ना नुपुरसमान " कर्मापुर " नामना नगरमा गया. त्या "देवपाळ" नामे राजा राज्य करतो हतो तेने सूरिए अमृततुल्य सुदर देशना- वडे प्रतिबोध पमाडीने परम श्रावक बनाव्यो. एकदा सीमाडाना राजाओ भेळा थइने तेनु राज्य लेवा आव्या, ते जोइने चित्तमां भय पामेला देवपाळ राजाए गुरु पासे आवी सर्व वृत्तात निवेदन कर्युं ते साभळी सूरिए विचार्युं के–" आ राजा हजु हमणाज धर्म पाम्यो छे, तेना पासे सैन्य तथा द्रव्य घणु अल्प छे, तथा अत्यारे अत्यत दीनताने पाम्यो छे, तेथी आने धर्ममा स्थिर करवा माटे सहाय करवी योग्य छे " एम विचारीने कार्यना जाण एवा सूरिए सुवर्णसिद्धिना योगथी अगण्य सुवर्ण बनावी आपी, सर्षप विद्याथी घोडेस्वारो उत्पन्न करी दइ, शत्रुओने त्रास पमाडयो, तेथी अत्यत प्रसन्न थइने देवपाळ राजाए शत्रुओनु सर्वस्व लूटी लइ पोताना जयनो डको वगडाव्यो. " अहो ! महात्मानी कृपानु फळ नि सीम छे." त्यार पछी ते राजा सूरिनो अनन्य भक्त थयो, अने तेमने घणा आग्रहपूर्वक चिरकाळ सुधी पोताना नगरमाज राख्या. त्यां सूरि महाराज राजा विगेरेना आग्रहथी हमेशां सुखासनमां बेसी

नाना प्रकारनी बिरदावली बोलनारा बंदिजनोवडे स्तुति कराता राजद्वारमां जवा आववा लाग्या अने एम थवाथी परिवारसहित ते सूरि राजानो सत्कार अने अहंकार विगेरेवडे क्रियामां शिथिल थया. कयुं छे के—

तांबूल देहसत्कारः स्त्रीकथेन्द्रियपोषणम् ।
नृपसेवा दिवा निद्रा यतीनां पतनानि षट् ॥१॥

अर्थ—तांबुलनुं भक्षण, देहनो शणगार, स्त्रीनी कथा, इंद्रियोनी पुष्टि, राजानी सेवा (राजानो परिचय) अने दिवसनी निद्रा, ए छ मुनिओने पतन पामवाना स्थानो छे. १.

वळी कयुं छे के—" जे गुरु शिथिल थइने सुए छे तेना शिष्यो पण सुइ रहे छे. तेथी करीने मोक्षना मार्ग बंध थाय छे, अने श्रुतनी हीलना थाय छे. " केटलेक काळे वृद्धवादीए आ वात सांभळी त्यारे ते अत्यंत खेद पाम्या. एटले गीतार्थ साधुओने गच्छ भळावी सिद्धसेन सूरिने प्रतिबोध करवा माटे गुप्त रीते वेष धारण करीने त्यां आव्या. अहीं ते वखते सुखासनमां बेसीने श्री सिद्धसेन राजसभामां जता हता. तेओ राजाने मान्य होवाथी नाना प्रकारनी कळा जाणनारा अनेक मनुष्यो पातपोतानी भक्ति बताववा माटे ते सुखासनने थोडी थोडीवार पोतानो खभो देता हता. ते जोइने वृद्धवादीए पण पोतानो खभो आप्यो. ते वखते गर्वथी उद्धत मनवाळा सिद्धसेन आ प्रमाणे अर्धो श्लोक बोल्या के—

भूरिभारभराक्रान्त स्कन्धोऽयं तव बाधति ।

" घणा भारना समूहथी दबायेलो आ मारो खभो बाधा (पीडा) पामे छे "

ते साभळीने वृद्धवादी बोल्या–

न तथा बाधते स्कन्धो बाधतिर्बाधते यथा ॥१॥

" जेवो बाधति[1] ए प्रयोग बाधा करे छे, तेवो आ स्कंध बाधा पामतो नथी "

आ प्रमाणे सांभळीने शंका पामेला सिद्धसेने विचार्यु के–"मारा गुरु विना मारा वचनमा भूल कोण काढे ? माटे जरुर मारा गुरुज होवा जोइए" एम विचारीने तरतज ते सुखासनमाथी नीचे उतरी गुरुने सारी रीते ओळखी अत्यंत लज्जा आववाथी ते गुरुना चरण कमळमा पड्या (नम्या). ते वखते गुरुए पण तेने प्रतिबोध करवा माटे कह्यु के–" हे वत्स ! आ गाथानी व्याख्या कर.

"अणफुल्लिअ फुल्ल म तोडहु, मन आरामा मोडहु ।
मणकुसुमेहि अच्चि निरंजणु, हिडह कांइ वणेण वणु ॥१॥

गुरुनी अवज्ञा करवाथी बुद्धिनी जडता प्राप्त थवाने लीधे सिद्धसेन ते गाथानो अर्थ बराबर जाणी शक्या नहीं, तेथी तेणे कह्यु के–

---

१ तात्पर्य ए छे के–बाधति ए अशुद्ध रूप छे, ते ठेकाणे बाधते रूप थवु जोइए तथा वृद्धवादीए कह्यु के तमे बाधति रूप बोल्या ते जेवु पीडा करे छे तेवो मारो स्कंध पीडा पामतो नथी. अर्थात् तमे अशुद्ध बोल्या तेज वधारे पीडाकारी छे.

" हे गुरु ! आपज आ गाथानी व्याख्या करो. " त्यारे दृद्धवादीए तेनी व्याख्या आ प्रमाणे करी

"अल्प आयुष्यरूप जेने पुष्प छे ते 'अणुपुप्फिका' एटले मनुष्य शरीर, तेना पुष्पो एटले आयुष्यना खंडो, तेने तमे तोडो नहीं तथा राजपूजाथी थयेला गर्वादिरूप आंकडीवडे आरामोने एटले आत्माने आधीन अने सतापनु हरण करनारा यम, नियम विगेरे रूप बगीचाने भांगो नहीं तथा मन कुसुमोवडे एटले क्षमा, मार्दव, आर्जव अने संतोष विगेरे रूप पुष्पोवडे, निरंजननी एटले अहंकारना स्थानरूप जातिमदादि अंजन जेना नाश पाम्या छे एवा सिद्धिपदने पामेला निरंजन देवनी पूजा करो अर्थात् ध्यान करो मोहादिक दुःखोना समूहथी भयंकर एवा संसाररूपी एक वनथी बीजा वनमां शामाटे परिभ्रमण करो छो ? "

बीजी व्याख्या--'अणु' एटले अल्प धान्य, तेना 'पुप्फो' एटले फूलो अर्थात् अल्प विषयवालु होवाथी 'अणुपुप्फी' एटले मनुष्यशरीर तेनां पुष्पोने एटले पांच महाव्रतो तथा अढार हजार शीलांगरूप पुष्पोने न तोडो तेथी मन आरामनो एटले चित्तना विकल्प समूहनो नाश करो तथा निरंजन एटले सिद्धिपदने पामेला वीतराग देवनी मन पुष्पोवडे पूजा करो अथवा म ने न बे निषेधवाची होवाथी गृहस्थोने उचित एवी देवपूजादिकने विषे षट् जीव निकायनी विराधना थाय छे माटे तेमां उद्यम न करो अर्थात् हे मुनि ! तमे कुसुमवडे प्रभुनी पूजा न करो (मात्र मनवडे करो), तथा मनवडे--

शब्दवडे (अर्थात् कीर्त्तिने माटे) चेतनारहित होवाथी तथा भ्रमनो हेतु होवाथी मिथ्यात्वशास्त्रना समूहरूप वनमां (अरण्यमां) केम भ्रमण करो छो ? मिथ्यावादनो त्याग करी सत्य एवा तीर्थकरादिष्ट–तीर्थकरभाषित सिद्धांतने विषे आदर करो.

त्रीजो अर्थ–" अण् " ए धातुनो अर्थ–" शब्द करवो " थाय छे, तेथी 'अणु' एटले शब्द ते शब्दरूप जेना पुष्पो होय ते 'अणुपुष्पा' एटले कीर्त्ति कहेवाय छे. ते कीर्त्तिना पुष्पोने एटले सद्बोधनां वचनोने न तोडो, तथा मननी आरा एटले विधवाना गुणने लीधे अध्यात्म संबंधी उपदेशो तेनु मोटन न करो, एटले खराब व्याख्या करवाथी तेनो नाश न करो. तथा निरजननी एटले रागादिक लेपरहित एवा वीतराग देवनी सद्गुरुना उपदेशरूप सुगंधी अने शीतळ एवा पुष्पोवडे पूजा करो तथा वनना एटले संसारना इन एटले स्वामी जे परम सुखी होवाथी तीर्थकर, तेना वनमा एटले शब्दरूप सिद्धांतमा केम हींडो छो ? शा माटे भ्रांति पामो छो ? केमके ते सिद्धात सत्य छे, तेथी तेमाज प्रीति राखो

चोथो अर्थ—प्राकृत भाषामा अनेक अर्थ थवाथी एवो पण अर्थ थाय छे के–जेने फळो आव्या नथी एवां पुष्पोने तोडो नहीं एटले के योगरूपी कल्पवृक्षनु मूळ यम नियम छे, ध्यानरूप तेनु मकांड छे, समतारूप स्कंध छे, कवित्व, वक्तृत्व, यश, प्रताप, मारण, स्तंभन, उच्चाटन अने वशीकरणादिक सामर्थ्यरूपी पुष्पो छे, तथा केवळज्ञानरूपी फळ छे हजु मात्र योगरूप कल्पवृक्षनां पुष्पोज आवेलां छे, ते पुष्पो आगळपर केवळज्ञानरूप फळने उत्पन्न करवानां छे

माटे हजु फळ आव्या पहेलां ते पुष्पोने तोडो नहीं आरामरूपी पाच महाव्रतोने अथवा पाठांतरे रोप एटले पाच महाव्रतोरूप रोपाने भांगो नहीं मनरुप पुष्पोवडे निरजन जिनेश्वर देवनी पूजा करो, तथा एक वनथी बीजा वनमा केम भ्रमण करो छो ? एटले के राजसेवादिक विरस फळवाळा कष्टोने शा माटे अगीकार करो छो ?

आ प्रमाणे गुरुए करेली व्याख्या सांभळीने सिद्धसेनने अत्यत पश्चाताप थयो, तेनु मन अ यत सवेगने पाम्यु, तेथी पोताना प्रमाद नी आलोयण लइने राजानी रजा लइ तेणे गुरुनी साथे विहार कर्यो.

अनुक्रमे वृद्धवादी स्वर्गे गया पछी एकदा सिद्धातनी प्राकृत भापा होवाथी अन्य दर्शनीओ हासी करवा लाग्या, ते सांभळीने लज्जा पामेला सिद्धसेने ब्राह्मण जातिने लीधे, बाल्यावस्थाथीज संस्कृतना अभ्यासी होवाने लीधे तथा कर्मना दोपने लीधे काइक गर्विष्ठ थइने सघप्रत्ये कह्यु के-" जो सघनी समति होय तो हु सर्वे सिद्धांतोने सस्कृत भापामा कर के जेथी लोकमां उपहास न थाय " आ प्रमाणे दोपयुक्त वाणी सांभळीने सघे कह्यु के-" अरे ! आवु अयोग्य वचन केम बोलो छो ? शु जिनेश्वरो तथा गणधरो विगेरे सस्कृत भापामां सिद्धांतो रचवाने समर्थ नहोता ? हताज, परतु बालादिकना अनुग्रहने माटे अर्ध मागधीरूप प्राकृत भापामां तेमणे सिद्धातोनी रचना करेली छे कह्यु छे के-

बालस्त्रीमन्दमूर्खाणा नृणा चारित्रकांक्षिणाम् ।
अनुग्रहार्थं तत्त्वज्ञै सिद्धान्त. प्राकृत कृत ॥१॥

अर्थ---चारित्रनी इच्छावाळा बाळक, स्त्री, मंद बुद्धिवाळा अने मूर्ख माणसोना अनुग्रहने माटे तत्त्वज्ञ पुरुषोए सिद्धांतने प्राकृतमां रच्या छे. १

बुद्धिमान मुनिवरोने माटे चौद पूर्वो संस्कृतमाज रचेला समळाय छे, माटे हे सूरि महाराज ! तमे आवा वचनमात्रथी पण जिनेश्वरादिकनी अत्यंत आशातना करी छे, तेने माटे जे प्रायश्चित्त शास्त्रमा होय ते विचारीने जलदी अंगीकार करो." आ प्रमाणे संघनी आज्ञा साभळीने सूरिने सारी रीते पोतानी भूल जणायाथी अत्यत पश्चात्ताप थयो, अने ते बोल्या के—" विना विचारे बोलनार अने जिनादिकनी आशातना करनार एवा मने धिक्कार छे आ दोषने टाळवा माटे मने [१]पारांचिक प्रायश्चित्त प्राप्त थाय छे. जो के हालना समयमा तवा प्रकारना संहनन आदि बळना अभावने लीधे आ पारांचिक प्रायश्चित्तनो व्युच्छेद थयो छे, तो पण बार वर्ष सुधी आ पारांचिक प्रायश्चित्तनु हुं आचरण करीश, तेमां रजोहरण, मुखवस्त्रिका विगेरे जैन लिंगने गुप्त राखी, अवधूतनो वेष धारण करी, मौनने अंगीकार करी, दुष्कर तपस्या करवामां उद्यमवंत थइ, संयमना उपयोगमा सारी रीते युक्त रही, गुप्त वृत्तिथी पांडवोनी जेम बार वर्ष सुधी हु विहार करतो फरीश" एम कहीने ते सूरि संघनी आज्ञाथी गच्छवासनो त्याग करी माणसोना जाणवामां न आवे तेम विधिप्रमाणे गाम नगरादिकमां विहार करतां सात वर्ष पूर्ण थये उज्जयिनी नगरीमां महाकाळ नामना

१ दश प्रकारना प्रायश्चित्तोमां आ सौथी छेल्लु अने मोटु छे.

शिवना चैत्यमा आव्या. त्यां शिवलिंग तरफ पोताना पग राखीने सूता ते जोइने लोको तेने 'कोण छो ?' विगेरे पूछवा लाग्या, परंतु तेणे कांइ पण जवाब आप्यो नहीं. त्यारे तेओए राजाने जणाव्युं के–"हे देव ! आपना महादेवना चैत्यमां कोइ परदेशी आवीने रह्यो छे, अने महादेवनी आशातना करे छे. ते बोलाव्या छतां बोलतो नथी, तथा महादेवने प्रणाम पण करतो नथी." ते सांभळीने विक्रम राजाए कौतुकथी त्यां आवी तेने कह्युं के–"हे अवधूत ! तमे कोण छो ?" तेणे जवाब आप्यो के–"हुं धार्मिक छुं" राजाए कह्युं के–"त्यारे केम अर्थथी तथा नामथी महादेवने प्रणाम करता नथी?" ते सांभळीने जिनमतनी उन्नति करवामां अत्यंत उत्सुक थयेला सूरि काइक विचार करीने बोल्या के–"हे राजा ! ज्वरथी पीडायेलो माणस जेम मोदकनो स्वाद लइ शके नहीं, तेम आ तमारा देव अमारी वंदना के स्तुतिने सर्वथा सहन करी शके तेम नथी." राजाए कह्युं के–"केम आवुं संबंधविनानुं बोलो छो ?" तेणे कह्युं के–"मारी स्तुति करवाथी कदाच आ प्रतिमाने कांइ पण उपद्रव थाय, अने तेथी तमारी अप्रसन्नता थाय एवी मारा मनमां शंका रहे छे" राजाए कह्युं–"कांइ शंका राखो नहीं. खुशीथी नमस्कार अने स्तुति करो" ते सांभळीने सूरिए श्री वर्धमान स्वामीना गुणोथी गर्भित, सारी रचनावाळी अने महान् अर्थवाळी बत्रीश बत्रीशीवडे प्रथम स्तुति करी. पछी अधिष्ठायक देवनुं समीपपणुं होवाथी आ दुषमा समयमां पण अनुपम प्रभाववाळा श्री पार्श्वनाथनी चुमाळीश श्लोकवाळा कल्या-

णभदीर स्तोत्रवडे स्तुति करवा मांडी.ते कल्याणभदीरनुं अग्यारमुं वृत्त बोलती वखते अथवा कोइ ग्रथना अभिप्राये पहेली बत्रीशीना पहेला काव्यना उच्चार वखतेज श्री धरणेंद्रनु सानिध्य होवाथी प्रथम शिवलिंगमाथी धुमाडो नीकळवा माडयो, त्यार पछी अग्निनी मोटी ज्वाळा नीकळवा मांडी,ते समये सर्वे लोको परस्पर हस्तनी ताळीओ पूर्वक कोलाहल करता बोल्या के–" खरेखर अत्यत कोपरूपी कालाग्निथी भयंकर एवा आ महादेव पोताना त्रीजा नेत्रना अग्निवडे आ जोगीने भस्मसात् करी नाखशे " त्यार पछी तडतड शब्द करतुं शिवलिंग फाटयु, अने तेमांथी वीजळीना झबकारानी जेम प्रथम ज्योति (तेज) प्रगट थइ, अने पछी अनुपम एवी श्री पार्श्वनाथनी प्रतिमा प्रगट थइ. ते जोइ विस्मय पामेला विक्रम राजाए पूछयु के–" हे महाभाग्यवान्! कोइ वखत नहीं जोयेलु एवु आ आश्चर्य शु ? आ अपूर्व कया देव प्रगट थया ? " त्यारे गुरु बोल्या के–" त्रण जगत्ने सेववालायक, देवना पण देव, श्री धरणेंद्र जेनी उपर अद्भुत फणारूप छत्रनो आडंबर करे छे, एवा आ त्रेवीशमा तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ स्वामीनी प्रतिमा छे. आ देवाधिदेवज मारी स्तुति विगेरेने सहन करी शके छे आ प्रतिमानो अहींथी प्रादुर्भाव शी रीते थयो ? ते वृत्तांत सांभळो.

पूर्वे आज अवती नगरीमा एक "भद्रा" नामनी शेठाणी रहेती हती. तेने " अवतीसुकुमाल " नामे पुत्र हतो ते बत्रीश पत्नीओना यौवनरूप सुगधना सर्वस्वनु आस्वादन करवामा भ्रमररूप हतो. तथा शालिभद्रनी जेम अत्यत भोगरसना समुद्रमां निमग्न होवाथी अल्प

पण गृहव्यापार करतो नहोतो, तेनी माता ज सर्व गृहचिंता करती हती एकदा मौर्य वंशना अग्रेसर " समति " राजाने प्रतिबोध करनार " श्री आर्यसुहस्ती " नामना आचार्य पोताना गच्छसहित विहारना क्रमे त्यां आव्या, अने भद्रानी अनुमतिथी तेणीना आवासनी पासे ज वाहनशाळामां रह्या एकदा प्रदोष समये सूरि महाराज " नलिनीगुल्म " नामनु अध्ययन गणता हता कर्णने रसायण समान ते अध्ययन सांभळतांज अत्यत आनद पामेलो भद्रानो पुत्र अवंतिसुकुमाल सात भूमिकाना प्रासादथी नीचे उतरीने गुरुनी वसतिना द्वार पासे आवी ने सांभळवा लाग्यो. तरतज तेने जातिस्मरण उत्पन्न थयु एटले ते गुरु पासे आवी नमस्कार करी बोल्यो के–" हे भगवान् ! हु भद्रानो पुत्र छु. नलिनीगुल्म विमाननी अनुपम ऋद्धिनो में पूर्व भवे अनुभव कर्यो छे, ते सुख मने जातिस्मरण थवाथी याद आव्यु छे तेथी ससारना सुखथी पराङ्मुख थइने हु त्यांज जवाने अत्यत उत्सुक थयो छु. हे भगवान् ! पूज्य एवा आप पण शु नलिनीगुल्म विमानमांथी ज अत्रे आव्या छो ? केमके नहीं तो ते विमाननु यथार्थ स्वरूप आप शी रीते जाणो ? " ते सांभळीने गुरु बोल्या के–" सर्वज्ञे रचेला सिद्धांतना वचनथी अमे तेनु स्वरूप जाणीए छीए." तेणे पूछ्यु के–"कया उपाय वडे ते विमान जलदी प्राप्त थाय ? " गुरु बोल्या–" चारित्र लेवाथी ते सुख प्राप्त थाय छे, परतु तु अत्यत कोमळ छो अने चारित्र अत्यत कठण छे केमके लोढाना चणा चावचा सुकर छे, अग्निनो स्पर्श पण सुकर छे, परतु जिनेश्वरे कहेलु चारित्र अतिचाररहित पालन करवु

दुष्कर छे वळी ते चारित्र पोताना स्वजनोनी अनुमति होय तोज दे वाय छे. ” ते सांभळीने ते अवंति सुकुमाळ सुर्योदय थया पहेलाज नलिनीगुल्मविमानमां जवा माटे अत्यंत उत्कंठित थयो, तेथी संयम (चारित्र) ग्रहण करवा सारु अत्यंत उत्सुक थइने पोतानी जातेज पंचमुष्टि लोच करी तेणे मुनिवेष धारण कर्यो. एटले सूरिए पण तेने विधि प्रमाणे दीक्षा आपी पछी चारित्र तपना कष्टने सहन करवामां असमर्थ होवाथी सूरिनी आज्ञा लइ, शरीरनी वेदनाने नहीं गणतो, तीक्ष्ण दर्भना अग्रभागवडे पग विंधावाथी तेमांथी नीकळता लोहीवडे मार्गने कादववाळो करतो ते “ कथेरिका कुडंग ” नामना स्मशानमां गयो, अने त्यां पादोपगम नामनु अनशन अंगीकार करी ध्यानमग्न थइने रह्यो तेना रुधिरना गंधथी आकर्षाइने एक नवी प्रसूतिवाळी दुष्ट शियाळणी पोताना बच्चासहित त्यां आवी वाघणनी जेवी भयंकर मुखने धारण करती तथा राक्षसीनी जेवी भूखी थयेली ते तेनु भक्षण करवा लागी. तेणीए तथा तेणीना बच्चांए रात्रिना पहेला पहोरमां तेना बे पगनु भक्षण कर्युं, बीजा पहोरमां तेना सायळो सुधी भक्षण कर्युं अने त्रीजा पहोरमां तेनुं सघळु उदर भक्षण कर्युं, तोपण ते मुनि लेशमात्र पण कषायमान थया नहीं “अहो! आटलु बधु सुकुमाळपणु (कोमळपणु) छतां पण दु सह महा व्यथा केवी रीते सहन करी ? अहो ! महा साहसिकोमां पण शिरोमणि एवा तेमने धन्य छे. ” पछी रात्रीना चोथा पहोरे ते महासत्त्ववान् अवंतिसुकमाल साधु कालधर्म पामीने नलिनीगुल्म विमानमां [illegible]

द्धिक देवपणे उत्पन्न थया तेना साहसथी तुष्टमान थयेला देवोए तेज वखते तेना देहनो महिमा कर्यो प्रातःकाळे श्रुतना उपयोगथी गुरुए सर्व वृत्तांत जाणीने तेनी माता भद्राने तथा तेनी स्त्रीओने कह्यु, त्यारे ते स्त्रीओ भद्रा मातासहित स्मशानमां गइ, अने घणो विलाप करी सिप्रा नदीने कांठे तेनु और्ध्वदहिक कर्म (अग्नि संस्कार) कर्युं त्यार पछी वैराग्य रसथी भरेली भद्राए एक गर्भिणी वहुने घरमां राखी बीजी एकत्रीश वहुओ सहित दीक्षा लीधी घेर रहेली गर्भिणी वहुए पुत्र प्रसव्यो. ते पुत्रे तेना पिता अवंति सुकुमाळना मृत्युने ठेकाणे आ प्रासाद कराव्यो पोताना पितानो अहीं महाकाळ (मृत्यु) थयो, तेथी आ प्रासादनुं नाम महाकाल पाडयु, अने तेमां मोटा उत्सवपूर्वक श्रीपार्श्वनाथ परमात्मानी अनुपम प्रतिमा स्थापन करी केटलाक काळ सुधी तो ते प्रतिमानी विधिपूर्वक पूजा थती रही पछी काळक्रमे महादेवना भक्त ब्राह्मणोए अवसर पामीने ते प्रतिमाने पृथ्वीमा गुप्त करी (भंडारी दइ) अकार्य करवामा तत्पर थइ अहीं महादेवनु लिंग स्थापन कर्यु हमणां मारी करेली स्तुति सांभळीने सावधान थयेला अधिष्ठायकना सांनिध्यबळथी आ श्रीपार्श्वनाथनी प्रतिमा शिवलिंग भेदीने प्रगट थइ हे विक्रम राजा ! हवे सत्यासत्यनु निरुपण तमे पोतेज करो " आ प्रमाणे सुंदर अने मधुर वाणी सांभळीने विक्रम राजाने शुभ परिणाम थवाथी श्री जैनमतने विषे अत्यंत बहुमान उत्पन्न थयु, तेथी तेणे प्रसन्न थइने श्रीपार्श्वनाथनी प्रतिमाना पूजन माटे सो गाम आप्यां तथा तणे योगीनी (सूरिनी) अत्यंत

श्लाघा करता कह्यु के–"अहो ! आपनी जेवा महर्षि पृथ्वीपर कोण छे ?

अहयो बहवः सन्ति भेकभक्षणदक्षिणाः ।
एकः स एव शेषः स्याद्धरित्रीधरणक्षमः ॥१॥

अर्थ–देडकाओनु भक्षण करवामा चतुर एवा सर्पो तो दुनीआमा घणा छे, परंतु पृथ्वीने धारण करवामां तो एक शेषनाग ज समर्थ छे १

खेरेवोदयः श्लाघ्यः कोऽन्येषामुदये ग्रहः ।
न तमांसि न तेजांसि यस्मिन्नभ्युदिते सति ॥२॥

अर्थ–सूर्यनोज उदय श्लाघा करवा योग्य छे, बीजा (तेजस्वी) ना उदयमा शो आग्रह ? कारण के सूर्यनो उदय थवाथी अंधकार तेमज बीजा तेजो बिलकुल रहेता नथी २

वळी आपनी कवित्वकळा पण असाधारण छे. केमके साकरनी जेवा मीठाशवाळां काव्यनां पदो उपरा उपरी कया कविना मुखथी नीकळतां नथी ? सर्वनां मुखमांथी नीकळे छे. तथा कोनी वाणीनो वैभव उत्तम रसने पुष्ट करतो नथी ? सर्वनो करे छे परंतु जे कवि सुंदर पदो अने उत्तम रस ए बन्नेने अमृतना निर्झरणानी जेवा रसवडे तरंगित करे छे, तेवा कवि तो क्वचित् कोइकज होय छे. वळी कविनी वाणीमां अत्यंत मधुरता लागवी ए कांइ सरखा अक्षरोनी

आटाथि (मास) वडे लागती नथी, परिचय (अभ्यास) थी लागती नथी, तेमज शब्दनी व्युत्पत्तिथी के गुरुना सारा उपदेशथी पण लागती नथी, परंतु मोटा पुण्यना उदयथी सत्कविओनी वाणी पोतानी मेळेज मधुर लागे छे" आ प्रमाणे प्रशंसा करीने विक्रम राजा पोताने घेर गया. आवा प्रकारनी जिनशासननी उत्तम प्रभावनाथी आश्चर्य अने आनंद पामेला संघे सूरिना पारांचिक प्रायश्चित्तना बाकी रहेला पांच वर्षो माफ करीने तेने मोटा उत्सवपूर्वक पुर प्रवेश करावी गच्छना नायक तरीके स्थापन कर्या.

एकदा सिद्धसेन दिवाकर सूरि पोताना चरण कमळवडे पृथ्वीने पवित्र करता अनुक्रमे माळव देशमां "ओंकार" नामना नगरमां गया. एकदा त्यांना संघे सूरिने विनति करी के-"हे भगवान्! आ नगरना समीपे एक गाम छे, तेमां सुंदर नामनो क्षत्रिय राज्य करतो हतो. तेने बे स्त्रीओ हती. तेमां एके प्रथम पुत्री प्रसवी, तेथी तेणीने अत्यंत खेद थयो. कारणके तेणीनी शोक पण गर्भिणी हती, अने थोडा वखतमांज प्रसूति करनार हती. तेथी ते शोकने पुत्र थशे तो ते पतिने वधारे वहाली थशे, एम धारीने तेणीए स्त्री जातिने उचित एवी अत्यंत दुष्टताने लीधे घणुं द्रव्य आपी एक सूतिका (दाइ) ने कह्यु के-" आ मारी शोक प्रसव समये तने बोलावशे, तेथी तुं प्रथमथीज कोइ ठेकाणेथी एक मृतक बाळक लावी राखजे, अने प्रसव वखते ते मृतक बाळकने बतावी कहेजे के 'मुएलुं बाळक जन्म्यु छे.' एम कही प्रसवेला पुत्रने तुं पोतेज गुप्त रीते रुदने दूर नांखी

आवजे. ' आ प्रमाणे तेणीए प्रपंच कर्यो, अने दैवयोगे तेमज थयुं अने ते सूतिका (दाइ) ए पण तेज प्रमाणे मुएलुं बाळक बतावी जन्मेला पुत्रने दूर अरण्यमां मूकी दीधो "प्राणीओना लोभने धिकार छे." पछी ते तरतना जन्मेला पुत्रने दूर नाख्या छता पण पुण्यना बळथी तेनी कुळदेवीए गायनु रूप धारण करी दूध पाइ उछेरीने एक वर्षनो कर्यो. पछी अहींथी नजीकना शिवालयना अधिकारी भरटके (पूजारीए) तेने जोयो एटले तेने लइने पोतानी दीक्षा आपी पोतानो शिष्य कर्यो एकदा कान्यकुब्ज देशनो जन्मांध राजा श्रीपति (कृष्ण)नी जेम देशोने जीततो जीततो आ गामनी नजीक आवीने रह्यो. ते वखते रात्रिने समये महादेवे प्रत्यक्ष थइने नाना भरटकने कह्यु के-"तु कान्यकुब्जना राजाने मारी पूजानु पुष्प अने जळ शेषा (प्रासादी) तरीके आपजे, तेथी ते अधतानो त्याग करी सज्ज नेत्रवाळो (देखतो) थशे. ' प्रातःकाळे तेणे ते वृत्तांत पोताना गुरुने जणावीने तेनी आज्ञाथी पूजानुं पुष्प अने जळ लइ स्कधावार (सैन्य)मा आवी राजाना प्रधानोने कह्यु के-' हे राजसेवको ! तमारा राजाने मारी पासे लावो, हु तेने सूर्यविकासी कमळनी जेम प्रफुल्लित नेत्रवाळो करु " ते सांभळीने प्रधानोए राजाने प्रेरणा करी, एटले ते तेनी पासे आव्यो. पछी ते ऋषिए आपेलु निर्माल्य बहुमानथी लइने राजाए पोतानी आखोपर राख्यु, के तरतज ते सज्ज नेत्रवाळो थयो. तेथी प्रसन्न थयेला राजाए तेने इनाममा सो गाम आप्या, अने आज ठेकाणे आ मोटो शिवनो प्रासाद करावी आप्यो हव ते भरटक ऋषि राजादिकने मान्य होवाथी

अहीं जिनालय करवा देतो नथी, केमके अहीं मिथ्याद्दष्टिओनु बळ वधारे छे. माटे आप एवो कांइक यत्न करो के जेथी अहीं आ शिवाल यथी पण उचु अने मनोहर जिनचैत्य करी शकाय आ कार्यमांमात्र आप ज समर्थ छो, माटे आपने अमे विनंति करीए छीए " आ प्रमाणे श्रावकोनी विज्ञप्ति साभळीने मुनीश्वर श्री सिद्धसेन सूरि विहार करी अवंति नगरीमां आव्या, अने नवा अद्भुत चार श्लोको बनावीने, हाथमां श्लोकनो कागळ राखी विक्रम राजाना महेलना द्वार पासे आवी द्वारपाळ मारफत एक श्लोक राजा पासे मोकलयो. ते श्लोक आ प्रमाणे हतो –

> विद्वसुर्भिक्षुरायातस्तिष्ठति द्वारि वारित· ।
> हस्तन्यस्तचतु श्लोक उतागच्छतु गच्छतु ॥१॥

अर्थ–आपने जोवानी इच्छावाळो भिक्षु हस्तमा चार श्लोक राखीने द्वारपाळे निषध करवाथी बारणेज उभो छे, ते आवे के जाय ?

आ श्लोक सांभळीने राजाए आश्चर्य पामी तेना जवाबमां सामो श्लोक मोकलयो के–

> दीयतां दश लक्षाणि शासनानि चतुर्दश ।
> हस्तन्यस्तचतु श्लोक उतागच्छतु गच्छतु ॥१॥

अर्थ–आ भिक्षुकने दश लाख सोनामहोरो तथा चौद शासन

(गाम) आपवामा आवे छे. हवे हाथमा चार श्लोको जेणे राखेला छे एवा ते भिक्षु मरजी होय तो आवे अने मरजी होय तो जाय. १.

आ श्लोक सांभळीने कवींद्रे द्वारपाळ मारफत ज राजाने जणाव्यु के–"हे राजा ! आ भिक्षुने आपना दर्शननीज इच्छा छे, द्रव्यनी इच्छा नथी." ते सांभळीने राजाए तेमने पोतानी पासे बोलाव्या, अने तेमने ओळख्या तेथी सिंहासनपरथी उठीने बहुमानपूर्वक आग्रहथी तेमने सिंहासनपर बेसाडी भक्तिपूर्वक राजाए कह्यु के–" हे पूज्य ! चिरकाळे केम देखाया ? " सूरि बोल्या के–" पृथ्वीने विषे सौधर्मेंद्र समान हे राजा ! केवळ धर्मकार्यमां व्यग्र होवाने लीधेज अमे घणे काळे आव्या छीए हे राजन् ! आ चार श्लोको साभळो.—

अपूर्वेयं धनुर्विद्या भवता शिक्षिता कुतः ।
मार्गणौघः समभ्येति गुणो याति दिगन्तरम् ॥१॥

अर्थ–हे राजा ! आप आ अलौकिक धनुर्विद्या क्यांथी शीख्या, के जेथी मार्गणनो समूह तमारी पासे आवे छे अने गुण दिशाओमां जाय छे ? (तात्पर्य ए छे के–धनुर्विद्यामा मार्गण एटले बाणनो समूह दिशाओमां जवो जोइए, अने गुण एटले धनुष्यनी दोरी (पणच) पासे रहेवी जोइए तेथी उलटु थवाथी अलौकिक धनुर्विद्या कही. परमार्थ एवो छे के मार्गण एटले भिक्षुकनो समूह पासे आवे छे अने गुण–कीर्ति दिशाओमा जाय छे एवो गूढ अभिप्राय छे) १.

सरस्वती स्थिता वक्त्रे लक्ष्मीः करसरोरुहे ।

कीर्तिः किंकुपिता राजन् येन देशान्तरं गता ॥२॥

अर्थ—हे राजा ! सरस्वती तमारा मुखमां रही छे, अने लक्ष्मी तमारा हस्तकमळमां रही छे; परंतु कीर्त्ति केम कोप पामी छे के जेथी ते देशांतरमां जती रही छे २

सर्वदा सर्वदोऽसीति मिथ्या संस्तूयसे बुधैः ।
नारयो लेभिरे पृष्ठं न वक्षः परयोषितः ॥ ३ ॥

अर्थ—" हे राजा ! तमे सर्वदा सर्व वस्तु आपनार छो, " ए प्रमाणे पंडितो तमारी स्तुति करे छे, ते मिथ्या (खोटी) छे केमके तमारा शत्रुओने तमे तमारी पीठ आपता नथी, अने परस्त्रीआने वक्षस्थळ आपता नथी. (तेथी तमे सर्व वस्तुना आपनार केम कहेवाओ ? अर्थात् युद्धमां नाशीने तमे पीठ देखाडता नथी अने परस्त्रीओने आलिंगन करता नथी ए तमारामां मोटो गुण छे) ३

आहते तव निःस्वाने स्फुटितं रिपुहृद्घटैः ।
गलिते तत्प्रियानेत्रे राजंश्चित्रमिदं महत् ॥४॥

अर्थ—हे राजा ! युद्धमां तमारो डंको हणावाथी (वागवाथी) शत्रुना हृदयरूपी घडाओ फूटी जाय छे, अने तेमनी स्त्रीओना नेत्रमांथी पाणी नीकळे छे, ए मोटुं आश्चर्य छे (अर्थात् डंको फूटवो जोइए, अने जे वस्तु फूटे तेमांथीज पाणी नीकळवुं जोइए छतां अहींतो तेथी उलटुंज थाय छे ए आश्चर्य छे) ४

आ प्रमाणे अद्भुत चार श्लोको सांभळीने अत्यत प्रसन्न थयेला विक्रम राजाए उंचा किंमती वस्त्रोथी भरेलो १, सुगंधि वस्तुना समूहथी भरेलो २, सोनामहोरोथी भरेलो ३, अने हार, अर्ध हार विगेरे अलंकारोथी भरेलो ४–एवा मोटा चार हाथीओ मगावीने गुरुने कह्युं के–" आ ग्रहण करो. " गुरु बोल्या के–' आ अमारे कल्पे नहीं " फरीथी राजाए कह्युं के–" त्यारे आपनी इच्छामां आवे तेवा मारी पृथ्वीमांथी मोटा चार देशो ग्रहण करो " गुरु बोल्या–" ते पण हु इच्छतो नथी. " "त्यारे आपनी शी इच्छा छे ?" एम राजाना पूछवाथी सूरि बोल्या के–" हे राजा ! ओंकार नामना पुरमां शिवालय छे, तेथी पण उंचो चार द्वारवाळो जैन प्रासाद करावो, अने परिवार सहित जाते त्यां आवीने प्रतिमानी स्थापना तथा प्रतिष्ठा संबंधी उत्कृष्ट महोत्सवो करो. ते सांभळीने पुण्यना अर्थी राजाए तेज प्रमाणे सर्व कर्यु आ प्रमाणे जैन मतनी महा उन्नति थवाथी संघ अत्यत हर्ष पाम्यो.

अनुक्रमे सूरि दक्षिणमा " प्रतिष्ठान " (पैठ) नामना पुरमां गया त्यां पोताना आयुष्यनो अंत जाणीने अनशनादिक विधिवड काळ करी स्वर्गलोकने पाम्या. आ वृत्तांत जणाववा माटे त्यांना संघे एक विद्वान् वक्ता भट्ट (ब्राह्मण) ने चित्रकूट (चितोड) मोकल्यो ते भट्ट चित्रकूटमा जइने संघनी पासे वारवार अर्धो श्लोक बोलवा लाग्यो के–

" इदानीं वादिखद्योता द्योतन्ते दक्षिणापथे । "

(हमणां दक्षिण देशमां वादीरूपी पतगीआओ प्रकाश पाम्या छे,)

ते सांभळीने जेने सरस्वती प्रसन्न थयेली छे एवी " सिद्धा " नामनी सिद्धसेननी व्हेन बोली के–

" नूनमस्तगतो वादी सिद्धसेनो दिवाकर ॥१॥ "

(खरेखर सिद्धसेन नामना सूर्यनो अस्त थयो जणाय छे)

त्यारे ते भट्टे कह्यु के–" हा, तेमज थयु छे "

॥ इति व्यञ्जनानां अन्यथाकरणे सिद्धसेनप्रबन्ध· ॥

व्यंजनोने न्यून करवामां दृष्टांत आ प्रमाणे–

एकदा " राजगृह " नगरमा " श्रीमहावीर " स्वामी समवसर्या. तेमने वदना करवा माटे देवो, विद्याधरो, मनुष्यो तथा अभयकुमार सहित " श्रेणिक " राजा आ या. भगवाननी पासे धर्मदेशना सांभळीने सर्व सभाजनो पाछा वळ्या ते वखते कोइक विद्याधरने आकाशगामी विद्यानु एक पद विस्मरण थयु, तेथी करीने ते वारवार आकाशमा थोडेक उचे कूदीने पाछो पृथ्वीपर पडतो हतो आ प्रमाणे थतु जोइने श्रेणिक राजाए भगवानने पूछ्यु के–" हे स्वामी ! आ खेचर (विद्याधर) पाखविनाना पक्षीनी जेम आकाशमा उडी उडीने केम वारवार नीचे पडे छे ? " त्यारे भगवाने तेने (राजाने) विद्याना पदनु विस्मरण थयानो व्यतिकर (दृष्टांत) कह्यो ते सांभळीने अभयकुमारे ते खेचर पासे जइने कह्युं

के—"हे खेचर! जो तमे मने तमारी समान विद्यावाळो करो तो तमारी विद्याना अक्षर ओळखीने हु पूरा करी आपु " ते सांभळीने विद्याधरे ते वात अंगीकार करी. अभयकुमारने पदानुसारी बुद्धि (लब्धि) होवाथी एक पदवडे अनेक पदोने जाणवानी शक्ति हती तेथी ते विद्याना बाकीना अक्षरोने अनुसारे विस्मृत थयेला अक्षरने जाणीने तेणे ते खेचरने विद्या पूर्ण करी आपी ते खेचर पण विद्या संपूर्ण थवाथी हर्षित थइ अभयकुमारने विद्यासाधननो उपाय बतावी पोताने स्थाने गयो.

॥ इति व्यञ्जनानां न्यूनत्वे कथा ॥

व्यंजनने अधिक करवा उपर कथा

"पाटलीपुत्र" नगरमां नवमा "नंद" राजाने "चाणाक्ये" प्रतिज्ञा करवाथी राज्यभ्रष्ट कर्यो, ते राज्यपर "मयूरपोषक" गामना महत्तरनी दीकरीना पुत्र "चंद्रगुप्त" ने बेसाड्यो. तेने "बिंदुसार" नामे पुत्र थयो. तेणे तेनी पछी राज्य कर्यु. तेनी पछी तेनो पुत्र "अशोकश्री" राजा थयो तेणे पोताना "कुणाल" नामनां पुत्रने बाल्यावस्थामां पण तेनापरना प्रेमने लीधे तेना पोषणने माटे "उज्जयिनी" नगरी आपी अने पोतानी पासे रहेवाथी तेनी अपर (ओरमान) माताओथी तेनो पराभव (अनिष्ट) थशे एम धारी ते कुमारने उज्जयिनीमाज राख्यो. अनुक्रमे मधानादिकथी पुष्पनी जेम लालन

पाल्न करातो ते कुमार आठ वर्षनो थयो त्यारे " कुमार अभ्यासने योग्य थयो छे" एम धारी राजाए प्रधानपर कागळ लख्यो तेमां "अधीयताम्. कुमार " (अमारा कुमारने भणावजो) ए प्रमाणे स्पष्ट अक्षरो लख्या. तेवामां कांइ शीघ्र कार्य आवी पडवाथी राजा अन्य कार्यमां व्यग्र थयो. तेटलामां कुणालनी अपरमाताए त्यां आवी ते कागळ वांची विचार्यु के-"कुणाल कुमार सारो विद्वान् थशे, एटले राजा तेने ज राज्य आपशे, मारा पुत्रने आपशे नहीं " एम विचारी कुणाल्नु अनिष्ट करवाना हेतुथी तेणीए तत्काळ अने माथे एक बिंदु (अनुस्वार) कर्यु तेथी "अंधीयताम् कुमार " (अमारा कुमारने आंधळो करजो) एवु थयु अहो ! मात्र एक बिंदुना वधारवाथी ज एकांत हितकारी अर्थनु पण एकांत अहितकारीपणु थयु पछी थोडीवारे राजाए ते कागळ वांच्या विना ज त्य करीने (बीडीने) मोकली दीधो ते कागळ कोइ अनुचरे उज्जयिनी जइ प्रधानना हाथमां आप्यो, प्रधाने ते कागळ वांच्यो, अने तेमां लखेली हकीकत जाणी अत्यंत खेद पाम्यो कागळनी हकीकत कहेवाने असमर्थ एवा प्रधानना नेत्रमां अश्रु आव्या एटले कुणाल कुमारे पोते ज ते कागळ वांच्यो तेमां " अंधीयताम् कुमार." एवा अक्षर जोइ अत्यंत उद्वेग पामी विचार करवा लाग्या के-" खरेखर में कांइपण पितानी आज्ञानो भंग कर्यो हशे, नहीं तो मारा एकांत हितने ज इच्छनार पिता आवी आज्ञा केम आपे ? माटे जे पितानी आज्ञानु उल्लंघन करे तेने दुष्ट पुत्र जाणवो " एम विचारी कुणाल कुमार, प्रधानादिके राजानी

आज्ञानो निर्णय करवा माटे थोडो वखत विलंब करवानु बहु रीते कथा छतां पण तत्काळ दुर्दैवना वशथी अग्निवडे तपावेली सळीवती पोताना बन्ने नेत्रो आज्यां (फोड्यां) अहो! महापुरुषोने पण विना विचार्युं कार्य महा अनर्थकारी थाय छे. कह्युं छे के—

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम् ।
वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः ।।

अर्थ—सहसा (वगर विचारे) कार्य करवु नहीं. केमके अविवेक ए परम (मोटी) आपत्तिनु स्थान छे गुणोमा लुब्ध थयेली संपत्तिओ पोतानी मेळेज विचारीने कार्य करनाराने वरे छे १.

आवा खराब परिणामवाळा कार्यमा गुरुनी आज्ञाना आराधकने पण गुरुनी आज्ञा अयोग्य जणाती होय तो काळनो विलंब करवो एम शास्त्रमा कहेलु छे. अने तेवो विलंब करवो ते पण त्रण वखत आज्ञा थाय त्यां सुधीज पुरुषोने कल्याणकारी छे. कह्यु छे के—

क्षणेन लभ्यते यामो यामेन लभ्यते दिनम् ।
दिनेन लभ्यते कालः कालात्कालो भविष्यति ।।१।।

अर्थ—क्षणनो विलंब करवाथी पहोरनो अवसर मळे छे, पहोरनो विलंब करवाथी दिवस मळे छे, दिवसनो विलंब करवाथी काल (रात्रीदिवस) मळे छे, अने कालनो विलंब करवाथी बीजो काल मळे छे १.

हालना समयमा इंग्रेजोना राज्यमा पण सर्व कार्योमां त्रणवार आज्ञानी अपेक्षा राखवानी व्यवस्था छे.[१] केमके तेवी व्यवस्थाने लीधे सारी रीते विचार करवा रूप गुण प्राप्त थाय छे अथवा तो रामचन्द्रनी जेम एकांत पितानी आज्ञा प्रमाणे वर्तवामांज तत्पर, अत्यंत नम्रतावान् अने महासाहसिकना निधिसमान पुत्रनो पितानी आज्ञा पाळवामां शो दोष छे? अत्यंत विस्मयथी (हर्षथी) सर्व अंगमां उल्लास पामता रोमोद्गम (रोमांच) वडे गुरुनी आज्ञानु अनुष्ठान महान् पुरुषोने पण वखाणवा लायकज छे; परंतु तेवां आज्ञा आपनार पितानोज दोष छे के जेथी अत्यंत कृपाना पात्ररूप पुत्र उपर पण सारी रीते जोया वांच्या विना ज कागळ लखी मोकल्यो अथवा नवा नवा अनेक कार्योमां व्यग्र रहेला पितानो पण शो दोष? पुरुष रत्ननो नाश करनारी, तेवा प्रकारना कूट प्रपंचने रचनारी अने दुष्ट मतिवाळी अपरमातानो ज दोष छे अथवा स्त्री जातिनी स्वभावथी ज दुष्टताने लीधे, वगर विचारे ज कार्य करवापणाने लीधे अने पापमां ज तत्पर होवाने लीधे तथा अपरमाता निरंतर द्वेषवाळी ज होय छे अने तेणीनुं हृदय दुष्ट ज होय छे तने लीधे तेमज पोताना पुत्रने राज्यप्राप्ति थाय तो ठीक तेवा विचाररूप लोभसागरनुं दुर्निवारपणु होवाने लीधे तेणीए आ अकार्य कर्यु, तेमा शु आश्चर्य? कांइज नहीं

१ दरेक धारानु बील त्रणवार वंचाया पछी पसार थाय छे. कोइ पण वस्तुनुं वेचाण पण छेल्लीवार त्रणवार बोल्या पछी करवामा आवे छे

त्यारे आ दोष कोने आपवो ? ते विषे निर्णय करे छे के–पूर्वे करेला दुष्कृत्य (पापकर्म) नो ज आ दोष छे, केमके पिताए तो प्राणथी पण वहाला एवा पुत्रने विद्या प्राप्त कराववानो ज उपक्रम (उद्योग) कर्यो हतो, परंतु तेने बदले परिणाममां जन्मपर्यंत बन्ने नेत्रनी अंधता प्राप्त थइ. कह्यु छे के –

जं जेण कयं कम्मं पुव्वभवे इहभवे वसंतेणं ।
त तेण वेइअव्व निमित्तमित्तो परो होइ ॥ २ ॥

अर्थ—पूर्व भवमां अथवा आ (चालता) भवमां वसता जेणे जे कर्म कर्यु छे, ते अवश्य तेणे भोगववानु ज छे, तेमां बीजो प्राणी तो निमित्तमात्र ज छे. २

धारिज्जइ इतो जलनिही वि कल्लोलभिन्न कुलसेलो ।
न हु अन्न जम्म निम्मिअ सुहासुहो दिव्वपरिणामो॥१॥

अर्थ—तरंगोए करीने मोटा कूळपर्वतने पण भेदनार एवा समुद्रने धारण करी शकाय (अटकावी शकाय), परंतु पूर्व जन्ममां करेला शुभाशुभ कर्मना परिणाम अटकावी शकाता नथी. १

पछी राजाए आ वृत्तांत सांभळीने विचार्यु के–" मने धिक्कार छे के में कूट लेख लखीने अ कार उपर अनुस्वार मूकवा रूप प्रमाद-वडे तीव्र अग्निनी जेम आटलो बधो अनर्थ कर्यो ? अथवा उन्मादनी जेवो प्रमाद जीवने कया कया अनर्थ नथी पमाडतो ? अने

कया कया मनोरथोनो नाश नथी करतो ? कह्यु छे के,—

प्रमाद॰ परम द्वेषी प्रमाद॰ परम विषम् ।
प्रमादो मुक्तिपूर्दस्युः प्रमादो नरकायनम् ॥ १ ॥

अर्थ—प्रमाद मोटो शत्रु छे, प्रमाद महा उत्कट विष छे, प्रमाद मुक्तिपुरीनो चोर छे, अने प्रमाद नरकनु स्थान छे १

राज्यने योग्य एवा पुत्रनो आ प्रमाणे विनाश करवामा हेतुरूप अने संताननो नाश करवामां साक्षात् धूमकेतुरूप मने मूर्खने धिक्कार छे. हवे तो ते पुत्र प्राणथी पण अधिक प्रिय छतां चक्षुरहित होवाथी समग्र समृद्धिना सारभूत राज्यने अथवा युवराजपणाने केम लायक होय ? " आ प्रमाण ते राजा खेद सहित हृदयमा वारवार पश्चात्ताप करवा लाग्यो. पछी कुणाल कुमारने समृद्धिवाळु बीजु गाम आप्यु अने तेनी अपरमाताना पुत्रने उज्जयिनी आपी अनुक्रमे ते समृद्धिवाळा गामने भोगवता कुणाल कुमारनी " शरदश्री " नामनी पत्नीए विदूर पर्वतनी पृ वी वैडूर्य रत्नने प्रसवे तेम सारा लक्षणवाळा पुत्ररत्नने प्रसव्यो ते वखते "हु अपर मातानो मनोरथ व्यर्थ करु, अने पोतानी मातानो मनोरथ सफळ करु " एम विचारीने कुणाल कुमार राज्य लेवानी इच्छाथी पाटलीपुत्रमा जइ अनुपम गधर्व कळाए क रीने पुरना लोकोनु रजन करवा लाग्यो तेनी अपूर्व कळा सांभळीने अशोकश्री राजाए तेने जवनिकामा राखीने गावानी आज्ञा करी. त्यारे ते [illegible] सुंदर काव्यना प्रबधवडे गातां गातां आ प्रमाणे बोल्यो—

चंदगुत्तपपुत्तो उ विंदुसारस्स नत्तुओ ।
असोगसिरिणो पुत्तो अंधो जाचइ कागणि ॥ १ ॥

अर्थ—चद्रगुप्तनो प्रपौत्र, बिंदुसारनो पौत्र अने अशोकश्रीनो पुत्र के जे अध छे, ते काकणीनी याचना करे छे. १.

ते साभळीने राजाए बहु मानथी तेने पूछ्यु के–"तु कोण छे ?" ते बोल्यो–" आपनी आज्ञानु आराधन करवामा एकाग्र चित्तवाळो हु आपनो पुत्र कुणाल छु, के जेणे पितानी आज्ञाथी पोताना प्राणथी पण अधिक वहाला नेत्रो गुमाव्या छे. " ते सांभळीने राजा हर्ष पामी स्नेहसहित आखा शरीरे रोमाच रुप कचुकने धारण करतो सतो ते कुमारने आलिंगन दइने बोल्यो के–" हु तारापर तुष्टमान छु. तारी इच्छा होय ते माग " ते बोल्यो के–" हु काकणी मागु छु बीजु कांइ मागतो नथी. " राजाए कह्यु–" हे वत्स ! तु महाबुद्धिमान छता केम आवु अत्यत तुच्छ मागे छे ? " ते वखते मधानो बोल्या के–" हे राजा ! राजपुत्रोने काकणी शब्दे करीने राज्य कहेवाय छे. " ते साभळीने राजाए तेने कह्यु के–" हे वत्स ! नेत्ररहित तु राज्य शी रीते करी शकीश ? " त्यारे ते बोल्यो के–" पिताश्रीना प्रसादथी पिताश्रीने पवित्र लक्षणोना पात्ररूप पौत्र थयो छे, तेने माटे राज्य मागु छु, मारे माटे मागतो नथी " ते साभळीने अत्यत हर्ष पामेला राजाए प्रेमसहित कुमारने पूछ्यु के–" हे वत्स ! हर्षना स्थानरूप ते पुत्र क्यारे जन्म्यो ? " कुमार बोल्यो के–" समति एव (हमणांज) " ते साभळीने अत्यत प्रीतिना उल्लासथी

पराधीन थयेलो राजा " समति पुत्रो जातः (हमणां पुत्र उत्पन्न थयो) समति पुत्रो जातः " एम वारवार मोटेथी बोलवा लाग्यो. पछी ते पुत्र दश दिवसनो थयो त्यारे तेने उत्कृष्ट उत्सवपूर्वक त्यां अणावीने अत्यंत प्रमोदथी पूर्ण थयेला राजाए ते पुत्रनुं " समति " नाम पाडी तेने राज्यपर स्थापन कर्यो. ते समति राजा त्रण खंडनो भोगवनार थयो अने परम श्रावक थयो तेणे " श्रीसुहस्ती " सूरिना उपदेशथी श्रीजिनमतना साम्राज्यने सर्व प्रकारे एक छत्र-रूप कर्युं हतुं.

॥ इति व्यञ्जनाधिक्ये आख्यानकम् ॥

अर्थने अन्यथा करवामां विशेषे करीने पूर्वे कहेलाज दोषो जाणवा. ते उपर दृष्टांत नीचे प्रमाणे—

" शुक्तिमती " नामनी पुरीमां " श्रीमुनिसुव्रत " स्वामीना वंशमां उत्पन्न थयेलो " अभिचंद्र " राजा राज्य करतो हतो. तेने सत्यवादीपणाथी प्रसिद्ध थयेलो " वसु " नामे पुत्र हतो ते गाममां परम श्रावक (जैन धर्मी) "कदंबक" नामना उपाध्याय रहेता हता ते पोताना " पर्वत " नामना पुत्रने, राजपुत्र " वसु " ने अने " नारद " नामना एक विद्यार्थीने शास्त्राभ्यास करावता हता एकदा अभ्यास करीने थाकी गयेला ते त्रणे विद्यार्थीओ राते प्रासाद उपर सुई गया हता. ते वखते आकाशमार्गे जता बे चारण मुनि परस्पर आ प्रमाणे बोल्या के–" आ त्रणे विद्यार्थीओमांथी एक विद्यार्थी स्वर्गे

जशे, अने बीजा बे नरके जशे. " ते वखते उपाध्याय जागता हता, तेमणे आ वृत्तांत सांभळीने खेद पामी विचार्युं के–" मने धिक्कार छे के हुं भणावनार छतां मारा बे शिष्यो नरके जशे. " पछी प्रातःकाळे "आ त्रणमांथी स्वर्गे कोण जशे ? अने नरके कोण जशे ?" तेनो निर्णय करवा माटे तेनी परीक्षा करवा दरेकने एक एक लोटनो कुकडो आपीने कह्युं के–" जे ठेकाणे कोइ पण न जुए तेवे गुप्त स्थाने आने मारीने लावो " ते सांभळीने वसु अने पर्वत ए बन्ने जणे जूदी जूदी दिशामां निर्जन प्रदेशमां जइने ते कुकडाने हण्यो अने नारद तो अत्यंत दूर शून्य स्थानमां गया छतां पण बुद्धिमान होवाथी विचार करवा लाग्यो के–"आ निर्जन स्थान छे,तो पण अहीं हुं देखुंछुं, देवो देखे छे, सिद्धो देखे छे तथा ज्ञानी पण देखे छे. जे स्थाने कोइ पण न देखे एवुं स्थान तो आखा विश्वने विषे कोइ पण नथी, तेथी खरेखर आ कुकडो अवध्य छे (वध करवा योग्य नथी) एवो गुरुनी वाणीनो अभिप्राय जणाय छे स्वभावथीज परम दयाळु एवा गुरुए जे अमने वध करवानो आदेश आप्यो छे, ते अमारी परीक्षा माटेज आप्यो जणाय छे " पछी अनुक्रमे ते त्रणे शिष्योए आवी पोत पोतानुं वृत्तांत गुरुने निवेदन कर्युं. ते सांभळीने उपाध्याये "नारद ज स्वर्गगामी छे. " एम निश्चय करीने तेने गौरवताथी आलिंगन कर्युं, अने बीजा बन्नेनी निंदा करी. पछी तेज कारणथी उत्पन्न थयेला वैराग्यथी उपाध्याये प्रव्रज्या ग्रहण करी. एटले तेना स्थान पर तेनो पुत्र पर्वतक बेठो. अनुक्रमे अभिचंद्र राजाए पण दीक्षा लीधी, तेथी तेनी गादीए-वसु राजा थयो. ते वसु राजा पोताना सत्यवादी-

पणाने प्रसिद्ध करवा माटे सत्य ज बोल्तो हतो

एकदा कोइ शिकारी विन्ध्याचळना पर्वतमां शिकार करवा गयो त्यां तेणे एक मृगपर तीर फेंक्युं. ते तीर वचमा ज स्खलना पाम्यु. ते जोइ आश्चर्य पामी ते शिकारी तीरनी पासे गयो. त्यां हस्तनो स्पर्श थवाथी " आ वचे स्फाटिकमणिनी मोटी शिला छे " एम तेणे जाण्यु पछी " आ शिला राजाने योग्य छे " एम विचारी तेणे वसु राजाने आ वात जणावी राजाए ते शिला लइने तेने सारु इनाम आप्यु.पछी राजाए शिल्पीओ पासे गुप्त रीते ते शीलानी आसनवेदिका करावीने ते शिल्पीओने मारी नाख्या पछी ते वेदिकाने पोताना सिंहासननी नीचे स्थापन करी अने " सत्यवादीपणाने लीधे तेनु सिंहासन आकाशमां निराधार रहे छे. " एवी पोतानी ख्याति सर्वत्र प्रसिद्ध करावी ते प्रसिद्धिने लीधे वसु राजाने देवता सानिध्य करेछे एवा भयथी सर्वे राजाओ तने आधीन थया.

एकदा पर्वतके पोताना शिष्योने भणावतां " अजैर्यष्टव्य (अज वडे यज्ञ करवो) " ए ऋग्वेदनी श्रुतिना व्याख्यानमां " अज एटले बकरावडे यज्ञ करवो " एवो अर्थ कर्यो ते सांभळीने तेने मळवा आवेलो नारद के जे तेनी पासे बेठो हतो ते बोल्यो के-" हे भाइ ! तु आवो अर्थ न कर. केमके जे वाव्या छतां पण उगे नहीं ते 'अज' कहेवाय छे, तेथी अहीं अज एटले त्रण वर्ष उपरांतनी डांगर (धान्य) लेवानी छे

आपणा गुरुए पण एमज कह्यु छे. माटे धर्मोपदेष्टा गुरुने तथा

धर्मप्रतिपादक श्रुतिने तुं अन्यथा न कर. " आ प्रमाणे बहु कह्या छतां पण पर्वतके अभिमानथी पोतानो आग्रह मूक्यो नहीं छेवटे तेमणे वाद करता जीव्हानो छेद करवानी[१] सरत करी, अने वसु राजाने साक्षी कर्यो. ते सांभळीने पर्वतकनी माताए एकांतमां पुत्रने कह्यु के— " हे पुत्र ! में पण तारा पिताने अज शब्दनो अर्थ त्रण वरसनु धान्य छे एम कहेता सांभळ्या छे, तेथी फोगट महा अनर्थकारी सरत शा माटे करे छे ? " ते सांभळीने ते बोल्यो के—" जे कर्यु ते कर्युं ज. हवे जेम घटे तेम उपाय करो " पछी पुत्रना मोहथी मोहित थयेली ते माताए पुत्रना हितने माटे वसुराजा पासे जइने तेने एकांतमां एवी रीते असरकारक कह्यु के जेथी गुरुपत्नीना दाक्षिण्यने लइने तेणीना कहेवा प्रमाणे ज अर्थ करवानु तेणे कबुल कर्युं. पछी प्रातःकाळे ते बन्ने सभामां जइ विवाद करवा लाग्या, अने तेना निराकरण माटे वसुराजाने पूछ्युं. ते वखते मोटा पापनो पण अनादर करीने राजाए खोटी साक्षी पूरी. अर्थात् अज शब्दनो अर्थ बकरो एम कर्यो. ते ज वखते देवताए तेने लात मारीने सिंहासन परथी पाडी दीधो. तरत ज ते मरीने नरके गयो. तेनी गादीए तेना पुत्रोने बेसाड्या. ते पण अनुक्रमे आठ पुत्रो देवताथी हणाया. केमके दैवी कोप दुःसह छे. तेना बे पुत्रो नाशी गया. पछी पुरना लोकोए पर्वतने धिक्कार आपी पुरमांथी काढी मूक्यो. तेने " महाकाळ " नामना असुरे आश्रय आप्यो

१ जे हारे तेनी जीव्हा कापवी एवी होड करी.

ते महाकाळनो सबंध एवो छे के—" अयोधन " नामना राजाए पोतानी पुत्रीनो स्वयंवर आरंभ्यो. ते वखते ते कन्यानी माताए कन्याने गुप्त रीते कह्यु के—" मारा भाईनो पुत्र जे ' मधुपिंग ' छे, तेने तु वरजे केमके ते बहु रूपवान तथा गुणी छे " आ वात सर्व राजाओमा मुख्य एवा " सगर " राजाए गुप्तपणे सांभळनारी एक दूतीना मुखथी जाणीने पोताना पुरोहितने ते कन्याने परणवानो उपाय पूछयो. त्यारे कपट करवामा चतुर अने शीघ्रकवि एवा ते पुरोहिते तत्काळ नवी राजलक्षण संहिता बनावीने सभामां एवी रीते ते प्रथनु व्याख्यान कर्यु के जेथी राजलक्षणोवडे सगर राजा उत्कृष्ट गणाय, अने मधुपिंग हीन गणाय ते सांभळीने सर्व राजाओवडे हांसी करातो मधुपिंग लज्जा पामीने सभामाथी जतो रह्यो, अने ते कन्याने सगर राजा परण्यो पछी मधुपिंग क्रोधथी तप करीने महाकाळ नामनो असुर थयो आ असुर अने पर्वतने त्रीजो " पिप्पलाद " पण मन्यो हतो

पिप्पलादनु वृत्तात एवु छे के—" सुलसा " अने " सुभद्रा " नामे बे परिव्राजिकाओ जगप्रसिद्ध हती तेमां मोटी सुल्सा घणीज विद्वान हती, तेथी तेणीए पडह वगडाव्यो हतो के—' जे कोइ मने वादमां जीते तेनी हु शिष्या थाउ, अने जो ते मने न जीते तो ते मारो शिष्य थाय."आ प्रमाणे प्रतिज्ञा करीने फरतां कोइ वखत तेणीने " याज्ञवल्क्य " नामना परिव्राजक साथे वाद थयो तेमां याज्ञवल्क्यनो पराजय करी तेणीए तेने पोतानो शिष्य कर्यो त्यार पछी अनु घणा परिचयने लीधे तेमनी अकार्यमां प्रवृत्ति थवाथी सुल्सा

गर्भवती थइ. ते वात सुभद्राए जाणी, त्यारे तेणीए तेणीने अत्यंत उपालभ आपी गुप्त राखी. अनुक्रमे तेणीने पुत्रप्रसव थयो, ते वखते सुभद्रा न जाणे तेम ते पुत्रने एक पीपळा नीचे मूकी ते बन्ने नाशी गया. प्रातःकाळे तेमनां पगलाने अनुसारे तेमनी शोध करतां सुभद्राए पीपळा नीचे पुत्रने जोयो ते पुत्र भूख्यो होवाने लीधे पीपळानु फळ पोतानी मेळे तेना मुखमा पड्यु हतु तेने चाटतो हतो, तेथी तेनुं " पिप्पलाद " एवु नाम पाडीने सुभद्राए पोताना आश्रममां राखी तेने वृद्धि पमाड्यो योग्य वयनो थयो त्यारे तेने भणाव्यो, तेथी ते घणो विद्वान थयो. एकदा तेणे पोतानी उत्पत्ति तथा मातपितानी वात सांभळी एटले ते अनार्ये मावाप पर द्वेष वहन करीने तेमनो वध करवा माटे अनार्य ग्रंथो रच्या. अने तेमां एवी प्ररुपणा करवा लाग्यो के—" राजाओए अश्वादिकनी शांति माटे अने स्वर्गादिकनी प्राप्ति माटे पशु, घोडा, हाथी अने मनुष्यादिक वडे यज्ञ करवो."

आ प्रमाणे तेनी प्ररुपणा जाणीने महाकाळे विचार्यु के—"जो आ पर्वतक अने पिप्पलादनी प्ररुपणाथी राजाओ यज्ञमां हिंसा करवा प्रवर्ते तो तेओ मरीने नरके जाय, अने तेम थवाथी सगरादिक राजाओ साथे जे मारे वैर छे तेनो बदलो वळे." एम विचारीने महाकाळे ते बन्नेने कह्यु के—" तमो बन्ने यज्ञमां हिंसानी प्रवृत्ति करो, हुं सर्वत्र तमारु सानिध्य करीश." एम कहीने महाकाळे पुर, ग्राम विगेरे सर्व ठेकाणे रोगनी उत्पत्ति करी पछी ज्या ज्या पर्वतक अने पिप्पले हिंसात्मक यज्ञ कराव्यो त्यां त्या ते असुरे रोगनी शांति करी

अने यज्ञमां हणेला पशुओने देवता थइने विमानमां बेठेला प्रत्यक्ष दे खाडया ते जोइने सर्वे सगर विगेरे राजाओ अत्यंत आदरवाळा थइ ते प्रमाणे यज्ञ करवा लाग्या. पछी निर्दय एवा ते बन्नेए धीमे धीमे मनुष्यनी हिंसा पण प्रवर्तावी पछी महाकाळे मायावडे मोहित करीने स्त्रीसहित सगर राजानो यज्ञमां होम कराव्यो, तथा पिप्पले पण पोताना मात पिताने शोधीने तेमनो यज्ञमां होम कर्या केमके ते ब न्नेनो आ कार्यने माटेज उद्योग हतो आ प्रमाणे महा अनर्थना हेतुरूप अनार्य वेदोनी प्रवृत्ति थइ आर्य वेदो तो चक्रीने त्यां हमेशा भोजन करता श्रावकोने भणवा माटे श्रीतीर्थंकरनी स्तुतिमय अने श्राद्ध धर्मनु प्रतिपादन करनारा माणवक निधिमाथी उद्धरीने भरत चक्रवर्तीए रचेला छे

आ प्रमाणे अर्थने अन्यथा करवा पर पर्वतकनु दृष्टांत छे व्य जन भने अर्थ ए बन्नेने अन्यथा करवामां आ कथामां कहेला अनार्य वेदना रचनार तथा ते अनार्यवेदनी व्याख्या करनार पिप्पला दनु दृष्टांत छे अथवा ' श्रीगुप्त " आचार्यना बे शिष्यो, नोजीवनी स्थापना करनार " त्रैराशिक रोहगुप्त " विगेरेना दृष्टांतो छे ते अन्य ग्रंथोथी जाणी लेवा

॥ इति षष्ठसप्तमाष्टमा ज्ञानाचारा॰ ॥

॥ इत्यष्टविधो ज्ञानाचार ॥

श्रीमद्यशोविजयोपाध्यायकृत

ज्ञानाष्टक ॥ ५ ॥

मज्जत्यज्ञ क्रियाज्ञाने, विष्टायामिव शूकरः ॥
ज्ञानी निमज्जति ज्ञाने, मराल इव मानसे ॥ १ ॥
निर्वाणपदमप्येकं, भाव्यते यन्मुहुर्मुहुः ॥
तदेव ज्ञानमुत्कृष्टं, निर्बंधो नास्ति भूयसा ॥ २ ॥
स्वभावलाभसंस्कार–कारण (स्मरणं) ज्ञानमिष्यते ॥
ध्यान्ध्यमात्रमतस्त्वन्य–त्तथा चोक्तं महात्मना ॥ ३ ॥
वादाश्च प्रतिवादांश्च, वदतोऽनिश्चितास्तथा ॥
तत्त्वान्तं नैव गच्छति, तिलपीलकवद्गतौ ॥ ४ ॥
स्वद्रव्यगुणपर्याय–चर्या वर्या परान्यथा ॥
इति दत्तात्मसंतुष्टि–र्मुष्टिज्ञानस्थितिर्मुने ॥ ५ ॥
अस्ति चेद् ग्रंथिभिज्ज्ञानं, किं चित्रैस्तंत्रयंत्रणैः ॥
प्रदीपाः क्वोपयुज्यन्ते, तमोघ्नी दृष्टिरेव चेत् ॥ ६ ॥
मिथ्यात्वशैलपक्षच्छिद्, ज्ञानदंभोलिशोभितः ॥
निर्भयः शक्रवद्योगी, नंदत्यानंदनंदने ॥ ७ ॥
पीयूषमसमुद्रोत्थं, रसायनमनौषधम् ॥
अनन्यापेक्षमैश्वर्यं, ज्ञानमाहुर्मनीषिणः ॥ ८ ॥

॥ रहस्यार्थ ॥

१ निर्मल ज्ञानवडे वस्तु तत्त्वनो निर्धार करीने जे सदाचारने सेवे छे तेज मोहनो विनाश करी शके छे, माटे निर्मळ ज्ञान गुण आ-

श्री हरिभद्रसूरिविरचित
ज्ञानाष्टकं ॥ ९ ॥

आठमा अष्टकमां कहेलुं भाव पच्चख्खाण ज्ञान विशेष होते छते थाय छे माटे ते ज्ञान विशेषने देखाडता थका कहे छे —

विषयप्रतिभास चा-त्मपरिणतिमत्तथा ॥
तत्वसंवेदन चैव, ज्ञानमाहुर्महर्षय ॥ १ ॥

अर्थ—महान् ऋषिओ विषयप्रतिभास, आत्मपरिणतिमत् तथा तत्त्वसंवेदन एवी रीते त्रण प्रकारनां ज्ञानो कहे छे १

टीकानो भावार्थ—विषय एटले कर्ण आदिक इंद्रिओना ज्ञानने गोचर एवा शब्दादिक, तेने जणावनारु जे ज्ञान तेने "विषयप्रतिभास" नामनुं ज्ञान जाणवुं (पण तेओनी प्रवृत्तिमां तेथी उत्पन्न थतो जे आत्माना अर्थ अनर्थनो स्वभाव तेने जणावनारु नहीं) अर्थात् आलोक संबंधी अने परलोक संबंधी छद्मस्थ ज्ञानना विषयरूप एवा अर्थोमां प्रवृत्तिने विषे, आत्माना तात्त्विक अर्थ अने अनर्थना प्रतिभासथी जे शून्य ते "विषयप्रतिभास" ज्ञान जाणवुं, ते ज्ञान मिथ्यादृष्टिओने होय छे, तथा आत्माना क्रियाविशेषथी थइ शके एवो जे परिणाम ते जेमां जणाय छे तेने "आत्मपरिणतिमत्" ज्ञान कहीए (पण तेने अनुरूप एवी प्रवृत्ति निवृत्ति जेमां न होय) ते ज्ञान अविरति एवा सम्यग् दृष्टिओने होय छे तथा जेथी परमार्थ जणाय अर्थात् हेय अने उपादेय पदार्थोथी निवृत्ति अने प्रवृत्ति

करनारु जे ज्ञान तेने "तत्त्व संवेदन" ज्ञान कहीए ते ज्ञान शुद्ध चारित्रीओने होय. एवी रीतना त्रणे ज्ञानो महा मुनिओए कहेलां छे अने ते त्रणे मत्यादि विशेषज छे.

हवे पहेला ज्ञाननु स्वरूप कहे छे—

विषकंटकरत्नादौ, बालादिप्रतिभासवत् ॥
विषयप्रतिभासं स्यात्, तद्धेयत्वाद्यवेदकम् ॥२॥

अर्थ–झेर, कांटा अने रत्नादिकोने विषे बाळकादिकना जाण पणानी पेठे हेयत्व आदिकनो निश्चय नहीं करावनारु "विषयप्रति-भास" ज्ञान होय. २

टीकानो भावार्थ—विष एटले अतिविष वच्छनाग आदिक तथा कंटक एटले बावळ आदिकना अवयवो (कांटाओ) विगेरे हेय पदार्थो तथा रत्न एटले मरकत मणि आदिक बीजी उपादेय वस्तुओ तेने विषे बाळ तथा अति मुग्धोनु जे ज्ञान, तेना सरखु "विषय प्रति-भास" ज्ञान होय. हवे ते "विषयप्रतिभास" ज्ञान बाळ आदिकना ज्ञान सरखु केम छे? ते कहे छे के–ते ज्ञान, ज्ञेय विषयोनु तजवापणु, तथा उपेक्षवापणुं जणावी शकतु नथी, अर्थात् बाल आदिकनु ग्रहण करवापणु ज्ञान, जेम विष आदिक विषयना रूप आदिकनेज जाणे छे,पण तेना हेयत्व आदिक धर्मने जाणतु नथी, तेम जे ज्ञान ग्रंथीभेद जेओने नथी थएलो एवा बहुश्रुतोने पण (तेओना) मोहथी मळीन थएला मनपणाए करीने, अतत्त्वोनी हेयतानो, तथा तत्त्वोनी उपादेयतानो विचार कराववामां असमर्थ होय, अर्थात् तत्त्व अने अतत्त्वने तुल्य

जणावनारु, अथवा उलटी रीते जणावनारु होय ते " विषय प्रतिभा स" ज्ञान कहेवाय. कह्यु छे के—

> विसयपडिभासमित्त, बालस्सेव खु रयणविसयमि ॥
> वयणाइएसु नाण, सव्वथ्थाणाण मोणेय ॥ १ ॥

हवे तेज ज्ञानने तेना चिह्न आदिकथी देखाडता थका कहे छे—

निरपेक्षप्रवृत्त्यादि, लिंगमेतदुदाहृतम् ॥
अज्ञानावरणापायं, महापायनिबन्धनम् ॥ ३ ॥

अर्थ-(पाप संबंधी)शंका विनानी प्रवृति आदिक छे चिह्न जेनु, तथा अज्ञानना आवरणनो नाश करनारु अने महा अपायना कारण रूप, ते " विषय प्रतिभास " ज्ञान कहेलु छे ३.

टीकानो भावार्थ—आ लोक अने परलोक संबंधी अपायोनी (दुष्ट कार्योनी) जे शंका, ते जेमाथी गयेली छे एवु जे प्रवर्त्तनादिक ते छे चिन्ह जेनु, तेने आतोए " विषय प्रतिभास " ज्ञान कहेलु छे ते शाथी थाय ते कहे छे "अज्ञान" केतां मिथ्यात्वना उदयथी दुषित एवां जे मति, श्रुत अने अवधि ज्ञान (विभंग ज्ञान) तेना आवरणनो छे क्षयोपशम जेमा एवु (मिथ्यादृष्टिओनु) जे मति, श्रुत अने अवधि ज्ञान (विभंग ज्ञान) ते अज्ञानज छे कह्यु छे के—

> अविसेसिया मइच्चिय, सम्मदिट्ठिस्स सा मइनाण ॥
> मइअन्नाण मिच्छा-दिट्ठिस्स सुयपि एमेव ॥१॥

" सम्यग् दृष्टिओनी जे बुद्धि ते ' मति ज्ञान ' छे अने मिथ्या-

दृष्टिनी जे बुद्धि ते 'मति अज्ञान' छे पण मतिमां कंइ फेरफार नथी. श्रुत ज्ञान ने श्रुत अज्ञान माटे पण ए ममाणेज समजवुं "

हवे ते " विषय प्रतिभास " ज्ञान शुं फळ आपे छे ? ते कहे छे ते पोताने अने परने आलोक अने परलोक संबंधी महा अपायोना केतां, महा कष्टोना कारणरूप थाय छे केमके तत्त्वथी ते अज्ञानज छे, अने अज्ञान छे ते महा अपायनुं कारण छे. कह्युं छे के—

अज्ञानं खलु भो कष्टं, क्रोधादिभ्योऽपि सर्वोपायेभ्यः ॥
अर्थं हितमहितं वा, न वेत्ति येनावृतो लोकः ॥ १ ॥

" अज्ञान छे ते, खरेखर क्रोधादिक सर्व अपायोथी पण कष्टकारी छे, केमके अज्ञानथी विंटाएलो माणस हित अथवा अहित कार्यने जाणी शकतो नथी."

हवे बीजा "आत्मपरिणतिमत्" ज्ञाननुं स्वरूप देखाडवा माटे कहे छे.

पातादिपरतन्त्रस्य, तद्दोषादावसंशयम् ॥
अनर्थाद्याप्तियुक्तं चा–त्मपरिणतिमन्मतम् ॥ ४ ॥

अर्थ–पतन आदिकथी परतंत्र थएला प्राणीने तेना दोषादिकने विषे संशय विनानुं तथा अनर्थ आदिकनी प्राप्तिवाळुं " आत्मपरिणतिमत् " ज्ञान मानेलुं छे ४

टीकानो भावार्थ—" पातादिपरतन्त्रस्य " केतां नीची अने ऊंची गति माटे परतंत्र थएला एटले विषय अने कषायादिके वश करेला प्राणीने, ते कषाय आदिकथी थता कर्मबंध अने दुर्गति आदिक

वस्तुतत्त्वना हेयपणा, उपादेयपणा अने उपेक्षणीयपणानो छे निश्चय जेमां एवुं छे ए " तत्त्व संवेदन " ज्ञान सम्यक प्रकारे पुरुषने, संघयण आदिकना सामर्थ्यने अनुसारे विरतिरूपी अनतर फळ तथा परंपराए मोक्षफळने देनारु छे. हवे ते ज्ञानना लिंगादिकने प्रतिपादन करता थका कहे छे–

न्याय्यादौ शुद्धवृत्त्यादि–गम्यमेतत्प्रकीर्तितम् ।
सज्ज्ञानावरणापायं, महोदयनिबंधनम् ॥ ७ ॥

अर्थ–मोक्ष मार्ग आदिकने विषे शुद्ध प्रवृत्ति आदिथी जे अनु मान कराय छे, तेने तत्त्व संवेदन ज्ञान कहेलु छे, तथा ते उत्तम ज्ञानना आवरणनो क्षयोपशम करनारु अने मोक्षना कारण रूप छे. ७.

टीकानो भावार्थ–नीति सहित एवा सम्यग् ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप जे मोक्षमार्ग तेने विषे अतिचार रहित प्रवृत्ति आदिके करीने जे ज्ञाननी अनुमिति थाय छे, तेने ज्ञानतु स्वरूप जा णनाराओए " तत्त्वसंवेदन " ज्ञान कहेलु छे, हवे ते ज्ञान केवा हेतु वाळु छे ? ते कहे छे के, उत्तम एवु जे आभिनिबोधादिक ज्ञान, तेना आवरणना क्षयोपशमथी थनारु अने निर्वाणना कारणरूप फळने देनारु छे

आ अष्टकने संपूर्ण करता थका उपदेश कहे छे–

एतस्मिन् संततं यत्नः, कुग्रहत्यागतो भृशम् ॥
मार्गश्रद्धादिभावेन, कार्य आगमतत्परैः ॥ ८ ॥

अर्थ–आगमना वचनोमां तत्पर एवा माणसोए कदाग्रह तजीने उपर कहेला तत्त्वसंवेदन ज्ञानमां, मोक्षमार्गमां श्रद्धादिक भावे करीने हमेशां खुब यत्न करवो. ८

टीकानो भावार्थ–उपर कहेला तत्वसंवेदन ज्ञानमां हमेशां आदर करवो, केवी रीते करवो ? ते कहे छे के जेथी शास्त्रने बाध आवे एवा कदाग्रहने तजीने यत्न करवो; शावडे करवो ते कहे छे के, मोक्ष मार्गमां श्रद्धा, तेनुं ज्ञान, अने तेनी सेवनाथी यत्न करवो. हवे ते कोणे करवो ? ते कहे छे के, आप्तनां वचनमां तत्पर थएला एवा माणसोए करवो.

नवमा ज्ञानाष्टकनु विवरण समाप्त



पंडित श्री रूपविजयजी कृत

श्री पंचज्ञाननी पूजा.

पूजा १ ली.

दुहा.

सकळ कुशल कमळावली, भापक भाण समान;
श्रीशखेश्वर पासना, चरण नमी धरी ध्यान. १
कर्मतिमिरभर टाळवा, ज्ञान ते अभिनव सूर,
ज्ञानी ज्ञानबळे लहे, स्वपर स्वभाव पडूर. २
श्रद्धामूळ क्रिया कही, तेहतु मूळ ते ज्ञान,
तेहथी शिवसुख बहु जना, पाम्या धरी एक तान ३
असंख्य भेद किरीयातणा, भाख्या श्री अरिहंत,
ज्ञानमूळ सफळा सवे, पंच भेद तस तंत ४
मइ सुअ ओहि मणपज्जवा, पंचम केवळ जाण,
पूजा करतां तेहनी, लहीए पंचम नाण ५
जाणे केवळे केवळी, श्रुतथी करे वखाण,
चउ मुगा श्रुत बोलतु, भाखे त्रिभुवनभाण ६
पंच ज्ञान अनुक्रमे लही, जेह थया अरिहंत,
अष्टप्रकारे पूजतां, लहीए ज्ञान अनंत ७

ढाल

झुमखडानी देशी

परमपुरुष परमातमारे, पुरसादाणि पास, जिनेसर पूजीए.

जळ चंदन कुसुमे करीरे, पूजो धरी उल्लास. जि० १
जास पसाये निरमळुरे, प्रगट होये मइनाण; जि०
भेद अठ्ठावीश तेहनारे, समजो चतुर सुजाण जि० २
द्रव्य क्षेत्र काळ भावथीरे, चउदहा छे मइनाण; जि०
द्रव्यथी मइनाणी लहेरे, द्रव्य छक्क परिमाण. जि० ३
क्षेत्रथी लोकालोकनेरे, काळथी तिविहा काळ, जि०
भावथी पांचे भावनेरे, जाणे आदेशे रसाळ जि० ४
जिन उत्तम मुखपद्मनीरे, वाणि सुणी लहे बोध; जि०
शुद्ध चिदानंद रूपथीरे, करी निज आतमशोध जि० ५

काव्यम्

अष्टाविंशतिधा मतिश्रुतमपि मोक्ष मनुसम्मितम् ।
षोढा चावधि रूपिद्रव्यविषय ज्ञान निदान श्रिया ॥
श्रीमनपर्यवसंज्ञिक च द्विविध कैवल्यमध्येतिकम् ।
ज्ञानं पंचविधं यजेह मनिशं सिद्ध्यंगनाराधनम् ॥ १ ॥

ॐनमो ज्ञानाय लोकालोकप्रकाशकाय, नवतत्त्वस्वरूपाय, अनंत द्रव्यगुणपर्यायमयाय, मति श्रुतावधिमनःपर्यव केवलज्ञानाय, जल १, चंदन २, पुष्प ३, धूप ४, दीप ५, अक्षत ६, नैवेद्य ७, फळ ८ यजामहेस्वाहा ॥

आ काव्य तथा मंत्र दरेक पूजाए कहेवु

गीत (दुहा.)

एक जीव अंगीकरी, छासठ सागर ठाण,
अंतरमुहूर्त जघन्यथी, वरते थिर मइनाण. १

ढाळ

(चदजसा जिनराजीया, मनमोहनमेरे–ए देशी)

श्री जिनराजनी पूजना, मनमोहन मेरे, करीं थीर मन करी सार, मन०
धूप दीप अक्षत धरी, मन० नैवेद्य फळ मनोहार. मन० १
श्रुतवासित (निश्रित) मतिज्ञाननना, मन० भेद अठ्ठावीश जोय; मन०
अश्रुयनिश्रिय मइतणी, मन० चउहा बुद्धि होय. मन० २
श्रोत्र घ्राण रस फरसथी, मन० व्यंजनावग्रह चार, मन०
अथ्युग्गह ईहा वळी, मन० अपाय धारणा सार. मन० ३
पंच इंद्री मन मेळतां, मन० चावीश भेद सुहाय; मन०
अठावीस भेद उभय मळी, मन० भाखे श्रीजिनराय. मन० ४
अणसे छत्रीश पण कह्या, मन० श्रुतानिश्रित मइ भेद, मन०
श्री जिनवर सेवाथकी, मन० पाप ताप होय छेद मन० ५
समकित मइ श्रुत सपजे, मन० अण्ये एके काळ, मन०
जिन उत्तम पद पद्मनी, मन० सेवना रूप रसाळ मन० ६

इति श्रीमतिज्ञानपूजा १

पूजा २ जी

दुहा

श्रुतअक्षर एकेकना, स्वपर भाग विचार,
करता पज्जवनी कही, राशि अनंती सार. १
सरधावंत सुसयमी, गुरुकुळवासी साध,
श्रुत अभ्यास करी भजे, तरे ससार अगाध. २

ढाळ.

[नलिनावति विजये जयकारी]

जिनवर जगगुरु जगउपगारी, पूजो भावे नरनारीरे; श्रुतना अधिकारी.
जिनवर भगते सरघा आवे, तेहथी श्रुतरस बहु पावेरे. श्रु० १
छासठ सागर सुअथिति जाणो, एक जीव उकिठ्ठ प्रमाणेरे; श्रु०
अनादि अनत प्रवाहथी जाणो, सेवो श्रुत अनुभव आणोरे. श्रु० २
चउ भेद सुअनाणना सार, भाखे जिनवर गणधाररे, श्रु०
अहवा वीश भेद पण जाणो, थिर सरधा हिअडे आणोरे श्रु० ३
अर्थथी श्री अरिहते वखाण्यु, सूत्रे गणधर विरचाणुरे, श्रु०
ए श्रुत भावधर्म दातार, पूजो लहो भवजळ पाररे. श्रु० ४
श्रुतदायक जिनराजने ध्यावो, जीम अतिशय ज्ञानने पावोरे; श्रु०
श्रुतफळ विरति विरतिफळ ध्यान, ध्याने कहे समयीक ज्ञानरे. श्रु० ५
खिमाविजय जिन उत्तमज्ञाने, शिवसुदरी वरे एकताने रे, श्रु०
श्री गुरु पदपद्मे दिल राखे, चिद्रूपविजय सुख चाखेरे. श्रु० ६

काव्य तथा मत्र पूर्ववत् बोलवा.

गीत (दुहा)

श्रुतथी सरधा थिर रहे, सरधाथी व्रत सार;
व्रतथी शिवसुख पामीए, तिणे श्रुत जगदाधार. १
श्रुतविण जे किरिया करे, ते ससारनु मूळ;
श्रुतउपयोगे जे क्रिया, ते शिवपद अनुकूळ. २

ढाळ.

(मुने कांइक कामण कीधुरे, पाछा वळजो सामळीया,
मारु चित्तडु चोरी लीधु रे, पाछा० ए देशी.)

तुमे आगम पूजा करजोरे,
हो मनमान्या मोहनीया हो.
तुमे भवसायरने तरजोरे; हो.
ए आगम अमृतदरीओरे. हो
ए तो स्याद्वाद रस भरीयोरे. हो. १
सुत्र अग अनग प्रकारेरे, हो
तिम बद्ध अबद्ध विचारेरे, हो
कालिक उत्कालिक जाणोरे, हो.
दोय भेद कहे जिनभाणोरे. हो. २
अग्यार अंग मनरंगेरे, हो.
श्रुत पूजो अधिक उमंगेरे, हो
वळी बार उपांग रसाळारे, हो
पूजी लहो मंगळमाळारे. हो ३
पयन्ना दश गुणखाणीरे, हो
प्रत्येकबुद्ध मुनि वाणीरे, हो
खट छेदसूत्र गुणभरीयारे, हो
ए तो चरण करण गुण दरीयारे. हो. ४
मूळसूत्र चार अनुसरजोरे, हो.

संसारसमुद्रने तरजोरे, हो.
नंदी ने अनुयोगद्वारोरे, हो.
पूजी लहो भवजळपारोरे. हो ५
भावपूजा पंच प्रकारोरे, हो
द्रव्यपूजा भेद अपारोरे, हो.
प्रभुवदनपद्मनी वाणीरे, हो.
चिद्रूप सुधारस खाणीरे. हो. ६

इति श्रुतज्ञानपूजा २

पूजा ३ जी.

अवधिज्ञान आराधतां, करजो त्रिकरण जोग,
भावविशुद्धि चित्त धरी, टाळो कर्मना रोग १
त्रणज्ञानधर जिनवरा, त्रिभुवनने हितकार;
पूजी पदकज तेहना, पामो भवजळपार. २

ढाळ

[घेर आवेने नेम वरणागियारे—ए देशी]

हांरे वाला भावभगति मनमां धरी, जिन पूजा करो मन संवरीजीरे;
भावे पूजोरे मनमोहना.
हांरे वाला खय उपशम भावे करी, परणति करी ज्ञानरसे भरीजीरे. भा १
त्रणज्ञानी जिनराजीया, विलसे निज गुण सत्ता भरीजीरे; भा०
अनुगामी प्रमुहा लहो, खट भेद ओहिना दिल धरीजीरे भा० २
जनम समे जिनराजने, चळे आसन सुरना थरहरीजीरे; भा०

अहो अशुद्ध न्यूनाधिकारे, म० सेनथी जाणे दोयरे; ज०
पल्य असंख्य भाग काळथीरे, म० गति आगति लहे सोयरे ज० ४
खमण दमण गुणसागरुरे, म० जिन उत्तम महाराजरे, ज०
तस पदपद्मने पूजतांरे, म० लहो चिद्रूपसमाजरे. ज० ५

काव्य तथा मन्त्र पूर्ववत् बोलवां.

गीत (दुहा)

अलख असंग अभंग जस, जोगाराधन खास,
संयमतणी विशुद्धता, करी तोडे भवपास. १
चरण करण गुणआगरा, सरधावंत सुधीर,
मणपज्जवनाणी मुणि, नमतां टळे भवपीर. २

ढाळ.

(अनेहारे गोकुळ गोंदरेरे—ए देशी.)

अनेहारे संयमठाण विशुद्धतारे, अप्रमत्त गुणठाण,
फरसी पासभ्रष्ठ ल्हारे, मणपज्जव वरनाण
पूजा करो जिनराजनीरे—ए टेक. १
अनेहारे संजमठाण अनन्तारे, लब्धी अद्दिठाण,
फरसता शुद्ध संयम गुणेरे, ध्याये धर्मनुं झाण पू० २
अनेहारे आणा अपाय विपाकथीरे, संठाण विचय मकार,
ध्याता ध्यान सोहामणुरे, साध्यपदे मनोहार पू० ३
अनेहारे अप्रमत्तगुण भूमिकारे, आलम्बन ग्रही चार,
दसधा संयम पाळतांरे, भावदया भडार. पू० ४

अनेहांरे भावथकी मनोद्रव्यनारे, लहे परजाय अनत;
गुणश्रेणी पगयालिएरे, नित चढता भगवत. पू० ५
अनेहांरे खिमाविजय जिनराजनारे, उत्तम ए अवदात;
तस पदपद्म पूजा करीरे, लहो चिद्रूप विख्यात. पू० ६

इति मनःपर्यवज्ञानपूजा ४.

पूजा ५ मी.

दुहा.

सकल विभाव उपाधिना, कारक घाति चार;
क्षय करी केवळ पामिया, जिनवर जगदाधार १
पूजो ध्यावो ध्यानमां, सोहपद करो जाप;
चिदानद पद सपजे, होय ध्येयपद आप २

ढाळ.

(चक्री भरत नरेसरुरे, सांभळी देशना तात; सलुणा–ए देशी.)
वीतराग परमातमारे, खीणमोहि अरीहंत; सलुणा
खपक श्रेणि अंगीकरीरे, करी घाति चउ अंत. स०
पचम ज्ञानने पूजीएरे, पचम गति दातार. स० १. ए आकणी.
केवळ कमळाने वर्यारे, केवळ दरीसण साथ, स०
लोकालोक प्रकाशतारे, जे थया त्रिभुवन नाथ स० २
चारे ज्ञानतणी प्रभारे, एहमा सयल समाय, स०
तारा उडु× ग्रह चंद्रनीरे, भा+ रविमां लय थाय. स० ३

×नक्षत्र +कांति.

एक समे आरिहा गुणेरे, खट द्रव्य गुण परजाय, स०
अनत विरजनी शक्तिएरे, व्यापकता ते उराय स० ४
ज्ञेय प्रमाणे ज्ञाननारे, अहवा छे परजाय, स०
वृहत्कल्पना भाष्यमारे, कहे सोहम गणराय. स० ५
केवळज्ञानकळा भर्यारे, जिन उत्तम महाराज, स०
तस पदपद्मनी पूजनारे, करता चिद्रूपराज. स० ६

काव्य तथा मत्र पूर्ववत् कहेवा.

गीत (दुहा.)

शम१ दम २ उपरति३ नित करे, चोथी तितिक्षा४ सार;
समाधान ५ श्रद्धा ६ करी, कहे केवळ चिद्र फार. १
परमज्योति पावनकरण, परमातम परधान,
केवळज्ञान पूजा करी, पामो केवळज्ञान २

ढाळ

(वारी जाउ श्री अरिहतनी—ए देशी.)

पूजा श्री अरिहतनी, करीए धरीए एकतान, मोहन,
नागकेतुपेरे निरमली, पामो केवळज्ञान मोहन पू० १
पूजकपूज्यनी पूजना, करता पूज्य ते थाय, मो०
केवळकमळा पामीने, अजरामर पद ठाय. मो० पू० २
बध उदय उदीरणा, सत्ता कर्म खपाय, मो०
सिद्ध बुद्ध परमातमा, अकळ असग अमाय मो० पू० ३

ज्ञानानदी आतमा, पामी महोदय ठाय; मो०
सादि अनंत सुख अनुभवे, वाच्य अगम्य कहाय मो० पृ० ४
अनत गुणी केवळी प्रभु, श्रीसंखेश्वर पास मो०
तस पदपद्म पूजन करी, लहो चिद्रूप उल्लास. मो० पृ० ५

इति केवळज्ञान पुजा ५.

कळश.

राग धनाश्री

पूजो पूजो रे भवि पच ज्ञान नित पूजो; पंचज्ञान पूजन सम घटमां,
ओर न साधन दूजोरे भवि० १
मइ सुअ ओहि ने मनपर्यव, केवळ पंचम जाणो;
अठावीश चउदस खट दुग इग, भेद प्रमाण वखाणोरे भ० २
ज्ञान आराधन साधन सिद्धिनु, साधी कर्म खपाया,
केवळकमळा पामी अनंती, सिद्धिए सिद्ध सुहायारे भ० ३
ज्ञान ज्ञानीनी सेवा करता, चिर सचित अघ जाय,
पुन्य महोदय कमळा विमळा, घटमा परगट थायरे भ० ४
श्री विजयदेव सूरीश्वर पाटे, विजयसिंह सूरिराया,
तास शिष्य श्री सत्यविजय गणि, संवेग मारग ध्यायारे. भ० ५
शिष्य कपूर खिमा जिन उत्तम, विजयपदे सोहाया,
श्री गुरु पद्मविजय पदपकज, नमतां श्रुत नहु पायारे. भ० ६
ऋपि गज दिग्गज चद संवत्सर, ज्ञान भगति मन लाया,
नेमीश्वर कल्याणक दिवसे, पचज्ञान गुणगायारे भ० ७

तपगच्छ विजयार्दिणेंद्र सूरीश्वर, दीपे तेज सवाया,
तस राज्ये भविजन हितकाजे, रूपविजय गुणगायारे   भ० ८

काव्यम्

ज्ञान स्यात् कुमतांधकारतरणिर्ज्ञान जगल्लोचन ।
ज्ञान नीतितरंगिणीकुलगिरिर्ज्ञान कषायापहम् ॥
ज्ञान निर्वृतिवस्समयममल ज्ञान मन.पावन ।
ज्ञान पचविध यजेहमनिश स्वर्गापवर्गप्रदम् ॥ १ ॥
ॐ नमोज्ञानाय लोकालोकप्रकाशकाय०

जल १, चदन २, पुष्प ३, धूप ४, दीप ५, अक्षत६, नैवेद्य७, फल ८ यजामहे स्वाहा

अथ विधि

एक पीठउपर पवित्रपणे कुकुमना ५१ साथीया करीए, ते उपर अक्षत पुरीए, ते उपर नागरवेलना पत्र एकेक मूकीए, ते उपर सो पारी बदाम पैसो फल फूल नैवेद्य मूकीए, ५१ दीवा करीए, ५ नाळीएर मूकीए, घी खांड सहित पच गोळक थापीए,त्रिवेदिकापीठ थापी स्वस्तिक करी अक्षत फळ धरीए, पचतीर्थीनी प्रतिमा थापीए, पछे स्नात्र भणावीए, पछी पूजा भणावीए, पहेली पूजाना २८ साथीआ, बीजीना १४, त्रीजीना ६, चोथीना २, पांचमीनो १ साथीओ नदावर्तनो करीए. श्रीफळ मूकीए, एनो पांच पीठ थापीए न होय तो एक मोटा पीठ उपर भेळा ५ थापीए

इति श्री पचज्ञान पूजाविधि सपूर्ण

गाथा ८९–ढाळो–११ श्लोक १५०



श्री विजयलक्ष्मीसूरिकृत वीशस्थानकनी पूजामांथी

॥ ज्ञानपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

अध्यात्म ज्ञाने करी, विघटे भव भ्रम भीति ॥
सत्य धर्म ते ज्ञान छे, नमो नमो ज्ञाननी रीति १ ॥

॥ ढाळ ॥

श्रेणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥

ज्ञानपद भजिये रे जगत सुहंकरु, पाच एकावन भेदेरे ॥
सम्यग ज्ञान जे जिनवर भाषियो, जडता जननी उच्छेदे रे ॥
॥ ज्ञान० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥
भक्षाभक्ष विवेचन परगडो, क्षीर नीर जेम हंसो रे ॥
भाग अनंतमो रे अक्षरनो सदा, अप्रतिपाति प्रकाश्यो रे॥ ज्ञा० ॥ २ ॥
मनथी न जाणे रे कुंभकरण विधि, तेहथी कुंभ किम थाशे रे ॥
ज्ञान दयाथी रे प्रथम छे नियमा, सदसद्भाव विकासेरे ॥ज्ञा०॥३॥
कंचन नाणु रे लोचनवंत लहे, अंधो अंध पलायरे ॥
एकांतवादीरे तत्त्व पामे नही, स्याद्वाद रस समुदायरे ॥ ज्ञा० ॥ ४॥
ज्ञान भर्या भरतादिक भव तर्या, ज्ञान सकळ गुण मूळरे॥
ज्ञानी ज्ञानतणी परिणतिथकी, पामे भवजल कूळरे ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥
अल्पागम जइ उग्र विहार करे, विचरे उग्रमवतरे ॥
उपदेशमाळामां किरिया तेहनी, कायक्लेश तस हुंतरे ॥ ज्ञा० ॥६॥
जयंत भूपो रे ज्ञान आराधतो, तीर्थंकर पद पामेरे ॥
रवि शशी मेहपरे ज्ञान अनंत गुणी,सौभाग्यलक्ष्मी हितकामेरे॥ज्ञा०॥७॥
ज्ञानपद पूजा अष्टमी ॥ ८ ॥

॥ अभिनव ज्ञानपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

ज्ञानवृक्ष सेवो भविक, चारित्र समकित मूल ॥
अजर अमर पद फल लहो, जिनवर पदवी फूल ॥ १ ॥

॥ ढाळ ॥

कोइलो पर्वत धुधळोरे लोल ॥ ए देशी ॥
अभिनव ज्ञान भणो मुदारे लाल, मूकी प्रमाद विभाव रे, हु वारी लाल॥
बुद्धिना आठ गुण धारिये रे लाल, आठ दोषनो अभाव रे ॥
हु वारी लाल, प्रणमो पद अढारमु रे लाल ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥
देशाराधक किरिया कहीरे लाळ, सर्वाराधक ज्ञान रे ॥ हु० ॥
मुहूर्तादिक किरिया करे रे लाल, निरंतर अनुभव ज्ञान रे॥हु०प्र०॥२॥
ज्ञानरहित किरिया करे रे लाल, किरियारहित जे ज्ञान रे ॥ हु० ॥
अंतर खजुआ रवि जिस्यो रे लाल, षोडशकनी ए वाणरे॥हु॥०प्र० ॥३॥
छट्ठ अट्ठमादिक तप करी रे लाल, अज्ञानी जे शुद्ध रे ॥ हु० ॥
तेहथी अनंत गुणी शुद्धतारे लाल, ज्ञानी प्रगटपणे बुद्ध रे ॥हु०प्र०॥४॥
साचे न जूठ किरिया करी रे लाल, ज्ञानवंत जुवो युक्ति रे ॥ हु०॥
जूठ साच आतमज्ञानथीरे लाल, परखे निज निज व्यक्ति रे॥हु०प्र०॥५॥
पांच भेद छे ज्ञानना रे लाल, तेह आराधे जेह रे ॥ हु० ॥
सागरचंद परे प्रभु हुवेरे लाल, सौभाग्य लक्ष्मी गुणगेहरे ।हु०प्र०॥६॥
॥ इति अभिनव ज्ञानपद पूजा अष्टादशी ॥ १८ ॥

॥ श्रुतपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

वक्ता श्रोता योगथी, श्रुत अनुभव रस पीन ॥
ध्याता ध्येयनी एकता, जय जय श्रुत सुख लीन ॥ १ ॥

॥ ढाळ ॥

अविनाशीनी सेजडीए रंग, लाग्यो मारी सजनी जीरे ॥ ए देशी ॥
श्रुतपद नमिये भावे भविया ! श्रुत छे जगत आधारजी ॥
दुःसम रजनी समये साचो, श्रुत दीपक व्यवहार ॥ श्रुतपद नमियेजी
॥ ए आकणी ॥ १ ॥
सर्वीश दोषरहित प्रभु आगम, आठ गुणे करी भरियुंजी ॥
अर्थथी अरिहंतजीए प्रकाश्युं, सूत्रथी गणधर रचियु ॥ श्रु० ॥ २ ॥
गणधर प्रत्येकबुद्धे गुंथ्यु, श्रुतकेवली दश पूर्वीजी ॥
सूत्र राजासम अर्थ प्रधान छे, अनुयोग चारनी उर्वी ॥ श्रु० ॥ ३ ॥
जेटला अक्षर श्रुतना भणावे, तेटला वर्ष हजारजी ॥
स्वर्गना सुख अनंता विलसे, पामे भवजल पार ॥ श्रु० ॥ ४ ॥
केवलथी वाचकता माटे, छे सुअनाण समत्थजी ॥
श्रुतज्ञानी श्रुतज्ञाने जाणे, केवली जेम पयत्थ ॥ श्रु० ॥ ५ ॥
काल विनय प्रमुख छे अडविध, सूत्रे ज्ञानाचारजी ॥
श्रुतज्ञानीनो विनय न सेवे, तो थाये अतिचार ॥ श्रु० ॥ ६ ॥
चउद भेदे श्रुत वीश भेदे छे, सूत्र पिस्तालीश भेदेजी ॥
रत्नचूड आराधतो अरिहा, सौभाग्य लक्ष्मी सुख वेदे ॥ श्रु० ॥ ७ ॥

॥ इति श्रुतपद पूजा एकोनविंशतिः ॥ १९ ॥

॥ श्रुत ज्ञानपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

पाप तापके हरणको, चदन सम श्रुतज्ञान ॥
श्रुत अनुभव रस रातीए, माचिये जिन गुण तान ॥ १ ॥
इगुणविश (१९) पद पूजीए, जिनवर वचन अभग ॥
तीर्थंकर पद भवि लहे, छार कुमतिको सग ॥ २ ॥

ढाळ

॥ राग श्याम कल्याण ॥

श्री राधेराणी दे डारो ने, बांसरी हमारी ॥ श्री राधे० ॥ ए देशी
श्री चिदानद विडारोने, कुमति जो मेरी ॥ श्री० ॥ ए आंकणी ॥
दूषम कालमें कुमति अधरो, प्रगट करे सब चोरी ॥ श्री० ॥१॥
बत्तीस दोषरहित श्रुत वांचे, आठ गुणे करी जोरी ॥ श्री० ॥२॥
अरिहत गणधर भाषित नीको, श्रुत केवली बल फोरी॥ श्री० ॥३॥
प्रत्येकबुद्ध दश पूरवधर, श्रुत हरे भवकोरी ॥ श्री० ॥४॥
आठ आचार जो कालादिक है, साधे करमकी चोरी ॥ श्री० ॥५॥
चारोंहि अनुयोग गुरुगम वांचे, टूटे कुपथकी दोरी ॥ श्री० ॥ ६ ॥
चौद भेद श्रुत वीश भेद है, अग पयन्ना कोरी ॥ श्री० ॥ ७ ॥
रत्नचूड नृप ए पद सेवी, आतम जिनपद होरी ॥ श्री० ॥ ८ ॥

॥ इति एकोनविंशति पूजा ॥ १९ ॥

श्री यशोविजयोपाध्यायादि विरचित नवपदनी पूजामांथी

॥ सम्यग् ज्ञानपद पूजा. ॥

॥ काव्यं, इन्द्रवज्रा वृत्तम् ॥

अन्नाण संमोह तमोहरस्स, नमो नमो नाण दिवायरस्स ॥

॥ भुजंग प्रयात वृत्तम् ॥

होये जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधे, यथावर्ण नासे विचित्राववोधे ॥
तेणे जाणीए वस्तु षड्द्रव्य भावा, न हुये वितत्या (वाद) नीजेच्छा स्वभावा ॥ १ ॥
होये पंच मत्यादि सुज्ञान भेदे, गुरूपास्तिथी योग्यता तेह वेदे ॥
वळी ज्ञेय हेय उपादेय रूपे, लहे चित्तमां जेम ध्वांत प्रदीपे ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ उलालानी देशी ॥

भव्य ! नमो गुण ज्ञानने, स्वपर प्रकाशक भावेजी ॥
परजाय धर्म अनंतता, भेदाभेद स्वभावेजी ॥ १ ॥

॥ उलालो ॥

जे मुख्य परिणति, सकल ज्ञायक, बोधभाव विलच्छना ॥
मति आदि पंच, प्रकार निर्मल, सिद्धसाधन लच्छना ॥
स्याद्वाद संगी, तत्त्वरंगी, प्रथम भेदाभेदता ॥
सविकल्प ने, अविकल्प वस्तु, सकल संशय छेदता ॥ २ ॥

मुनिराज श्री आत्मारामजीकृत नवपदजीनी पूजा· मांथी सम्यग् ज्ञान पद पूजा.

॥ दोहा ॥

मिथ्या मोह कुपथ ही, अज्ञ तिमिर करे दूर ॥
निज पर सत्ता सहु छहे, ज्ञानहि निर्मल सूर ॥ १ ॥

॥ राग भैरवी ॥ लागी लगन कहो ॥ यह चाल॥

ज्ञान सुहकर चिद्घन संगी, सप्तभंगी मत सारेरे ॥अचलो० ॥
शुद्ध ज्ञान मिथ्यात्व मिटसें, ज्ञानावरण विडारेरे ॥
परद्रव्य नाना बोध स्वरूपे, निज इच्छा सब धारेरे ॥ ज्ञा० ॥ १॥
गुरु सेवासें योग्यता प्रगटे, हेय उपादेय कारेरे ॥
ज्ञेय अनंत स्वरूपे भासे, दीप तिमिर जिम टारेरे ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥
नित्यानित्य नाश अविनाशी, भेदाभेद अभंगीरे ॥
एक अनेक रूपही अरूपी, स्याद्वाद नय संगीरे ॥ ज्ञा० ॥३ ॥
अर्पितानर्पित मुख्य गौणता, साधन सिद्ध विरंगीरे ॥
वाच्यावाच्य सभंग निरखी, आनंदघन दुःख रंगीरे ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥
विभाव स्वभावी शुद्ध स्वभावी, वीतराग जड संगीरे ॥
संशय सर्वही दूर निवारे, आतम समरस चंगीरे ॥ ज्ञा० ॥५॥

॥ दोहा ॥

सूत्र सपुत सूचीवत्, कचवर पिंड मझार ॥
विनसे नही तिम श्रुतयुत, पावे भवनो पार ॥ १ ॥

॥ कफन खोल देउं महाराज ॥ यह चाल ॥

सबमें ज्ञानवत वडवीर, काटे सकल कर्मजंजीर ॥ अचली ॥
भक्ष्याभक्ष्य न जे विन जाने, गम्यागम्य नहिं पिछाने ॥
कार्याकार्य न जाने कीर ॥ स० ॥ १ ॥
प्रथम ज्ञानही दया पिछाने, अज्ञानी सरमो नही जाने ॥
अैसे कहे सिद्धांते वीर ॥ स० ॥ २ ॥
श्रद्धा सकळ क्रियाका मूल, तिसका मूलहीं ज्ञान अमूल ॥
सच्चा ज्ञान धरो मन धीर ॥ स० ॥ ३ ॥
पच ज्ञानमें श्रुत प्रधान, स्वपर प्रकाशे तिमिर मिटान ॥
जगमें अति उपगारी हीर ॥ स० ॥ ४ ॥
लोकालोक प्रकाशनहारा, त्रिभुवन सिद्धराज सुखकारा ॥
सत् चिद् आत्मराम गभीर ॥ स० ॥ ५ ॥

इति सप्तमी पूजा.

पन्यासजी श्री गंभीरविजयजीकृत नवपदजीनी पूजामांथी ज्ञानपदनी

पूजा ७ मी

दुहा.

निबिड अज्ञान तिमिर हरी, प्रकाशे वस्तु मात्र;
नमो नमो ज्ञानदिनपति, उदयो दिन ने रात्र. १

यथोचित आवरण नाश जे, शुद्ध ज्ञान सुबोध;
षद्द्रव्य ज्ञान प्रकाशवा, हेतु ज्ञान सुबोध २
वितथवाद जेमां नहिं, न इच्छावाद बनाव,
मति आदे पण ज्ञान ते, वदे नित सद्भाव ३
गुरु सेवी लहे योग्यता, निज घट देखे सदैव,
ज्ञेय हेय उपादेय ते, तम गत घट ज्यु दीव ४

॥ ढाळ १ ली. ॥

राग धनाश्री. (भूल्यो भमत कहा ये अजान—ए चाल.)

ज्ञानहि नमन धनांत सुज्ञान, ज्ञा०
स्वपर भाव प्रकाशी दिखावे, पर्याय अनंत विधान. ज्ञा० १
भेदाभेद स्वभावनो ग्राही, परिणति मुख्य विज्ञान ज्ञा० २
ज्ञापक सकळ पदारथ भाव, निर्मळ पचहि ज्ञान ज्ञा० ३
साधन साध्य उभय निरधारे, सशय तमहर भान. ज्ञा० ४
स्याद्वादमय वस्तु जणावे, विशेष सामान्य विधान ज्ञा० ५

॥ ढाळ २ जी ॥

(तुम चिद्घन चद आनद लाल, तोरे दरिसणकी बलीहारी—ए राग)

जिनज्ञान सकळ आधार सार, नमुं नित नित बे कर जोरी. जि० १
भक्ष्य अभक्ष्य न जे विनु जाने, पेय अपेय न धारी. जि० २
कृत्य अकृत्य न देखे जे वीनु, देवगुरु शुद्धिकारी जि० ३
ज्ञान विना सजम नवि होवे, आगम वचन विहारी. जि० ४

ज्ञानने वंदो ज्ञान म निंदो,(ज्ञानी) शिवसुखना अधिकारी. जि० ५
सकळ क्रियानुं मूळ छे श्रद्धा, (एतो) श्रद्धा मूळ विहारी. जि० ६
ते विनु केसें रहु क्षण एक, (नमुं) भूतळ मस्तक धारी जि० ७
पंच ज्ञानमां जेह सदागम, स्वपर प्रकाशनकारी जि० ८
दीपक रवि शशि मेघपरे ते, जग जीवन उपगारी जि० ९
लोक ऊर्ध्व अध तिर्यग् ज्योतिष, सुर शिव दर्पण धारी. जि० १०
लोकालोक प्रगट सवि जेहथी, (तेह) आगमे शुद्धि अमारी.जि० ११

॥ ढाळ ३ जी ॥

राग कानडो (अवसर वेहर वेहर नहीं आवे—ए चाल.)

चेतन ज्ञान स्वभाव ज्यु ध्यावे, चे०
ज्ञानावरणी कर्म जीयाने, क्षय उपशम जो पावे. चे० १
ज्ञान हुवे तब एही आतम, अबोधपणु सवि जावे चे० २
वीर जिणंद वाणी रस पानी, सुजस महोदय पावे. चे० ३
वृद्धि गभीर वरे शिव कमळा, अमळ विपुळ सुख पावे. चे० ४

इति सप्तमी पूजा.

पंडित श्री वीरविजयजीकृत पीस्तालीश आगमनी पूजामांथी सातमी पूजानुं गीत.

॥ राग वसंत फाग ॥

वीरकुमरनी वातडी, केने कहियें ॥ ए देशी ॥
आगमनी आशातना नवि करियें, नवि करियें रे नवि करियें,
श्रुत भक्ति सदा अनुसरियें, शक्ति अनुसार ॥ आग० ॥ १ ॥

ज्ञान विराधक प्राणीया मति हीना, ते तो परभव दुःखिया दीना ॥
भरे पेट ते पर आधीना, नीच कुल अवतार ॥ आ० ॥ २ ॥
अधा लूला पांगुला पिंडरोगी, जनम्या ने मातवियोगी ॥
सताप घणो ने शोगी, योगी अवतार ॥ आ० ॥ ३ ॥
मूगा ने चळी बोबडा धनहीना, प्रिया पुत्र वियोगे क्षीना ॥
मूरख अविवेके भीना, जाणे रणतु रोझ ॥ आ० ॥ ४ ॥
ज्ञानतणी आशातना करो दूरे, जिन भक्ति करो भरपूरे ॥
रहो श्री शुभवीर हजूरे, सुखमांहे मगन ॥ आ० ॥ ५ ॥
॥ इति सप्तमी नैवेद्य पूजा समाप्ता ॥ ७ ॥

१ श्री ज्ञान पचमीनु चैत्यवदन.

त्रिगडे बेठा वीरजिन, भाखे भविजन आगे ॥
त्रिकरणशु त्रिहु लोक जन, निसुणो मन रागे ॥ १ ॥
आराधो भक्ति मातसें, पाचम अजुवाली ॥
ज्ञान आराधन कारणे, एहज तिथि निहाळी ॥ २ ॥
ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो एणे ससार ॥
ज्ञान आराधनथी लह्यु, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥
ज्ञान रहित क्रिया कही, काश कुसुम उपमान ॥
लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥
ज्ञानी सासोसासमें, करे कर्मनो खेह ॥
पूर्व कोडी वरसां लगे, अज्ञाने करे तेह ॥ ५ ॥
देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान ॥

ज्ञानतणो महिमा घणो, अंग पांचमे भगवान ॥ ६ ॥
पंच मास लघु पचमी, जावज्जीव उत्कृष्टि ॥
पंच वरस पच मासनी, पंचमी करो शुभदृष्टि ॥ ७ ॥
एकावनही पचनो ए, काउस्सग्ग लोगस्स केरो ॥
उजमणु करो भावशु, टाळो भव फेरा ॥ ८ ॥
एणी पेरे पचमी आराहीयेए, आणी भाव अपार ॥
वरदत्त गुणमजरी परे, रगविजय लहो सार ॥ ॥ ९ ॥
इति श्री पचमीनु चैत्यवंदन संपूर्ण

श्री ज्ञानपंचमीनुं मोटुं स्तवन.

पुण्य प्रशसीये, ए देशी.

सुत सिद्धारथ भूपनोरे, सिद्धारथ भगवान ॥
बारह परखदा आगळेरे, भाखे श्री वर्द्धमानरे ॥ १ ॥
भवियण चित्त धरो, मन वच काय अमायोरे ॥
ज्ञान भगति करो ॥ ए आंकणी ॥
गुण अनत आतमतणारे, मुख्यपणे तिहां दोय ॥
तेमां पण ज्ञानज वडुरे, जिणथी दसण होयरे ॥ भ० ॥ २ ॥
ज्ञाने चारित्र गुण वधेरे, ज्ञाने उद्योत सहाय ॥
ज्ञाने थिविरपणु लहेरे, आचारज उवज्झायरे ॥ भ० ॥ ३ ॥
ज्ञानी श्वासोश्वासमांरे, कठिण करम करे नाश ॥
वन्हि जेम इधण दहेरे, क्षणमां ज्योति प्रकाशरे ॥ भ० ॥ ४ ॥
प्रथम ज्ञान पछे दयारे, संवर मोह विनाश ॥

गुणठाणत पगथालीयेरे,जेम चढे मोल आवासोरे ॥भ०॥ ५ ॥
मइ सुअ ओहि मणपज्जवारे, पंचम केवळज्ञान ॥
चउ मुगा श्रुत एक छेरे, स्वपर प्रकाश निदानरे ॥ भ०॥ ६ ॥
तेहनां साधन जे कह्यारे, पाटी पुस्तक आदि ॥
लखे लखावे साचवेरे, धर्मी धरी अप्रमादोरे ॥ भ० ॥ ७ ॥
त्रिविध आशातना जे करेरे, भणता करे अंतराय ॥
अंधा बेहेरा बोबडारे, मुगा पांगुला थायरे ॥ भ० ॥ ८ ॥
भणतां गणतां न आवडेरे, न मळे वल्लभ चीज ॥
गुणमंजरी वरदत्त परेरे, ज्ञान विराधन बीजरे ॥ भ० ॥ ९ ॥
प्रेमे पूछे परखदारे, प्रणमी जगगुरु पाय ॥
गुणमंजरी वरदत्तनोरे, कहो अधिकार पसायोरे ॥ भ० ॥१०॥

॥ ढाल बीजी ॥

कपूर होये अति उजळोरे–ए देशी

जंबूद्वीपना भरतमांरे, नयर पद्मपुर खास ॥
अजितसेन राजा तिहांरे, राणी यशोमती तासरे प्राणी ॥
आराधो वर ज्ञान, एहज मुक्ति निदानरे प्राणी० ॥ १ ॥
वरदत्त कुंवर तेहनोरे, विनयादिक गुणवंत ॥
पिताए भणवा मूकीओरे, आठ वरस जब हुंतरे ॥ प्रा० ॥२॥
पंडित यत्न करे घणोरे, छात्र भणावण हेत ॥
अक्षर एक न आवडेरे, कुष्ठतणी शी वेतरे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥

कोठे व्यापी देहडोरे, राजा राणी सचित्र ॥
श्रेष्ठी तेहीज नयरमारे, सिंहदास धनवंतरे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥
कपूरतिलका गेहिनीरे, शीले शोभित अंग ॥
गुणमंजरी तस बेटडीरे, मुगी रोगे व्यंगरे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥
सोळ वरसनी सा थइरे, पामी यौवन वेश ॥
दुर्भग पण परणे नहींरे, मात पिता धरे खेदरे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥
तेणे अवसरे उद्यानमारे, विजयसेन गणधार ॥
ज्ञान रयण रयणायररे, चरण करण व्रतधाररे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥
वनपालके भूपालनेरे, दीध वधाइ जाम ॥
चतुरंगी सेना सजीरे, वंदन जावे सामरे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥
धर्मदेशना साभलेरे, पुरजन सहित नरेश ॥
विकासित नयण वदन मुदारे, नहि प्रमाद प्रवेशरे ॥ प्रा० ॥ ९ ॥
ज्ञान विराधन परभवेरे, मूरख पर आधीन ॥
रोगे पीडया टळवळेरे, दीसे दुःखीया दीनरे ॥ प्रा० ॥ १० ॥
ज्ञान सार संसारमारे, ज्ञान परम सुख हेत ॥
ज्ञान विना जग जीवडारे, न लहे तत्त्व संकेतरे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥
श्रेष्ठी पूछे मुणींदनेरे, भाखो करुणावंत ॥
गुणमंजरी मुज अंगजारे, कवण कर्म विरतंतरे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥

॥ ढाळ त्रीजी ॥

सुरती महिनानी देशी.

धातकी खंडना भरतमा, खेटक नयर सुठाम ॥

व्यवहारी जिनदेव छे, घरणी सुंदरी नाम ॥ १ ॥
अंगज पांच सोहामणा, पुत्री चतुरा चार ॥
पंडित पासे शीखवा, ताते मूक्या कुमार ॥ २ ॥
बाळ स्वभावे रमत, करतां दहाडा जाय ॥
पंडित मारे त्यारे, मा आगल कहे आय ॥ ३ ॥
सुंदरी शंखिणी शीखवे, भणवानु नहीं काम ॥
पंडचो आवे तेडवा, तो तस हणजो ताम ॥ ४ ॥
पाटी खडिया छेखण, बाळी कीधा राख ॥
शठने विद्या नवि रुचे, जेम करहाने द्राख ॥ ५ ॥
पाडापरे महोटा थया, कन्या न दीये कोय ॥
शेठ कहे सुण सुंदरी, ए तुज करणी जोय ॥ ६ ॥
भटकी भाखे भामिनी, बेटा बापना होय ॥
पुत्री होवे मातनी, जाणे छे सौ कोय ॥ ७ ॥
रे रे पापिणी सापिणी, सामा बोल म बोल ॥
रीसाळी कहे ताहरो, पापी बाप निटोल ॥ ८ ॥
शेठे मारी सुंदरी, काल करी ततखेव ॥
ए तुज बेटी उपनी, ज्ञान विराधन हेव ॥ ९ ॥
मूर्छागत गुणमंजरी, जातिसमरण पामी ॥
ज्ञान दीवाकर साचो, गुरुने कहे शिर नामी ॥ १० ॥
शेठ कहे सुणो स्वामी, केम जाय ए रोग ॥
गुरु कहे ज्ञान आराधो, साधो वांछित योग ॥ ११ ॥

उज्वल पंचमी सेवो, पच वरस पच मास ॥
नमो नाणस्स गणणु गणो, चोविहार उपवास ॥ १२ ॥
पूरव उत्तर सन्मुख, जपिये दोय हजार ॥
पुस्तक आगल ढोइए, धान्य फलादि उदार ॥ १३ ॥
दीवो पच दीवटतणो, साथिओ मगल गेह ॥
पोसहमा न करी शके, तेणे विधि पारणे एह ॥ १४ ॥
अथवा सौभाग्य पचमी, उज्वल कार्त्तिक मास ॥
जावज्जीव लगे सेवीए, उजमणा विधि खास ॥ १५ ॥

॥ ढाळ चोथी ॥

एकवीशानी देशी.

ढाळ–पांच पोथीरे, ठवणी पाठा विटांगणा ॥
चाबखी दोरारे, पाटी पाटल्य वरतणां ॥
मसी कागलरे, कांबी खडिआ लेखणी ॥
कवली डाबलीरे, चद्रुआ झरमर पुजणी ॥ १ ॥
त्रुटक–प्रासाद प्रतिमा ताम भूषण, केसर चदन डाबळी ॥
वासकुंपी वाळाकुंची, अगलुहणा छाबडी ॥
फळश थाळी मगळ दीवो, आरति ने ज्पणा ॥
चरवला मुहपत्ति सामीवच्छळ, नोकारवाली थापना ॥ २ ॥
ढाळ–ज्ञान दरिसणरे, चरणना साधन जे कह्या ॥
तप सयुतरे, गुणमजरीए सद्द्या ॥
नृप पूछेरे, वरदत्त कुभरने अगरे॥

रोग उपनोरे, कवण करमना भगरे ॥ ३ ॥

त्रुटक–मुनिराज भाखे जंबुद्वीपे, भरत सिंहपुर गाम ए ॥
व्यवहारी वसु तास नदन, वसुसार वसुदेव नाम ए ॥
वनमांहे रमता दोय बधव, पुण्ययोगे गुरु मल्या ॥
वैराग्य पामी भोग वामी, धर्म ध मी सचर्या ॥ ४ ॥

ढाल–लघु बाधवरे, गुणवत गुरु पदवी लहे ॥
पणसय मुनिनेरे, सारण वारण नितु दिए ॥
कर्मयोगेरे, अशुभ उदय थयो अन्यदा ॥
सथारेरे, पोरिसी भणी पोढ्या यदा ॥ ५ ॥

त्रुटक–सर्वघाति निंदव्यापी, साधु मागे वायणा ॥
उधमा अतराय थातां, सूरि हुआ दूमणा ॥
ज्ञान ऊपर द्वेष जाग्यो, लाग्यो मिथ्या भूतडो ॥
पुण्य अमृत ढोळी नांख्यु, भर्यो पापतणो घडो ॥ ६ ॥

ढाल–मन चिंतवेरे, कां मुज लाग्यु पापरे ॥
श्रुत अभ्यासोरे, तो एवडो सतापरे ॥
मुज बाधवरे, भोयण सयण सुखे करे ॥
मूरखनारे, अ ठ गुण मुख उच्चरे ॥ ७ ॥

त्रुटक–बार बासर कोइ मुनिने, वायणा दीधी नहीं ॥
अशुभ ध्याने आयु पूरी, भूप तुज नदन सही ॥
ज्ञान विराधन मूढ जडपणु, कोढनी वेदन लही ॥
वृद्ध बांधव मान सरवर, हसगति पाम्यो सही ॥ ८ ॥

ढाल—वरदत्तनेरे, जाति समरण उपन्यु ॥
भव दीठेरे, गुरु प्रणमी कहे शुभ मनो ॥
धन्य गुरुजीरे, ज्ञान जगत्रय दीवडो ॥
गुण अवगुणरे, भासन जे जग परवडो ॥ ९ ॥

त्रुटक—ज्ञानपावन सिद्धि साधन, ज्ञान कहो केम आवडे ॥
गुरु कहे तपथी पाप नासे, दाह जेम घन तावडे ॥
भूप पभणे पुत्रने प्रभु, तपनी शक्ति न एवडी ॥
गुरु कहे पचमी तप आराधो, सपदा स्यो वेवडी ॥१०॥

॥ ढाळ पांचमी ॥

॥ मेंदी रग लाग्यो—ए देशी ॥

सद्गुरु वयण सुधारसेरे, भेदी साते धात॥ तपशु रग लाग्यो ॥
गुणमजरी वरदत्तनोरे, नाठो रोग विख्यात ॥ त० ॥ १ ॥
पचमी तप महिमा घणोरे, प्रसर्यो महीयलमांही ॥ त० ॥
कन्या सहस सयवरारे, वरदत्त परण्यो त्यांहि ॥ त० ॥ २ ॥
भूपे कीधो पाटवीरे, आप थयो मुनिभूप ॥ त० ॥
भीम कांत गुणे करीरे, वरदत्त रवि शशि रूप ॥ त० ॥ ३ ॥
राजरमा रमणीतणारे, भोगवे भोग अखंड ॥ त० ॥
वरसे वरसे उजवेरे, पचमी तेज प्रचड ॥ त० ॥ ४ ॥
सुक्तभोगी थया सजमीरे, पाले व्रत खट्खाय ॥ त० ॥
गुणमजरी जिनचद्रनेरे, परणावे निज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥
सुख विलसी थइ साधवीरे, वैजयते दोय देव ॥ त० ॥

वरदत्त पण उपनोरे, जिहा सीमधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥
अमरसेन राजा घेरेरे, गुणवंत नारी पेट ॥ त० ॥
लक्षण लक्षित रायनेरे, पुण्ये कीधो भेट ॥ त० ॥ ७ ॥
सुरसेन राजा थयोरे, सो कन्या भरतार ॥ त० ॥
सीमधर सामी कनेरे, सुणी पचमी अधिकार ॥ त० ॥ ८ ॥
तिहाँ पण ते तप आदर्युरे, लोकसहित भूपाल ॥ त० ॥
दश हजार वरसा लगेरे, पाळे राज्य उदार ॥ त० ॥ ९ ॥
चार महाव्रत चोंपशुंरे, श्री जिनवरनी पास ॥ त० ॥
केवलधर मुक्ति गयारे, सादि अनत निव स ॥ त० ॥१०॥
रमणी विजय शुभापुरीरे, जंबु विदेह मझार ॥ त० ॥
अमरसिंह महीपाळनेरे, अमरावती घरनार ॥ त० ॥११॥
वैजयंत थकी चवीरे, गुणमजरीनो जीव ॥ त० ॥
मानस सर जेम हसलोरे, नाम धर्यु सुग्रीव ॥ त० ॥१२॥
वीशे वरसे राजवीरे, सहस चोरासी पुत्र ॥ त० ॥
लाख पूरव समता धरेरे, केवलज्ञान पवित्र ॥ त० ॥१३॥
पचमी तप महिमा विषेरे, भाखे निज अधिकार । त० ॥
जेणे जेहथी शिवपद लह्युरे, तेने तस उपकार ॥ त० ॥१४॥

॥ ढाळ छट्ठी ॥

करकडुने करु वदणा—ए देशी.

चोवीस दडक वारवा ॥ हु वारी लाल ॥
चोवीशमो जिनचदरे ॥ हु वारी लाल ॥
प्रगट्यो प्राणत स्वर्गथी ॥ ॥ हु० ॥

त्रिशला उर सुखकंदरे ॥ हुं० ॥ १ ॥
महावीरने करु वंदना ॥ हु० ॥ ए आंकणी ॥
पचमी गतिने साधवा ॥ हु० ॥ पंचम नाण विलासरे ॥ हु० ॥
महानिशीथ सिद्धांतमां ॥ हु० ॥ पंचमी तप प्रकाशरे ॥ हु० ॥२॥
अपराधी पण उद्धर्यो ॥ हु० ॥ चंडकोशिओ सापरे ॥ हु० ॥
यज्ञ करता बाम्हणा ॥ हु० ॥ सरखा कीधा आपरे ॥ हु० ॥३॥
देवानदा ब्राह्मणी ॥ हु० ॥ रिखभदत्त वली विप्ररे ॥ हु० ॥
ब्यासी दिवस सबधथी ॥हु०॥ कामित पूर्यो क्षिप्ररे ॥ हु० ॥४॥
कर्म रोगने टालवा ॥ हु० ॥ साचि औषधनो जाणरे ॥ हु० ॥
आदर्या में आशा धरी ॥हु०॥ मुज उपर हित आणरे ॥ हु० ॥५॥
श्री विजयसिंह सूरीशनो ॥ हु० ॥ सत्यविजय पन्यासरे ॥ हु० ॥
शिष्य कपूरविजय कवि ॥हु०॥ चदकिरण जस जासरे ॥हु०॥६॥
पास पचासरा सानिधे ॥ हु० ॥ खिमाविजय गुरु नामरे ॥ हु० ॥
जिनविजय कहे मुज हजो ॥हु०॥ पचमी तप परिणामरे ॥हु०॥७॥

॥ कळश ॥

इम वीर लायक विश्वनायक, सिद्धिदायक संस्तव्यो ॥
पचमी तप संस्तवन टोडर, गुथी जिनकठे ठव्यो ॥
पुण्य प टण क्षेत्रमाहे, सत्तर त्राणु संवत्सरे ॥
श्री पार्श्व जन्म कल्याण दिवसे, सकल भवि मंगल करे ॥१॥इति॥

वरदत्त पण उपनोरे, जिहां सीमधर देव || त० || ६ ||
अमरसेन राजा घरेरे, गुणवत नारी पेट || त० ||
लक्षण लक्षित रायनेरे, पुण्ये कीधो भेट || त० || ७ ||
शुरसेन राजा थयोरे, सो कन्या भरतार || त० ||
सीमधर सामी कनेरे, सूणी पचमी अधिकार || त० || ८ ||
तिहां पण ते तप आदर्युरे, लोकसहित भूपाळ || त० ||
दश हजार वरसा लगेरे, पाळे राज्य उदार || त० || ९ ||
चार महाव्रत चोंपशुरे, श्री जिनवरनी पास || त० ||
केवलधर मुक्ति गयारे, सादि अनत निव || त० ||१०||
रमणी विजय शुभापुरीरे, जबु विदेह मझार || त० ||
अमरसिंह महीपालनेरे, अमरावती घरनार || त० ||११||
वैजयत थकी चवीरे, गुणमजरीनो जीव || त० ||
मानस सर जेम हसलोरे, नाम धर्यु सुग्रीव || त० ||१२||
वीशे वरसे राजवीरे, सहस चोरासी पुत्र || त० ||
लाख पूरव समता धरेरे, केवलज्ञान पवित्र || त० ||१३||
पचमी तप महिमा विषेरे, भाखे निज अधिकार | त० ||
जेणे जेहथी शिवपद लह्युरे, तेने तस उपकार || त० ||१४||

|| ढळ छठी ||

करकडुने करु वदणा—ए देशी.

चोवीस दडक वारवा || हु वारी लाल ||
चोवीशमो जिनचदरे || हु वारी लाल ||
प्रगटयो प्राणत स्वर्गथी || || हु० ||

त्रिशला उर सुखकंदरे ॥ हुं० ॥ १ ॥
महावीरने करु वदना ॥ हुं० ॥ ए आंकणी ॥
पचमी गतिने साधवा ॥ हुं० ॥ पचम नाण विलासरे ॥ हुं० ॥
महानिशीथ सिद्धांतमां ॥ हुं० ॥ पंचमी तप मकाशरे ॥ हुं० ॥२॥
अपराधी पण उद्धर्यो ॥ हुं० ॥ चंडकोशिओ सापरे ॥ हुं० ॥
यज्ञ करता ब्राह्मणा ॥ हुं० ॥ सरखा कीधा आपरे ॥ हुं० ॥३॥
देवानंदा ब्राह्मणी ॥ हुं० ॥ रिखभदत्त वली विप्ररे ॥ हुं० ॥
व्यासी दिवस सबधथी ॥हुं०॥ कामित पूर्यो क्षिप्ररे ॥ हुं० ॥४॥
कर्म रोगने टालवा ॥ हुं० ॥ सांचि औषधनो जाणरे ॥ हुं० ॥
आदर्या में आशा धरी ॥हुं०॥ मुज उपर हित आणरे ॥ हुं० ॥५॥
श्री विजयसिंह सूरीशनो ॥ हुं० ॥ सत्यविजय पन्यासरे ॥ हुं० ॥
शिष्य कपूरविजय कवि ॥हुं०॥ चद्रकिरण जस आसरे ॥हुं०॥६॥
पास पचासरा सानिधे ॥ हुं० ॥ खिमाविजय गुरु नामरे ॥ हुं० ॥
जिनविजय कहे मुज हजो ॥हुं०॥ पचमी तप परिणामरे ॥हुं०॥७॥

॥ कळश ॥

इम वीर लायक विश्वनायक, सिद्धिदायक सस्तव्यो ॥
पचमी तप भस्तवन टोडर, गुथी जिनकंठे ठव्यो ॥
पुण्य पटण क्षत्रमाहे, सत्तर त्राणु सवत्सरे ॥
श्री पार्श्व जन्म कल्याण दिवसे, सकल भवि मगल करे ॥१॥इति॥

श्री पंचमीनी स्तुति

श्रावण शुदि दिन पचमी ए, जनम्या नेमिजिणद तो ॥
श्याम वरण तनु शोभतु ए, मुख शारदको चद तो ॥
सहस वरस प्रभु आउखु ए, ब्रह्मचारी भगवत तो ॥
अष्ट करम हेले हणीए, पहोता मुक्ति महत तो ॥ १ ॥
अष्टापद पर आदि जिन ए, पहोता मुक्ति मोझार तो ॥
वासुपूज्य चपापुरी ए, नेम मुक्ति गिरनार तो ॥
पावापुरी नगरीमा वली ए, श्री वीरतणु निर्वाण तो ॥
समेतशिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिर वहु तेहनी आण तो ॥ २ ॥
नेमिनाथ ज्ञानी हुआ ए, भाखे सार वचन तो ॥
जीवदया गुण वेलडीए, कीजे तास जतन तो ॥
मृषा न बोलो मानवी ए, चोरी चित्त निवार तो ॥
अनत तीर्थंकर एम कहे ए, परहरिए परनार तो ॥ ३ ॥
गोमेद नामे जक्ष भलो ए, देवी श्री अबिका नाम तो ॥
शासन सानिध्य जे करे ए, करे वली धर्मना काम तो ॥
तपगच्छ नायक गुणनिलो ए, श्री विजयसेन सूरिराय तो ॥
रिषभदास पाय सेवतां ए, सफल करो अवतार तो ॥ ४ ॥

इति श्री पचमीनी स्तुति सपूर्ण

श्री ज्ञानपचमीनु लघु स्तवन

पचमी तप तमे करोरे प्राणी ! जेम पामो निर्मल नाणरे,
पहेलु ज्ञान ने पछी किरिया, नहीं कोइ ज्ञान समाणरे ॥ प० ॥ १ ॥

नंदीसूत्रमां ज्ञान वखाण्यु, ज्ञानना पच मकाररे;
मति श्रुत अवधि ने मनपर्यव, केवळज्ञान श्रीकाररे ॥ प० ॥ २ ॥
मति अट्ठावीश श्रुत चौद वीश, अवधी छ असख्य मकाररे;
दोय भेदे मनपर्यव दाख्यु, केवळ एक उदाररे ॥ प० ॥ ३ ॥
चद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा, जेहवो तेज आकाशरे;
केवळज्ञान उद्योत भयो तव, लोकालोक मकाशरे ॥ प० ॥ ४ ॥
पार्श्वनाथ पसाय करीने, पूरो मारा मनना उमेदरे,
समयसुंदर कहे हु पण मागु, ज्ञाननो पचमो भेदरे ॥ पं० ॥ ५ ॥

श्री ज्ञानपंचमीनी स्तुति

श्रीनेमि· पचरूपत्रिदशपतिकृतप्राज्यजन्माभिपेक-
श्चत्पचाक्षमत्तद्विरदमदभिदा पचवक्त्रोपमानः ॥
निर्मुक्त· पचदेह्याः परमसुखमय· प्रास्तकर्मप्रपंचः ।
कल्याण पच्चमीसत्तपमि वितनुतां पंचमज्ञानवान् वः॥१॥

अर्थः—(श्रीनेमिः के०) श्रीनेमिनाथ भगवान, (व के०) तमारा (पचमी सत्तपसि के०) पचमीना सारा तपने विषे (कल्याणं के०) निर्विघ्नपणाने (वितनुतां के०) विस्तारो. हवे ते नेमिनाथ भगवान् केवा छे ? तोके (पंचरूप के०)पाचरूपे करीने(त्रिदशपतिके०) देवताना पति एवा जे इद्र तेणे (कृत के०) कर्यो छे (प्राज्य जन्माभिपेकः के०,महोटो अने उत्तम जन्माभिपेक जेमनो एवा, वळीते केवा

छे ? तो के (चचत् के०) दीपता एवा (पचाक्ष) पांच इंद्रियो रूप (मत्तके०) मदोन्मत एवा (द्विरदके०)हस्ती तेना(मदभिदाक्र०) मद भेदवे करीने (पचवक्त्रोपमान के०) पचवक्त्र जे सिंह तेनु छे उपमान जेमने एवा छे, वळी ते केवा छे ? तो के (पचदेहाः के०) औदारिकादिक पांच शरीर ते थकी (निर्मुक्त के०) मुक्त थया एवा, वळी केवा छे ? तो के (परम के०) उत्कृष्ट एटले अतींद्रिय एवा (सुखमय के०)सुखे करीने सहित, वळी केवा छे ?(प्रास्त के०) प्रकर्षे करी टाळ्या छे (कर्मप्रपच.के०) कर्मना प्रपच एटले विस्तार जेमणे एवा, वळी ते केवा छे ? तो के (पचघज्ञानवान् के०) पांचमु ज्ञान जे केवळज्ञान तेणे करी युक्त छे ॥ १ ॥

संधीणन् सच्चकोरान् शिवतिलकसम-कौशिकानंदमूर्ति-।
पुण्याब्धिप्रीतिदायी सितरुचिरिव य स्वीयगोभिस्तमांसि॥
सांद्राणि घ्वंसमानः सकलकुवलयोल्लासमुच्चैश्चकार ।
ज्ञानं पुष्याज्जिनौघ सुतपसि भविनां पंचमीवासरस्य॥२॥

अर्थ—हवे जिनसमुदायने चद्रनी समानतारूपे स्तवे छे (सित रुचिरिव के०) चद्रमा सदृश एवो तथा (शिवतिलकसम के०) शिव जे मोक्ष तेने विषे तिलक समान एवो (य के०) जे(जिनौघ के०) जिनसमुदाय छे, ते (भविनां के०) भव्यजनोना (पचमी वासरस्य के०) पचमी दिवसना (सुतपसि के०) रुडा तपने विषे (ज्ञान के०) ज्ञान जे तेने (पुष्यात् के०) पुष्टिने करो. हवे ते जिन

समुदायने चद्र तुल्यता केवी रीते छे ? ते सर्व विशेषणोए करीने कहे छे. जेम चद्र (सचकोरान् के०) उत्तम जे चकोर तेमने (सप्रीणन् के०) रुडे प्रकारे आनद उत्पन्न करे छे, तेम ए श्री जिन समुदाय पण (सचकोरान् के०)सत्पुरुषरूप जे चकोरतेमने (सप्रीणन् के०) सम्यक् प्रकारे हर्ष करे छे वली जेम चद्र (कौशिकानदमूर्त्तिः के०) घूवडने आनददायक छे मूर्ति जेनी एवो छे, तेम ए जिनसमुदाय पण (कौशिकानदमूर्त्तिः के०) इद्रने आनदरूप छे मूर्ति जेनी एवो छे, तथा जेम चद्र (पुण्याब्धि के०) पुण्यकारक समुद्रने (प्रीतिदायी के०)प्रीतिदायक छे, तेम जिनौघ पण(पुण्याब्धि के०) पुण्यरूप जे समुद्र तेने(प्रीतिदायीके०)प्रीतिनो देनारो छे, तथा जेम चद्र (स्वीय के०) पोताना (गोभि.के०, किरणोए करी(सान्द्राणि के०) गाढ एवा (तमासि के०) अधकारोने (ध्वसमानः के०) ध्वस एटले नाश करनारो छे तेम जिनौघ पण (सान्द्राणि के०) गाढ एवा (तमासि के०) जीवोना अज्ञान, तेमने (ध्वसमानः के०) ध्वस एटले नाश करनारो छे तथा जेमचद्र(सकल कुवलयोल्लास के०) समग्र कुवलय जे चद्रविकासी कमलो, तेना वीकासितपणाने (उच्चैः के०) अत्यत (चकार के०) करतो हवो, तेम ए जिनौघ पण (कुवलय के०) पृथ्वीवलयना (उल्लास के०)हर्षने (चकार के०) करतो हवो एवो छे, माटे तेने चद्रमानी उपमा योग्य छे ॥२॥

पीत्वा नानाभिधार्थामृतरसमसम यांति यास्यति जग्मु-
र्जीवा य... ...के विधिवदमरतां ... ...र्याम् ॥

यात्वा देवाधिदेवागमदशमसुधाकुंडमानंदहेतु
स्तत्पंचम्यास्तपस्युद्यतविशदधिया भाविनामस्तु नित्यम्२

अर्थः—(देवाधिदेवागम के०,श्री वीतराग देव तेनो(आगमके०) सिद्धांत रूप(दशमके०)दशमो एवो (सुधाकुंडके०)अमृत कुंड जे छे (तत् के०)ते (पंचम्या. के०) ज्ञान पचमीना (तपसि के०) तपने विषे (उद्यत के०) उजमाळ तथा(विशदधियांके०) निर्मळ छे बुद्धि जेमनी एवा (भाविनां के०) भाविक भव्य जीवोने (आनंदहेतु के०) आनंदना कारणभूत (नित्य के०) निरंतर (अस्तु के० थाओ हवे ते जिनागम रुप दशम सुधाकुंड केवो छे ? तोके (नानाभिधार्थी मृतरस के०) नाना मकारनां छे नाम जेमनां एवा जे अर्थो, ते रूप अमृत रस छे जेमां एवो छे तेने (विधिवत् के०) विधि ममाणे (पीत्वा के०) पान करीने (असम के०) निरुपम एवा सुखने (यास्यति के०) पामशे, (याति के०) पामे छे, अने (जग्मु' के०) पामता हवा. (यस्मात् के०) जेनु पान करवा थकी (अनेके के०) अनेक एवा (जीवा. के०) जीवो जे छे ते (प्राज्य के०) महोटी एवी (निर्वाण पुर्यां के०) मोक्ष नगरीने विषे (अमरता के०) अजरामरपणाने (यात्वा के०) पामीने स्वस्थ थाय छे ॥ २ ॥

स्वर्णालंकारवल्गन्मणिकिरणगणध्वस्तनित्यांधकारा ।
हुंकारारावदूरीकृतसुकृतजनव्रातविघ्नप्रचारा ॥

देवी श्रीअंबिकाख्या जिनवरचरणांभोजभृंगीसमाना,
पचम्यन्हस्तपोर्थं वितरतु कुशलं धीमतां सावधाना॥४॥

अर्थः—(श्रीअंबिकाख्या के०) श्रीअंबिका छे नाम जेनु एवी (देवी के०) देवी, ते (सावधाना के०) सावधान एवी छती धीमतां के० बुद्धिमान् एवा भविक जीवना (पचम्यन्हः के०) पचमीना दिवसना (तपोर्थं के०) तपने माटे (कुशलं के०) कुशळ जे छे तेने (वितरतु के०) विस्तारो. ते देवी केवी छे ? तो के (स्वर्णालंकार के०) सुवर्णना जे अलकार तेने विषे (वल्गन्मणि-किरणगण के०) वळग्या एवा जे मणि तेना किरणना जे गण, तेणे करी (ध्वस्तनित्यांधकारा के०) टाल्यो छे निरतर अधकार जेणे, वळी ते देवी केवी छे ? तो के (हुंकारा के०) हुंकारनो राव जे शब्द तेणे करी (दूरीकृत के०) दूर कर्या छे (सुकृत-जनव्रात के०) सुकृतनो करनारो एवो जे जनसमूह तेना (विघ्न प्रचारा के०) विघ्नना प्रचार जेणे, वळी ते केवी छे ? तो के (जिनवरचरणांभोज के०) श्रीवीतरागना चरणरूप कमलने विषे (भृंगीसमाना के०) भ्रमरी समान छे. ॥ ४ ॥

श्री देवविजयजी कृत पांचमनी सज्झाय.

चोपाइ.

सद्गुरुना हु प्रणमु पाय, सरसति सामिनी करो पसाय,
पचमी तप फल महिमा सुणो, जे करता जग शोभा गणो १

ज्ञान अथाइ बधे बळी जेह, पंचम ज्ञान ल्हे भवी तेह,
पंचमी गति पामे सुख सार, एह संसारनो पामे पार
सोळ रोग तत्क्षण उपशमे, तेउकाय जीम शितने दमे,
तिम ए तप छे रोगनो काळ, जुओ वरदत्त गुणमंजरी बाळ
पंच वरस ने पंचज मास, करीए तप मनने उल्लास,
अंते उजमणु कीजीए, पोते तपनु फळ लीजीए.
उजमणा विण फळ ते नही, इम ए वाणी जिनवर कही,
श्री वीजेरत्न तणो ए शिप, वाचक देवनी पुरो जगीश.

पंचमीनुं स्तवन

ढाळ १ ली

प्रणमु सद्गुरु पाय, निर्मळ ज्ञान उपाय,
पंचमी तप भणु ए, जनम सफल करु ए
चोविशमो जिणचंद, केवलज्ञान दिणंद,
त्रिगडे गहगह्यो ए, भवियणने कह्यो ए
ज्ञान वडो संसार, ज्ञान मुगति दातार,
ज्ञान दीवो कह्यो ए, साचो सद्द्यो ए
ज्ञान लोचन सुविकाश, लोकालोक प्रकाश,
ज्ञान विना पशु ए, नर जाणे किश्यु ए
अधिक आराधक जाण, भगवति सूत्र प्रमाण,
ज्ञानी सर्वनु[१] ए, किरिया देशनु[२] ए

१ ज्ञान सर्वाराधक २ क्रिया देशाराधक

ज्ञानी श्वासोश्वास, करम करे जे नाश;
नारकने सही ए, कोड वरसे कहीए ६.
ज्ञान तणो अधिकार, बोल्यो सूत्र मोझार,
किरिया छे सही ए, ज्ञिण पाछे कहीए. ७.
किरिया सहित जो ज्ञान, हुवे तो अति परधान,
सोनु ने सुरभ³ ए, शख दुधे भर्यो ए ८.
महानिशिथ मोझार, पचमी अक्षर सार;
भगवत भाखिया ए, गणधर साखियो ए. ९

॥ ढाल २ जी. ॥

पचमी तप विधि सांभळो, जिन पामो भवपारोरे,
श्री अरिहत इम उपदिसे, भवियणने हितकारोरे. पं० १०
मागशर माह फागुण भला, जेठ अशाड वैशाखोरे;
इण खट मासे लीजीए, शुभ दिन सद्गुरु पासोरे पं० ११
देव जुहारीए देहरे, गीतारथ गुरु वदीरे,
पोथी पूजो ज्ञाननी, शक्ति होवे तो नदी⁴रे प० १२
ने कर जोडी भावशुं, गुरुमुख करे उपवासोरे,
पचमी पडिक्रमणु करे, भणे पंडित गुरु पासोरे प० १३
जिणदिन पचमी तप करे, तिण दिन आरभ टाळोरे,
पचमी स्तवन शुद्र कहे, ब्रह्मचर्य पण पाळेरे प० १४
पच मास लघु पचमी, जावजीव उत्कृष्टिरे,
पच वरस पच मासनी, पचमी करो शुभ दृष्टिरे. प० १५

३ सुगध ४ शक्ति होय तो नदी मडाववी.

ढाळ ३ जी

ढाळ—हवे भविअण रे, पचमी उजमणो सुणो,
घर सारु रे, वाम विच खरचो घणो
ए अवसर रे, आवता वळी दोहिलो,
पुन्य योगे रे, धन पामता सोहिलो
त्रटक—सोहिलो वळी धन पामता, धरमकाज किहा वळी,
पचमी दिन गुरु पास आवी, कीजीए काउसग रळी
ज्ञान दर्शन चरण टीकी, देव पुस्तक पूजीए,
थापना पहेली पूजी केशरे, सुगुरु सेवा कीजीए ॥ १६ ॥
ढाळ—सिद्धांतनीरे, पच परत विटांगणा,
पच पाठा रे, मखमल सूत्र प्रमुख तणा
पच दोरारे, लेखण पांच मिजासणा[१],
वासकुपी रे, कांबी वार वरतणा
त्रूटक—वरतणा वारु वळीय कवळी, पाच झीलमील[२] अति भली,
थापनाचारज पाच ठवणी, मुहपत्ति पडिपटली
पटसूत्र पाटी पच कोथळी, पच नवकारवाळिया,
इणपरे श्रावक करे पचमी, उजमणो उजवाळीया ॥ १७ ॥
ढाळ—वळी देहरेरे, स्नात्र महोच्छव कीजीए,
वित्त सारुरे, दान वळी तिहां दीजीए,
प्रतिमानेरे, आगळ ढोवण ढोइए,

---

१ वस्तु विशेष २ वस्तु विशेष

पूजानारे, जे जे उपगरण जोइए.

त्रुटक—जोइए उपगरण देवपूजा, काज कळश भृंगार ए;

आरती मंगळ थाळ दीवो, धुपधाणो सार ए;

घनसार केशर अगर सुखड, अगलुहणा दीस ए,

पच पच सघळी वस्तु ढोत्रो, शक्तिश्यु पचवीश ए ॥१८॥

ढाळ—पचमीता१रे, साहमी सरव जमाडीए,

रातीजगेरे, गीत रसाळ गवाडीए;

इण करणीरे, करतां ज्ञान आराधीए,

ज्ञान दरशनरे, उत्तम कारण साधीए

त्रुटक—साधीए मारग एणी करणी, ज्ञान लहीए निरमळो,

सुरलोक ने नरलोकमाहे, ज्ञान निरमळ आगळो,

अनुक्रमे केवळज्ञान पामी, शाश्वता सुख ते लहे;

जे करे पचमी तप अखडित, वीरजिनवर इम कहे ॥१९॥

कळश

इम पचमी तप फळ प्ररुपक, वर्द्धमान जिणेसरो,

मे थुण्यो श्री अरिहत भगवत, अतुल बळ अलवेसरो;

जयवत श्री जिनचदसूरि, सकळचद नमसीओ,

वांचनाचारज समयसुदर, भगति भाव प्रशसियो ॥२०॥इति.

---

१ पचमी तप करनारा

ढाळ २ जी

ढाळ—हवे भवियण रे, पचमी उजमणो सुणो,
घर सारु रे, वारु विच खरचो घणो
ए अवसर रे, आवता वळी दोहिलो,
पुन्य योगे रे, धन पामता सोहिलो
त्रटक—सोहिलो वळी धन पामता, धरमकाज किहां वळी,
पचमी दिन गुरु पास आवी, कीजीए काउसग रे,
त्रण ज्ञान दर्शन चरण टीकी, देव पुस्तक पूजीए,
थापना पहेली पूजी केशरे, सुगुरु सेवा कीजीए ।
ढाळ—सिद्धांतनीरे, पच परत विटांगणा,
पच पाठा रे, मखमल सूत्र प्रमुख तणा
पच दोरारे, लेखण पांच मिजासणा[1],
वासक्कुपी रे, कांबी चार वरतणा
त्रूटक—वरतणा वारु वळीय कवळी, पाच झीलमील[2] अति
थापनाचारज पाच ठवणी, मुहपात्ति पडिपाटली
पटसूत्र पाटी पच कोथळी, पच नवकारवाळिया,
इणपरे श्रावक करे पचमी, उजमणो उजवाळीया ॥
ढाळ—वळी देहरेरे, स्नात्र महोच्छव कीजीए,
वित्त सारुरे, दान वळी तिहां दीजीए,
प्रतिमानेरे, आगळ ढोवण ढोइए;

---

१ वस्तु विशेष २ वस्तु विशेष

ढाळ ३ जी.

जइने कहेजो मारा वालाजीरे—ए देशी ॥

चैत्र वदी पंचमी दिने, सुणो प्राणीजीरे,
चविया चंद्रप्रभु स्वामी, लहि सुख ठाम, सु०
अजित संभव अनतजी, सु०
चैत्र शुदी पचमी शिवधाम, शुभ परिणाम. सु० ॥ १ ॥
वैशाख वदी पचमी दिने, सु०
संजम लीये कुंथुनाथ, बहु नर साथ; सु०
ज्येष्ठ शुदी पचमी वासरे, सु०
सुगति पाम्या धर्मनाथ, शिवपुर साथ. सु० ॥ २ ॥
श्रावण शुदि पचमी दिने, सु०
जनम्या नमी सुरंग, अति उछरंग; सु०
मागशर वदि पचमी दिने, सु०
सुविधि जन्म सुख संग, पुन्य अभग. सु० ॥ ३ ॥
कार्तिक वदी पचमी दिने, सु०
संभवं केवळ ज्ञान, करो बहु मान, सु०
दश क्षेत्रे नेवुं जिन सुणो, सु०
पचमी दिननां कल्याण, सुखनां निशान. सु० ॥ ४ ॥

ढाळ ४ थी.

हांरे मारे जोवनीयानो लटको दहाडा चारजों,
नाणुरे मळशे पण टाणु नही मळेरे लोल. ए देशी ॥

श्री विजयलक्ष्मीसूरिकृत पांचमनी सज्झाय.

ढाल १ ली.

मारु मन मोह्युरे सुंदर शामळीयारे—ए देशी ॥

श्री वासुपूज्य जिनेसर वयणथीरे, रुपकुंभ वचनकुंभ मुनि दोय,
रोहिणीमंदीर सुंदर आवियारे, नमी भव पूछे दंपती सोय. ॥१॥
चउनाणी वयणे दंपति मोहियारे ॥ ए आंकणी ॥
राजा राणी निज सुत आठनु रे, तपफळ नीज भवथारी संबंध,
विनय करी पूछे महाराजने रे, चार सुताना भव परबंध ॥च० ॥२॥
रुपवती१ शीलवती२ ने गुणवती३, सरसती४ ज्ञान कळा भंडार,
जन्मथी रोग सोग दीठो नथी रे,कुण पुन्ये लीधोरे एह अवतार॥च०॥३॥

ढाळ २ जी

वाल्हो मारो वाये छे वांसली रे—ए देशी ॥
गुरु कहे वैताढ्य गिरिवरेरे, पुत्री विद्याधर चार,
निज आयु ज्ञानीने पूछीयुरे, करवा सफळ अवतार
अवधारो अम विनति रे ॥ ए आंकणी ॥१॥
थोडा आयुमां कारज धर्मनां रे, किम करीए मुनिराज;
गुरु कहे धर्मना योग असंख्य छे रे, ज्ञानपंचमी तुम काज ॥अ०॥२॥
क्षिण अर्धे सवि अघ टळे रे, शुद्ध परिणामे साध्य,
कल्याणक नेवु जिनतणां रे, पंचमी दिवसे आराध्य ॥अ०॥३॥

ढाळ ३ जी.

जइने कहेजो मारा वालाजीरे–ए देशी ॥

चैत्र वदी पचमी दिने, सुणो प्राणीजीरे,
चविया चद्रप्रभु स्वामी, कहि सुख ठाम, सु०
अजित संभव अनतजी, सु०
चैत्र शुदी पचमी शिवधाम, शुभ परिणाम. सु० ॥ १ ॥
वैशाख वदी पचमी दिने, सु०
सजम लीये कुथुनाथ, बहु नर साथ, सु०
ज्येष्ट शुदी पचमी वासरे, सु०
मुगति पाम्या धर्मनाथ, शिवपुर साथ. सु० ॥ २ ॥
श्रावण शुदि पचमी दिने, सु०
जनम्या नमी सुरंग, अति उछरंग; सु०
मागशर वादि पचमी दिने, सु०
सुविधि जन्म सुख संग, पुन्य अभग. सु० ॥ ३ ॥
कार्तिक वदी पचमी दिने, सु०
संभव केवळ ज्ञान, करो बहु मान, सु०
दश क्षेत्रे नेवुं जिन सुणो, सु०
पचमी दिननों कल्याण, सुखनां निधान. सु० ॥ ४ ॥

ढाळ ४ थी

हारे मारे जोबनीयानो लटको दहाडा चारजों,
नाणुरे मळशे-पण टाणु नही मळेरे कोल. ए देशी ॥

हां रे मारे ज्ञानी गुरुनां वयण सुणी हितकारजो,
चार विद्याधरी पंचमी विधिए आचेरेरे लोल,
हां रे मारे शासनदेव ने पच ज्ञान मनोहारजो,
टाळीरे आशातना देववदन सदारे लोल. ॥ १ ॥
हां रे मारे तप पूरणथी उजमणानो भावजो,
एहवे विद्युत् योगे सुर पदवी वर्यारे लोल,
हां रे मारे धर्म मनोरथ आळस तजतां होयजो,
धन्य ते आतम अविलंबे कारज कर्यांर लोल. ॥ २ ॥
हां रे मारे देवथकी तुम कुखे लीयो अवतारजो,
सांभळी रोहिणी ज्ञान आराधन फळ घणारे लोल,
हां रे मारे चार चतुरा विनय विवेके विचारजो,
गुण केटला वखाये तुम पुत्रीतणारे लोल ॥ ३ ॥

ढाळ ५ मी

आसणरा हो जोगी–ए देशी ॥

ज्ञानीना वयणथी चारे बहेनी, जातिसमरण पामीरे, ज्ञानी गुणवता,
त्रीजा भवमां धारणा कीधी, सिध्या मनना कामो रे. ज्ञा० ॥१॥
श्री जिनमदिर पच मनोहर, पच वरणा जिनपडिमारे; ज्ञा०
जिनवर आगमने अनुसारे, करी उजमणानो महिमारे ज्ञा० ॥२॥
पंचमी तिथि आराधन पचम, केवळनाणी ते थाय रे, ज्ञा०
श्रीविजयलक्ष्मीसूरि अनुभव नाणे,सघ सकळ सुखदायरे. ज्ञा० ॥३॥
इति श्री पाचमनी सज्झाय सपूर्ण.

:

॥ अथ श्री ज्ञानपंचमीदेववंदन प्रारंभ ॥
॥ तत्र प्रथम विधि ॥

प्रथम बाजोठ उपर ठवणी ने तेनी उपर रुमाल ढांकी ते उपर पांच पुस्तक मूकीने वासक्षेपथी ज्ञाननी पूजा करीए, वळी पाच दीवेटनो दीवो करीए, ते जयणापूर्वक पुस्तकनी जमणी पासे स्थापीए अने धूपधाणु डाबे पासे मुकीए, पुस्तक आगल पाच अथवा एकावन साथीया करी उपर श्रीफळ तथा सोपारी मूकीए. यथाशक्ति ज्ञाननी द्रव्यपूजा करीए. पछी देव वांदीए अने सामायिक तथा पोसह मध्ये वासपूजाए पुस्तक पूजीने देव वादीए, अथवा देहरा मध्ये बाजोठ त्रण उपराउपर मांडी ते उपर पांच जिनमूर्त्ति स्थापीए तथा महा उत्सवथी स्नात्र भणावीए. प्रभु आगल जमणी तरफ पुस्तक मांडयु होय तेनी पण वास प्रमुखे पूजा करीए तथा उजमणु माडयु होय तो तिहां पण यथाशक्ति जिनबिंब आगल लघु स्नात्र भणावीने अथवा सत्तर भेदी पूजा भणावीने पछी श्री सौभाग्य पचमीना देव वांदीए.

हवे देव वांदवानो विधि कहे छे

प्रथम प्रतिमाजीनी जोगवाइ न होय तो स्थापनाचार्य समीपे अथवा नवकार पंचिंदियवडे स्थापना स्थापीने इरियावही पडिक्कमी, चार नवकारनो अथवा एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही, खमासमण देइ, इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् मतिज्ञान आराधनार्थं चैत्यवंदन करु ? एम कही, योगमुद्राए बेसी चैत्यवंदन करीए ते कहे छे.

॥ अथ थूइ ॥

श्रीमतिज्ञाननी तत्त्व भेदथी, पर्याये करी व्याख्याजी ।
चउविह द्रव्यादिकने जाणे, आदेशे करी दाखाजी ॥
माने वस्तु धर्म अनंता, नहि अज्ञान विवक्षाजी ।
ते मतिज्ञानने वदो पूजो, विजय लक्ष्मी गुणकांक्षाजी ॥ १ ॥

पछी खमासमण दइ, उभा रही, मतिज्ञान संबंधी अठावीश गुण वर्णववा दुहा कहेवा. तेमां पीठिकाना दुहा लखीए छीए

॥ दुहा. ॥

श्री श्रुत देवी भगवती, जे ब्राह्मी लिपी रूप ॥
भणभे जेहने गोयमा, हु वदु सुखरूप ॥ १ ॥
ज्ञेय अनंते ज्ञानना, भेद अनेक विलास ॥
तेहमां एकावन कहु, आतम धर्म प्रकाश ॥ २ ॥
खमासमण एक एकथी, स्तवियें ज्ञान गुण एक ॥
एम एकावन दीजीये, खमासमण सुविवेक ॥ ३ ॥
श्री सौभाग्य पंचमी दिने, आराधो मतिज्ञान ॥
भेद अठावीश एहना, स्तवीये करी बहु मान ॥ ४ ॥

गुणना दुहा

इंद्रिय वस्तुपुग्गला, मले अवत्तव नाण ॥
लोचन मन विणु अक्षने, व्यंजनावग्रह जाण ॥ ५ ॥
भाग असंख्य आवाळि लघु, सास पहुत उिइ जिइ ॥
प्राप्यकारी चउ इंद्रिया, अप्राप्यकारी दुग दिइ ॥ ६ ॥

॥ अथ खमासमणना दुहा ॥

समकित श्रद्धावतने, उपन्यो ज्ञान प्रकाश ॥
प्रणमु पदकज तेहना, भाव धरी उल्लास ७ ॥ खमा० ॥ १ ॥

ए दुहो गुण गुण दीठ कहेवो.

नहीं वर्णादिक योजना, अर्थावग्रह होय ॥
नोइंद्रिय पंच इंद्रिये, वस्तु ग्रहण कांइ जोय. ८ ॥ सम० ॥ २ ॥
अन्वय व्यतिरेके करी, अतर मुहूर्त प्रमाण ॥
पंचेंद्रिय मनथी होये, ईहा विचारणा ज्ञान ९ ॥ सम० ॥ ३ ॥
वर्णादिक निश्चय वसे, सुर नर एहिज वस्त ॥
पचेंद्रिय मनथी होये, भेद अपाय प्रशस्त १०. ॥ सम० ॥ ४ ॥
निर्णीत वस्तु स्थिर ग्रहे, कालांतर पण साच ॥
पचेंद्रिय मनथी होये, धारणा अर्थ उवाच ११. ॥ सम० ॥ ५ ॥
निश्चय वस्तु ग्रहे छते, सतत ध्यान प्रकाम ॥
अपायथी अधिके गुणे, अविच्युति[1] धारणा ठाम १२ ॥सम०॥६॥
अविच्युति स्मृति[2] तणु, कारज कारण जेह ॥
सरय असरय कालज सुधी, वासना[3] धारणा तेह.१३॥सम०॥७॥
पूर्वोत्तर दर्शन द्वय, वस्तु अप्राप्त एकत्व ॥
असरय काले ए तेह छे, जातिस्मरण तत्त्व १४ ॥ सम० ॥८॥
वाजित्र नाद लही ग्रहे, ए तो दुदुभि नाद ॥
अवग्रहादिक जाणे बहु, भेद ए मनि आल्हाद.१५ ॥ सम० ॥९॥

खमासमण दइने इच्छा० श्री श्रुतज्ञान आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कही चैत्यवंदन कहेवुं ते नीचे प्रमाणे—

॥ अथ द्वितीय श्री श्रुतज्ञान चैत्यवंदन ॥

॥ दोहा ॥

श्री श्रुतज्ञानने नित्य नमो, स्वपर प्रकाशक जेह ।
जाणे देखे ज्ञानथी, श्रुतथी टाळे संदेह ॥
अनभिलाप्य अनंत भाव, वचन अगोचर दाख्या ।
तेहनो भाग अनंतमो, वचन पर्याये आख्या ॥
वळी कथनीय पदार्थनो ए, भाग अनंतमो जेह ।
चौदे पूरवमां रच्यो, गणधर गुण ससनेह ॥ १ ॥
माहोमांहे पूरवधरा, अक्षर लाभे सरिखा ।
छट्ठाण वडीया भावथी, ते श्रुत मतिय विशेषा ॥
तेहिज माटे अनंतमे, भाग निबद्धा वाचा ।
समकित श्रुतना जाणीए, सर्व पदारथ साचा ॥
द्रव्य गुण पर्याये करीए, जाणे एक प्रदेश ।
जाणे ते सवि वस्तुने, नंदीसूत्र उपदेश ॥ २ ॥
चोवीश जिनना जाणीए, चौद पूरवधर साध ।
नव शत तेत्रीश सहस छे, अट्ठाणु निरपाध ॥
परमत एकांतवादीनां, शास्त्र सकळ समुदाय ।
ते समकितवंते ग्रह्या, अर्थ यथारथ थाय ॥
अरिहंत श्रुतकेवळी कहे ए, ज्ञानाचार चरित्र ।
श्रुत पंचमी आराधवा, विजयलक्ष्मी सूरि चित्त ॥ ३ ॥

इति चैत्यवंदन ॥ नमुथ्थु० ॥ जावंति० ॥ नमोऽर्हत्० ॥ कही स्तवन कहीए ते आ प्रमाणे—

॥ अथ स्तवन ॥

॥ हरीया मन लागो ॥ ए देशी ॥

श्री श्रुत चौद भेदे करी, वरणवे श्री जिनराज रे ॥
उपधानादि आचारथी, सेविये श्रुत महाराज रे ॥
श्रुत शु दिल मान्यो ॥ दिल मान्योरे, मन मान्यो,
प्रभु आगम सुखकार रे ॥ श्रुत० ॥ ए आकणी ॥१॥
एकादि अक्षर संयोगथी, असयोगी अनत रे ॥
स्वपर पर्याये एकाक्षरो, गुण पर्याय अनत रे श्रुत० ॥२॥
अक्षरनो अनतमो, भाग उघाडो छे नित्य रे ॥
ते तो अवराए नहीं, जीव सूक्ष्मतु ए चित्त रे ॥ श्रुत० ॥३॥
इच्छे सांभलवा फरी पूछे, निसुणे ग्रहे विचारत रे ॥
निश्चय धारणा तिम करे, धीगुण आठ ए गणत रे ॥श्रुत०॥४॥
वादी चौवीश जिनतणा, एक लाख छवीश हजार रे ॥
वर्धे सयल सभामाहे, प्रवचन महिमा अपार रे ॥श्रुत० ॥५॥
भणे भणावे सिद्धातने, लखे लखावे जेह रे ॥
तस अवतार वखाणीए, विजय लक्ष्मी गुण गेह रे ॥श्रुत०॥६॥

॥ इति स्तवन ॥

पछी जयवीयराय कही खमासमण दइ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् श्री श्रुतज्ञान आराधनार्थं करोमि काउस्सग ॥वद०॥अन्न०॥ एक लोगस्स अथवा चार [illegible]नो काउस्सग करी पारीने थोय कहेवी, ते कहे छे.

॥ अथ थुइ ॥

॥ गोयम बोले ग्रंथ संभाळी ॥ ए देशी ॥

त्रिगडे बेशी श्री जिनभाण, बोले भाषा अमिय समाण,
मत अनेकांत प्रमाण ॥
अरिहंत शासन सफरी सुखाण, चउ अनुयोग जिहां गुणखाण,
आतम अनुभव ठाण ॥
सकल पदारथ त्रिपदी जाण, जोजन भूमि पसरे वखाण,
दोष बत्रीश परिहाण ॥
मेघाकिंभाषित ते श्रुत नाण, विजयलक्ष्मी सूरि कहे बहुमान,
चित्त धरजो ते सयाण ॥ १ ॥ इति स्तुति ॥

पछी खमासण दइ, उभा रही, श्रुतज्ञानना चौद गुण वर्णववाने अर्थे दोहा कहेवा ते लखे छे

॥ दोहा ॥

वंदो श्रीश्रुतज्ञानने, भेद चतुर्दश वीश ॥
तेहमां चउदश वरणवुं, श्रुत केवळी श्रुत इश ॥ १ ॥
भेद अढार अकारना, एम सवि अक्षर मान ॥
लब्धि संज्ञा व्यंजन विधि, अक्षर श्रुत अवधान ॥ २ ॥

॥ अथ पीठिका ॥

पवयण श्रुत सिद्धांत ते, आगम समय वखाणी ॥
पूजो बहु विध रागथी, चरण कमल चित्त आणी. १ ॥१॥खमा०

॥ ए दोहो गुण गुण दीठ कहेवो ॥

कर पल्लव चेष्टादिके, लखे अंतर्गत वाच ॥
एह अनक्षर श्रुततणो, अर्थ प्रकाशक साच ४ ॥ पव० ॥ २ ॥
संज्ञा जे दीहकालिकी, तेणे सन्निया जाण ॥
मन इंद्रियथी उपन्यु, संज्ञी श्रुत अहिठाण ५ ॥ पव० ॥ ३ ॥
मन रहित इंद्रियथकी, निपन्यु जेहने ज्ञान ॥
क्षय उपशम आवरणथी, श्रुत असंज्ञी वखाण ६ ॥ पव० ॥ ४ ॥
जे दर्शन दर्शन विना, दर्शन ते प्रतिपक्ष ॥
दर्शन दर्शन होय जिहां, ते दर्शन प्रत्यक्ष. ७॥
कलित त्रिभंगी भंगथर, नैगमादि नय भूर ॥
शुद्ध शुद्धतर वचनथी, समकित श्रुत बडनूर. ८ ॥ पव० ॥ ५ ॥
भंग जाल नर वाल मति, रचे विविध आयास ॥
तिहां दर्शन दर्शनतणो, नहीं निदर्शन भास. ९ ॥
सद् असद् वहेंचण विना, ग्रंह एकाते पक्ष ॥
ज्ञान फल पामे नहीं, ए मिथ्या श्रुत लक्ष. १० ॥ पव० ॥ ६ ॥
भरतादिक दश क्षेत्रमां, आदि सहित श्रुत धार ॥
निज निज गणधर विरचियो, पामी प्रभु आधार. ११ ॥पव०॥७॥
दुप्पसह सूरीश्वर सुधी, वर्तशे श्रुत आचार ॥
एक जीवने आश्री, सादि सात सुविचार. १२ ॥ पव० ॥ ८ ॥
श्रुत अनादि द्रव्यनयथकी, शाश्वत भाव छे एह ॥
महाविदेहमां ते सदा, आगम रयण अछेह. १३ ॥ पव० ॥ ९ ॥
अनेक जीवने आश्री, श्रुत छे अनादि अनत ॥
द्रव्यादिक चउ भेदना, सादि अनादि विरतत. १४ ॥पव० ॥१०॥

सरिखा पाठ छे सूत्रमा, ते श्रुत गमिक सिद्धांत ॥
माये दृष्टिवादमा, शोभित गुण अनेकांत १५ ॥ पव० ॥ ११ ॥
सरिखा आलावा नहि, ते कालिक श्रुतवंत ॥
अगमिक श्रुत ए पूजीए, त्रिकरण योग हसंत.१६ ॥ पव० ॥ १२ ॥
अढार हजार पदे करी, आचारांग वखाण ॥
ते आगल दुगुणा पदे, अंगपविट्ठ सुअनाण.१७ ॥ पव० ॥ १३ ॥
बार उपांगह जेह छे, अंगबाहिर श्रुत तेह ॥
अनंगपविट्ठ वखाणीए, श्रुत लक्ष्मी सूरि गेह. १८ ॥ पव० ॥१४॥

सातमा ने नवमा दुहा वखते खमासमण न देवा

॥ इति श्रुत ज्ञान समाप्त ॥

॥ अथ तृतीय श्री अवधि ज्ञान चैत्यवदन ॥

खमासमण दइ, इच्छा० अवधिज्ञान आराधनार्थं चैत्यवदन करु ? इच्छ कही चैत्यवदन कहेवुं जे नीचे प्रमाणे —

अवधिज्ञान त्रीजुं कह्यु, प्रगटे आत्मप्रत्यक्ष ।
क्षय उपशम आवरणनो, नवि इंद्रिय आपेक्ष ॥
देव निरय भव पामतां, होय तेहने अवश्य ।
श्रद्धावंत समय लहे, मिथ्यात विभंग वश्य ॥
नर तिरिय गुणथी लहे, शुभ परिणाम सयोग ।
काउस्सग्गमां मुनि हास्यथी, विघटे ते उपयोग ॥ १ ॥
जघन्यथी जाणे जुए, रुपी द्रव्य अनंता ।
उत्कृष्टा सवि पुद्‌गला, मूर्त्ति वस्तु मुणता ॥
लघु अंगुलतणो, भाग असंखित देखे ।

तेहमां पुद्गल खंध जे, तेहने जाणे पेखे ॥
लोक प्रमाणे अलोकमांए, खंड असंख्य उक्किठ ।
भाग असंख्य आवालितणो, अद्धा लघुपणे दीठ ॥ २ ॥
उत्सर्पिणी अवसर्पिणीए, अतीत अनागत अद्धा ।
अतिशय संख्यातिगपणे, सांभलो भाव प्रबंधा ॥
एक एक द्रव्यमां चार भाव, जघन्यथी ते निरखे ।
असंख्याता द्रव्य दीठ, पर्यव गुरुथी परखे ॥
चार भेद संक्षेपथी ए, नंदीसूत्र प्रकाशे ।
विजयलक्ष्मी सूरि ते लहे, ज्ञान भक्ति सुविलासे ॥ ३ ॥

॥ इति चैत्यवंदन समाप्त ॥

पछी नमुथ्थुणं० ॥ जावंति० ॥ नमोऽर्हत्० ॥ कही स्तवन कहेवु, ते कहे छे

॥ अथ स्तवन ॥

॥ कुवर गभारो नजरे देखताजी ॥ ए देशी ॥

पूजो पूजो अवधिज्ञानने प्राणिया रे, समकितवंतने ए गुण होय रे ॥
सवि जिनवर ए ज्ञाने अवतरी रे, मानव महोदय जोय रे ॥पूजो०॥१॥
शिवराज ऋषि विपर्यय देखतो रे, द्वीप सागर सात सात रे ।
वीर पसाये दोष विभंग गयो रे,प्रगट्यो अवधि गुण विख्यात रे॥पूजो०
गुरु स्थिति साधिक छासठ सागर रे, कोइने एक समय लघु जाण रे॥
भेद असंख्य छे तरतम योगथी रे, विशेषावश्यकमां एह वखाण रे॥पूजो०
चारशें एक लाख तेत्रीस सहस(११३४००)छे रे, ओहि नाणी मुणींद रे॥

ऋषभादिक चउवीश जिणदना रे, नमे प्रभुपद अरविंद रे॥पूजो०॥४॥
अवधिज्ञानी आणदने दीए रे, मिच्छामि दुकड गोयमस्वामि रे ॥
वरजो आशातन ज्ञान ज्ञानी तणी रे, विजयलक्ष्मी सुख धाम रे॥पूजो०॥५॥

॥ इति अवधिज्ञान स्तवन ॥

पछी जयवीयराय कही खमासमण दइ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अवधिज्ञान आराधनार्थं करेमि काउस्सग्ग ॥ वंदण० ॥ अन्नत्थ० ॥ एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी पारीने थोय कहेवी ते नीचे प्रमाणे—

॥ अथ थुई ॥

॥ शंखेश्वर साहिब जे समरे ॥ ए देशी ॥

ओहि नाण सहित सवि जिनवरु, चवी जननी कुखे अवतरु ।
जस नामे लहीए सुख तरु, सवि ईति उपद्रव संहरु ॥
हरि पाठक संशय संहरु, वीर महिमा ज्ञान गुणायरु ।
ते माटे प्रभुजी विश्वभरु, विजयांकित लक्ष्मी सुहकर ॥ १ ॥

॥ इति स्तुति ॥

पछी खमासमण दइ उभा रही अवधिज्ञानना गुण वर्णववाने अर्थे दुहा कहेवा ते कहे छे

॥ दुहा ॥

असख्य भेद अवधितणा, षट् तेहमां सामान्य ॥
क्षेत्र पनक लघुथी गुरु, लोक असख्य प्रमाण ॥ १ ॥

लोचनपरे साथे रहे, ते अनुगामिक धाम ॥
छासठ सागर अधिक छे, एक जीव आश्री ठाम ॥ २ ॥

उपन्यो अवधिज्ञाननो, गुण जेहने अविकार ॥
वंदना तेहने माहरी, श्वासमांहि सो वार ३. ॥ १ ॥ ख० ॥

त्रीजो दुहो सर्व खमासमणे कहेवो. ॥

जेह क्षेत्रे ओहि उपन्यु, तिहां रह्यो वस्तु देखत ॥
थीर दीपकनी उपमा, अननुगामी लहंत ४. ॥उप०॥२॥ख०॥

अगुल असंख्येय भागथी, वधतुं लोक असख्य ॥
लोकावधि परमावधि, वर्धमान गुण कख्य. ५. ॥उप०॥३॥ख०॥

योग्य सामग्री अभावथी, हीयमान परिणाम ॥
अध अध पूरव योगथी, एहवो मननो काम. ६.॥उप०॥४॥ख०॥

सख्य असंख्य जोजन सुधी, उत्कृष्टो लोकांत ॥
देखी प्रतिपाती होये, पुद्गल द्रव्य एकांत ७.॥उप०॥५॥ख०॥

एक प्रदेश अलोकनो, पेखे जे अवधि नाण॥
अपडिवाइ अनुक्रमे, आपे केवल नाण. ८ ॥ ॥उप०॥६॥ख०॥

॥ इति अवधि ज्ञान सपूर्ण. ॥

खमासमण दइ इच्छा० मनपर्यव ज्ञान आराधनार्थं चैत्यवंदन करु ? इच्छ कही चैत्यवंदन कहेवु ते आ प्रमाणे—

॥ अथ चतुर्थ श्री मन पर्यवज्ञान चैत्यवंदन ॥

श्रीमनपर्यव ज्ञान छे, गुण प्रत्ययी ए जाणो ।
अप्रमादी ऋद्धिवतने, होय संयम गुणठाणो ॥
कोइक चारित्रवंतने, चढते शुभ परिणामे ।
मनना भाव जाणे सही, साकार उपयोग ठामे ॥
चिंतवता मनोद्रव्यना, जाणे खंध अनंता ।
आकाशे मनोवर्गणा, रह्या ते नवि मुणता ॥ १ ॥

सज्ञि पचेंद्रिय प्राणीए, तनु योगे करी ग्रहीया ।
मनयोगे करी मनपणे, परिणमे ते द्रव्य मुणिया ॥
तिरछु माणस क्षेत्रमां, अढी द्वीप विलोके ।
तिर्छा लोकना मध्यथी, सहस जोयण अधोलोके ॥
उरध जाणे ज्योतिषी लगे, पलियनो भाग असंख्य ।
काळथी भाव थया थशे, अतीत अनागत संख्य ॥ २ ॥

भावथी चिंतित द्रव्यना, असंख्य पर्याय जाणे ।
ऋजुमतिथी विपुलमति, अधिका भाव वखाणे ॥
मनना पुद्गल देखीने, अनुमाने ग्रहे साचु ।
वितथपणु पामे नहीं, ते ज्ञाने चित्त राच्यु ॥

अमूर्त भाव प्रगटपणे ए, जाणे श्री भगवंत ।
चरण कमळ नमु तेहना, विजय लक्ष्मी गुणवंत ॥ ३ ॥

॥ इति चैत्यवंदन ॥

पछी नमुथ्थुण० ॥ जावंति० ॥ नमोऽर्हत्० ॥ कही स्तवन कहीए ते आ प्रमाणे—

॥ अथ स्तवन ॥

॥ जीरेजी ॥ ए देशी ॥

जीरे मारे श्री जिनवर भगवान,
अरिहंत निज निज ज्ञानथी ॥ जीरेजी ॥
जी० ॥ सयम समय जाणंत,
नव लोकांतिक मानथी ॥ जीरेजी ॥ १ ॥
जी० ॥ तीर्थ वर्तावो नाथ,
इम कही प्रणमे ते सुरा ॥ जीरेजी ॥
जी० ॥ षट् अतिशयवंत दान,
लेइने हरखे सुर नरा ॥ जीरेजी ॥ २ ॥
जी० ॥ इण विध सावे अरिहंत,
सर्व विरति जव उच्चरे ॥ जीरेजी ॥
जी० ॥ मनःपर्यव तव नाण,
निर्मल आतम अनुसरे ॥ जीरेजी ॥ ३ ॥
जी० ॥ जेह [illegible] प्रति है

जी० ॥ अप्रमादी ऋद्धिवंत,
गुणठाणे गुण नीपजे ॥ जीरेजी ॥ ४ ॥
जी० ॥ एक लक्ष पीस्तालीस हजार,
पांचसें एकाणु (१४५५९१) जाणीए ॥ जीरेजी ॥
जी० ॥ मननाणी मुनिराज,
चोवीश जिनना वखाणीए ॥ जीरेजी ॥ ५ ॥
जी० ॥ हु वदु धरी नेह,
सवि संशय हरे मनतणा ॥ जीरेजी ॥
जी० ॥ विजयलक्ष्मी शुभ भाव,
अनुभव ज्ञानना गुण घणा ॥ जीरेजी ॥ ६ ॥ जी० ॥
॥ इति मनःपर्यव ज्ञान स्तवन ॥

पछी जयवीयराय कही, खमासमण दइ, इच्छाकारेण सं० ॥ मनःपर्यव ज्ञान आराधनार्थं करेमि काउस्सग्ग ॥वंदणव० ॥ अन्नथ्थ० ॥ एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी थोय कहेवी ते आ प्रमाणे—

॥ अथ थोय ॥

॥ श्री शंखेश्वर पास जिनेश्वर ॥ ए देशी ॥

प्रभुजी सर्व सामायिक उचरे, सिद्ध नमी मह्वारी जी ॥
छद्मस्थ अवस्था रहे छे जिहां लगे, योगासन तपधारीजी ॥
चोथु मनपर्यव तब पामे, मनुज लोक विस्तारी जी ।
ते प्रभुने प्रणमो भवि प्राणी, विजय लक्ष्मी सुखकारी जी ॥ १ ॥
॥ इति स्तुति ॥

पछी खमासमण दइ उभा रही मनःपर्यवज्ञानना गुण स्तववा अर्थे दुहा कहेवा ते आ प्रमाणे—

॥ अथ दुहा ॥

मन:पर्यव दुग भेदथी, संयम गुण लही शुद्ध ॥
भाव मनोगत साज्ञिना, जाणे प्रगट विशुद्ध ॥ १ ॥
घट ए पुरुषे धारीयो, इम सामान्य ग्रहंत ॥
माये विशेष विमुख लहे, ऋजुमति मनह मुणंत ॥ २ ॥
ए गुण जेहने उपन्यो, सर्व विरति गुणठाण ॥
प्रणमुं हितथी तेहना, चरणकमल चित्त आणखमा०॥१॥'॥ख०॥
नगर जाति कंचननणो, धार्यो घट एह रूप ॥
इम विशेष मन जाणतो, विपुलमति अनुरूप.४ ॥ए गुण०॥२॥ख०॥

॥ इति मन:पर्यव ज्ञान संपूर्ण ॥

खमासमण दइ इच्छा० केवलज्ञान आराधनार्थं चैत्यवंदन करु ? इच्छं कही चैत्यवंदन कहेवुं ते आ प्रमाणेः—

॥ अथ पंचम श्री केवलज्ञान चैत्यवंदन ॥

श्रीजिन चउनाणी थइ, शुक्ल ध्यान अभ्यासे ।
अतिशय अतिशय आत्मरुप, क्षण क्षण प्रकासे ॥
निद्रा स्वप्न जागरदशा, ते सवि दूरे होवे ।

चोथी उजागर दशा, तेहनो अनुभव जोवे ॥
क्षपक श्रेणि आरोहियाए, अपूर्व शक्ति सयोगे ।
लही गुणठाणु बारमु, तुर्य कषाय वियोगे. ॥ १ ॥
नाण दसण आवरण मोह, अतराय घन घाति ।
कर्म दुए उच्छेदीने, यथा परमातम जाति ॥
दोय धर्म सवि वस्तुना, समयांतर उपयोग ।
प्रथम विशेषपणे ग्रहे, बीजे सामान्य सयोग ॥
सादि अनत भागे करी, दर्शन ज्ञान अनत ।
गुणठाणु लही तेरमु, भाव जिणद जयवत. ॥ २ ॥
मूळ पयडीमां एक बध, सत्ता उदये चार ।
उत्तर पयडीनो एक बध, उदय रहे बायाल ॥
सत्ता पचासीतणी, कर्म जेहवा रज्जु छार ।
मन वच काया योग जास, अविचळ अविकार ॥
सयोगी केवलीतणी ए, पामी दशाए विचरे ।
अक्षय केवलज्ञानना, विजय लक्ष्मी गुण उचरे ॥ ३ ॥

॥ इति श्री केवल ज्ञान चैत्यवदन ॥

पछी नमुथ्थुणं० ॥ जावंति० ॥ नमोऽर्हत् ॥ कही स्तवन कहेवु ते आ प्रमाणे—

॥ अथ स्तवन ॥

॥ कपूर होये अति ऊजलो रे ॥ ए देशी॥

श्रीजिनवरने प्रगट थयुरे, क्षायिक भावे ज्ञान ॥

दोष अढार अभावथी रे, गुण उपन्या ते प्रमाणरे ॥
भविया ! वंदो केवळ ज्ञान ॥ १ ॥
पचमी दिन गुण खाण रे ॥ भविया वंदो० ॥ ए आंकणी ॥
अनामीना नामनो रे, किश्यो विशेष कहेवाय ॥
ए तो मध्यमा वैखरी रे, वचन उल्लेख ठराय रे ॥भ०॥वंदो०॥२॥
ध्यान टाणे प्रभु तु होय रे, अलख अगोचर रूप ॥
परा पश्यती पामीने रे, काइ प्रमाणे मुनिभूपरे ॥भ०॥वंदो० ॥३॥
छती पर्याय जे ज्ञानना रे, ते तो नवि बदलाय ॥
ज्ञेयनी नवनवी वर्तना रे, समयमां सर्व जणाय रे ॥भ०॥वंदो०॥४॥
बीजा ज्ञानतणी प्रभा रे, एहमा सर्व समाय ॥
रविप्रभाथी अधिक नहीं रे, नक्षत्र गण समुदाय रे ॥भ०॥वंदो०॥५॥
गुण अनंता ज्ञानना रे, जाणे धन्य नर तेह ॥
विजय लक्ष्मी सूरि ते लहे रे, ज्ञान महोदय गेह रे॥भ०॥वंदो०॥६॥
॥ इति केवल ज्ञान स्तवन ॥

पछी जयवीयराय कही खमासमण दइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् श्री केवलज्ञान आराधनार्थं करेमि काउस्सग्ग ॥ वंदणव० ॥ अन्नत्थ० ॥ एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी नमोऽर्हत्० कही थोय कहेवी ते आ प्रमाणे—

॥ अथ थोय ॥

॥ मह ऊठी वंदू ॥ ए देशी ॥

छत्र त्रय चामर, तरु अशोक सुखकार ।

दिव्य ध्वनि दुदुभि, भामडल झलकार ॥
वरसे सुर कुसुमे, सिंहासन जिन सार ।
वदे लक्ष्मी सूरि, केवल ज्ञान उदार ॥ ? ॥
॥ इति स्तुति ॥

पछी खमासमण दइ उभा रही केवलज्ञानना गुण स्तववा दुहा कहेवा ते आ प्रमाणे–

॥ अथ दुहा ॥

बहिरातम त्यागे करी, अतर आतम रूप ॥
अनुभवि जे परमातमा, भेद एकज चिद्रूप ॥ १ ॥
पुरपोत्तम परमेश्वरू, परमानद उपयोग ॥
जाणे देखे सर्वने, स्वरूप रमण सुखभोग ॥ २ ॥
गुण पर्याय अनतता, जाणे सघला द्रव्य ॥
काल त्रय वेदी जिणद, भाषित भव्याभव्य ॥ ३ ॥
अलोक अनतो लोकमां, थापे जेह समथ्य ॥
आतम एक प्रदेशमां, वीर्य अनत पसथ्य ॥ ४ ॥
केवल दसण नाणनो, चिदानद घन तेज ॥
ज्ञान पचमी दिन पूजीए, विजय ल मी शुभ हेज ॥५॥खमा०॥

पीछे खमासमण दइ अविधिआशातनानो मिच्छामी दुक्कड देवो

इति श्री विजयलक्ष्मी सूरिकृत, विधि सहित श्री ज्ञान पचमी देववदन समाप्त ॥

श्री सौभाग्यपंचमीना देववन्दनना अर्थ ॥

॥ मतिज्ञानना चैत्यवन्दननो अर्थ ॥

श्री सौभाग्यपंचमीना दिवस सर्व दिवसोमा अलंकार तुल्य छे ते दिवसे पांच ज्ञाननी पूजा करीए के जेथी जन्म सफल थाय. ॥१॥ सामायिक तथा पोसहमां (देशावकाशिकमां पण) सारा गन्धवाला वासक्षेपादि चूर्ण वडे निरवद्य पूजाना विचार जाणवो. तथा मनोहर ज्ञाननुं ध्यान करवु । २ ॥ पूर्व तथा उत्तर दिशामां प्रधान त्रण पीठ रचीने सुखकर्त्ता परमात्माना पंचवर्ण बिम्बने स्थापन करीए ॥ ३ ॥ पूजा सामग्रीने लायक पांचपांच वस्तुओ भेगी करी पंचवर्णना कलश भरी दुःखना उपभोगनो नाश करीए॥४॥मति ज्ञाननी प्राप्तिने माटे शक्ति अनुसार पूजा करीए, जे मतिज्ञान श्रीजिनशासनना राजा (तीर्थंकर प्रभु) ए पंचज्ञानमां अग्रेसर कहेलु छे. ॥५॥ मतिज्ञान तथा श्रुतज्ञानविना अवधिज्ञान विगेरे मोटा ज्ञानो थता नथी, ते कारणथी मतिज्ञान प्रथम कह्यु छे, मति अने श्रुतमां पण मतिनु प्रधानपणुं छे, ॥ ६ ॥ मतिश्रुतना आवरणनो क्षयोपशम तथा प्राप्ति समानकाले थाय छे [१]स्वामि आदिके करीने मतिश्रुतनो अभेद छे, पण मुख्यता उपयोगकालमां होय छे (जे वखते जे ज्ञाननो उपयोग वर्त्ते ते वखते तेज मुख्य जाणवु) ॥ ७ ॥ [२]लक्षण तथा

---

[१] स्वामी, काल, कारण, विषय, परोक्ष, [२] आगळ दुहामां बतावशे ते लक्षण तथा भेदो

भेदोए करी तथा कारण कार्यना सम्बंधीते बेनो भेद छे कांचन अने कल्पना सम्बन्धनी माफक मति साधन छे अने श्रुत साध्य छे।'८॥ परमेश्वर परमात्मा सर्व सिद्ध भगवन्तो मतिज्ञान पामीने केवळ लक्ष्मीना भडार थया छे ॥ ९ ॥

॥ मतिज्ञानना स्तवननो अर्थ ॥

हे शुद्ध भव्य प्राणीओ ! सर्व पर्वणीने दिवसे ज्ञानने नमस्कार करो के जे ज्ञान जगतमां गाजी रह्यु छे, वळी शुभ उपयोगमां रहेतां क्षणवारमां मिथ्यात्वथी संचित थयेली कर्मरज निर्जरी जाय छे (आत्माथी छुटी पडे छे) ॥१॥ 'सत्पद प्ररूपणता विगेरे नव द्वा-

१ सत्पद प्ररूपणामां गति विगेरे वीश मार्गणाओए करी मतिरूपी सत्पदनी प्ररूपणा करवी तेमां गतिमार्गणामां कयीकयी गतिओमा मतिज्ञान पामेला तथा पामता जीवो होय ? चारे गतिओमा मतिज्ञान पामेला जीवो होय, पामता जीवो कोइ वखत होय तथा कोइ वखत न होय १ इन्द्रिय मार्गणाए पचेंद्रियजीवो पूर्वप्रतिपन्न होय, प्रतिपद्यमाननी भजना जाणवी विकलेन्द्रियो पूर्वप्रतिपन्न होय (सिद्धान्तकारना मते, कार्मग्रन्थिकमते उभय पण न होय) एकेन्द्रियोमा एके पण न होय २ कायमार्गणाए त्रसकायमां पूर्वप्रतिपन्न होय, प्रतिपद्यमान भजना पृथ्वीकायादिमां उभयाभाव ३ योगमार्गणाए समुदित त्रणे योगोमा पचेन्द्रियनी माफक, मनोरहित वचनयोग विषे विकलेन्द्रियनी माफक, केवळ काययोगमां उभयाभाव ४ वेदद्वारे त्रणेवेदोमां पूर्वप्रतिपन्न होय, प्रतिपद्यमान भजना ५. कषायद्वारे अनन्तानुबन्धिमां

रवडे मतिज्ञाननी व्याख्यानो प्रकाश छे, व्यवहारनये ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम करवाथी अज्ञानी जीवने ज्ञाननो उल्लास थाय छे ॥ २ ॥ निश्चयनय कहे छे के ज्ञानी होय तेज ज्ञान पामे छे भगवन्तोने तो बन्ने नयो सत्य छे आ ज्ञान उपयोगथी सर्व प्राणीओने हमेशां अन्तर्मुहूर्त्त सुधी रहे छे (सतत उपयोग अन्तर्मुहूर्त्तज रहे छे)॥ ३ ॥

उभयाभाव. बाकी त्रणमां पूर्वप्रतिपन्न होय, प्रतिपद्यमान भजना ६ लेश्याद्वारे शुद्ध त्रणमां पचेन्द्रियनी माफक, अशुद्ध त्रणमां पूर्वप्रतिपन्न होय, बीजा नही ७. सम्यक्त्व मार्गणाए व्यवहारनये पूर्वप्रतिपन्न होय पण प्रतिपद्यमान न होय, निश्चयनये उभय पण होय ८ ज्ञानद्वारे व्यवहारनये चार ज्ञानवालाओ पूर्वप्रतिपन्न होय, प्रतिपद्यमान न होय केवली उभय न होय त्रण अज्ञानीओ प्रतिपद्यमान विवक्षितकाले होय पण पूर्व प्रतिपन्न न होय. निश्चयनये मति श्रुत अवधिज्ञानवाला प्रतिपन्न निश्चये होय, प्रतिपद्यमान पण विवक्षितकाले होय. मनःपर्यायज्ञानी पूर्वप्रतिपन्न होय, प्रतिपद्यमान नहीं केवली तथा त्रण अज्ञानी उभय पण न होय ९ दर्शनद्वारे चक्षु अचक्षु दर्शन लब्धिवाला पूर्वप्रतिपन्न होय, प्रतिपद्यमान भजना, अवधिदर्शनी प्रतिपन्न होय,प्रतिपद्यमान नही. केवलदर्शनी उभय पण न होय.१०.संयतद्वारे पूर्व प्रतिपन्न होय, प्रतिपद्यमान नहीं ११ उपयोगद्वारे साकारोपयोगी पूर्वप्रतिपन्न होय,प्रतिपद्यमान भजना अनाकारोपयोगी प्रतिपन्न होय, प्रतिपद्यमान न होय १२ आहारकद्वारे आहारक पूर्व प्रतिपन्न होय, प्रतिपद्यमान भजना. अनाहारक पूर्वप्रतिपन्न होय, प्र-

आ ज्ञाननी लब्धि जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त काळ रहेछे अने उत्कृष्टथी छासठ सागरोपम अने मनुष्य भवो अधिक, एटलो काळ रहेछे अने घणा प्रकारना जीवोनी अपेक्षाए अन्तर (विरह) कोइ दिवस पण होतो नथी ॥ ॥ (जघन्यथं) वर्त्तमान समये आ ज्ञान पामनारा

तिपन्नमान नही १३ भाषकद्वारे भाषा लब्धिवाला प्रतिपन्न होय, प्रतिपन्नमान भजना १४ परित्तद्वारे प्रत्येक शरीरी प्रतिपन्न होय, प्रतिपन्नमान भजना साधारण उभय नही १५ पर्याप्तिद्वारे पर्याप्ता प्रतिपन्न होय, प्रतिपन्नमान भजना अपर्याप्ता पूर्वप्रतिपन्न होय, प्रति पन्नमान नही १६ सूक्ष्मद्वारे सूक्ष्म उभय नही बादर प्रतिपन्न होय, प्रतिपन्नमान भजना १७ संज्ञिद्वारे संज्ञि पूर्वप्रतिपन्न होय, प्रतिपन्न- मान भजना असंज्ञि पूर्वप्रतिपन्न होय, प्रतिपन्नमान नही १८. भव सिद्धिकद्वारे भवसिद्धिको संज्ञि माफक, अभवसिद्धिको उभयशून्य १९ चरमद्वारे चरम पूर्व प्रतिपन्न होय, प्रतिपन्नमान भजना. अचरम उभयशून्य २० ॥ इति सत्पदप्ररूपणा ॥१॥ द्रव्य प्रमाणमां प्रतिपन्न मान होय अथवा न होय, होय तो जघन्यथी एक बे अथवा त्रण, उत्कृष्टथी क्षेत्रपल्योपमना असंख्यातमा भाग प्रमाण प्रदेशराशि जेटला. प्रतिपन्न जीवो जघन्यथी पण क्षेत्रपल्योपमना असंख्यातमा भाग प्र- माण प्रदेश राशि जेटला, उत्कृष्टथी एथी विशेषाधिक ॥ २ ॥ क्षे- त्रद्वारे सर्व मतिज्ञानीओ लोकना असंख्यातमा भागमां रहेछे. एक जीव इलिकागतिए उपर अनुत्तर विमानमां जतो अथवा त्यांथी आवतो चौदीया सात भागमा रहे छे. नीचे छठी पृथ्वीमां जतो अ-

जीवो एक बे होय अथवा न पण होय अने उत्कृष्टा क्षेत्र पल्योपमना असंख्यातमा भागमा जेटला आकाशप्रदेशो होय तेटली संख्याए जाणवा ॥ ५ ॥ मतिज्ञान पामेला जीवो असंख्याता छे, अने मतिज्ञानथी पडवाइ थयेला (पडेला) अनन्ता छे, माटे हे भव्यजीवो ! ज्ञाननी सर्वप्रकारनी आशातनानो त्याग करो के जेथी विजयलक्ष्मी मेलवो ॥ ६ ॥

थवा त्यांथी आवतो सातीया पांच भागमा रहे छे ॥ ३ ॥ स्पर्शनाद्वारे पूर्वोक्त क्षेत्रथी स्पर्शना वधारे होय ॥ ४ ॥ कालद्वारे उपयोग आश्रयी एक अथवा अनेक जीवोने अन्तर्मुहूर्त्त काल, लब्धि आश्रयी जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त्त,उत्कृष्टथी छासठ सागरोपमथी वधारे. बे वार विजयादिमा अथवा त्रण वार अच्युत देवलोके जवाथी तेमा मनुष्य भवोनो काल वधारे जाणवो. नाना जीवोने अपेक्षी सर्व काल ॥ ५ ॥ अन्तरद्वारे एक जीवने आश्रयी जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त्तनु, उत्कृष्ट अपार्ध पुद्गल परावर्त्त, अनेक जीवोने आश्रयी अन्तर न होय ॥६॥ भागद्वारे मतिज्ञानीओ शेष ज्ञानी तथा अज्ञानीओना अनन्तमे भागे वर्त्ते छे. ॥ ७ ॥ भावद्वारे मतिज्ञानी क्षायोपशमिकभावे वर्त्ते छे. ॥ ८ ॥ अल्पबहुत्वद्वारे सर्वथी थोडा मतिज्ञान पामता जीवो, पामेला जीवो जघन्यपदे पण असंख्येयगुणा, तेथी उत्कृष्टपदे विशेषाधिक ॥ ९ ॥

॥ मतिज्ञाननी स्तुतिनो अर्थ ॥

श्रीमतिज्ञाननी तत्त्व[1] भेद[2] अने पर्याय[3]शब्दोए करीने व्याख्या करी छे ते मतिज्ञानी जीवो सामान्ये करी द्रव्यादि चार पदार्थोने जाण एम बहु छ तेओ वस्तुना अनन्ता धर्मोने निश्चये जाणे छे एमा अज्ञाननी विवक्षा करली नथी ते मतिज्ञाननी जो विजयलक्ष्मी रूप गुण प्राप्त करवानी अभिलाषा होय तो वन्दना तथा पूजना करो. ॥१॥

॥ श्री मतिज्ञानना दुहाना अर्थ ॥

(पीठिकाना दुहाना अर्थ)

श्री गौतमस्वामी महाराज भगवती आदि आगमोने विषे " नमो बंभीए लीविए " एवा शब्दोए करीने जेने नमस्कार करे छे ते "अ

---

१ तत्त्व–मतिज्ञाननु लक्षण जे आगल दुहाना अर्थमा स्पष्ट रीते बतावाश ते.

२ भेदो–व्यञ्जनावग्रह विगेरे अठावीश, बत्रीश, अथवा चार से, ३३६ ने ३४० छे

३ पर्याय–मतिज्ञानना बीजा नामो ईहा, अपोह, विमर्श, मार्गणा, गवेषणा, सञ्ज्ञा, स्मृति, मति, प्रज्ञा–आ सर्व आभिनिबोधिक ज्ञानना पर्यायो छे.

४ हसलिपी १, भूत० २, यक्ष० ३, राक्षस० ४, उर्दु० ५, यवनी० ६, तुर्की० ७, कीरी० ८ द्राविडी० ९, सिंधी० १०, मालवी० ११, नडी० १२, नागरी० १३, लाट० १४, फारसी० १५, नैमित्तिकी० १६, चाणाक्यी० १७, मूलदेवी० १८.

दार प्रकारना सज्ञाक्षर (लीपी) स्वरूप भगवती (पूज्य) एकान्त सुखरूप थी श्रुतदेवीने हु वादु छु ॥ १ ॥ [1]ज्ञेय (जाणवालायक) पदार्थो अनन्ता होवाथी ज्ञानना पण अनेक (अनन्त) भेदो थाय छे तेमांथी आत्माना धर्मने प्रकाश करनारा एकावन भेदोने हु कहुछु ॥ २ ॥ एकेक गुणदीठ एकेक खमासमण दइने एकेका ज्ञानगुणनी स्तवना करीए. ए प्रमाणे रुडा विवेकसहित एकावन खमासमण दइए ॥ ३ ॥ श्री सौभाग्यपंचमी (कार्त्तिकशुदी ५) ने दिवसे मतिज्ञाननी आराधना करो. ए मतिज्ञानना पूर्वोक्त एकावन भेदोमाना अठावीश भेदो छे, ते भेदोनी घणा मानपूर्वक स्तवना करीए ॥ ४ ॥

॥ गुण सत्तावी दुहाना अर्थ ॥

श्रोत्रादि इन्द्रियो तथा शब्दादि पुद्गलो ते बन्नेनो सबध थवाथी नेत्र तथा मन शिवायनी चार इन्द्रियो वडे जे प्रथम अव्यक्त ज्ञान थाय छे ते [2]व्यञ्जनावग्रह जाणवु (आ दुहानी अदर मतिज्ञानना चार भेदो बताव्या छे, श्रोत्रेन्द्रियव्यञ्जनावग्रह १ घ्राणेन्द्रियव्यञ्जनावग्रह २ रसनेन्द्रियव्यञ्जनावग्रह ३ स्पर्शनेन्द्रियव्यञ्जनावग्रह ४)॥५॥

---

[1] जगतना पदार्थमात्र त्रण प्रकारना होय छे १ ज्ञेय, २ हेय, ३ उपादेय तेमा हेय अने उपादेयपणु पण ज्ञानथी जाणेला पदार्थोमां ज होयछे माटे ते बन्ने पण ज्ञेय शब्दथी अगीकार कराय छे.

[2] इन्द्रियो तथा पदार्थना सबधवडे थवावालु पहेलु जे पदार्थनु ज्ञान ते, आ व्यंजनावग्रह मतिज्ञानना मुख्य पाच भेदो पैकी प्रथम भेद छे.

व्यञ्जनावग्रहनो जघन्य काल आवलिकानो असख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट काल वेथी नव श्वासोच्छ्वास प्रमाण छे चक्षु तथा मनविनानी बाकीनी चार स्पर्शन, रसन, घ्राण, श्रोत्र इन्द्रियो प्राप्यकारी छे (जे इन्द्रियोनो पोतार्थी जाणवालायक पदार्थनी साथे सयोगरूप सबन्ध थवाथी ज्ञान थाय ते प्राप्यकारी इन्द्रिय जाणवी) चक्षु तथा मन ए वे अप्राप्यकारी ज्ञानी पुरुषोए दीठेल छे (जे इन्द्रियथी पोताना विषयनो साथे सयोग थया विना ज्ञान थाय ते अप्राप्यकारी जाणवी) ॥ ६ ॥ सम्यक (यथार्थ) " ज जिणेहिं पवेइय तमेव सच्च नीसक " (वीतरागजिनेश्वर भगवन्तोए जे वताव्यु तेज सत्य अने नि शक छे) एवी भावनार्थी पवित्र थयेली श्रद्धावाला जे जीवोने ज्ञाननो प्रकाश उत्पन्न थयो छे ते पुरुषोना चरणकमलने भावपूर्वक उल्लास धारण करी हु त्रिकरणयोगे नमस्कार करु छु ॥ ७ ॥ वर्ण गध रस स्पर्शादिनो प्रकार जे ज्ञानमा जणाय नहि पण व्यञ्जनावग्रहथी वधारे स्पष्टताए 'आ काइक छे' एटलु वस्तुनु भान पाच इन्द्रियो तथा (इन्द्रिय नहि पण इन्द्रिय समान) छठ्ठा नोइन्द्रिय मनोद्वाराए थाय ते ज्ञान अर्थावग्रह[1] कहेवाय छे ॥ ८ ॥ (आ हु ज्ञानी अदर मतिज्ञानना ▪ भेदो वताव्या छे, १ स्पर्शेन्द्रिय अर्थावग्रह, २ जिह्वेन्द्रिय अर्थावग्रह, ३ घ्राणेन्द्रिय अर्थावग्रह, ४ चक्षुरिन्द्रिय

---

१ वर्ण गध रस स्पर्शनी भिन्नता शिवायनु आ काइक वस्तु छे एवु ज्ञान, आ मति ज्ञाननो बीजो भेद, आ ज्ञाननी स्थिति निश्चयथी एक समयनी छे अने व्यवहारथी अन्तर्मुहूर्त्तनी छे

अर्थावग्रह, ५ श्रवणेन्द्रिय अर्थावग्रह, ६ मानस अर्थावग्रह) ॥ ८ ॥ अन्वय (तेनी साथे व्याप्त) तथा व्यतिरेक (तेमां नहि रहेनारा) धर्मनी विचारणा वडे अर्थावग्रहथी जाणेला पदार्थनु अन्तर्मुहूर्त्तनी स्थितिवालु पांच इन्द्रियो तथा मनोद्वाराए ज्ञान थाय ते [1]ईहाविचारणा नामनु ज्ञान जाणवु-, यत्सत्त्वे तत्सत्त्वमन्वयः । यदभावे तदभावो व्यतिरेकः-जे छते तेनु सत्पणु होय ते अन्वय कहेवाय तथा जेना अभावथी तेनो अभाव होय ते व्यतिरेक कहेवाय, जेम "स्थाणुर्वा पुरुषो वा ?" आ प्रमाणे संशय थयापछी हाथ पग मुख विगेरे पुरुषना धर्म होवाथी आ पुरुष छे एम जणाय ते तेना अन्वय धर्म, तथा डाळ थाका विगेरे स्थाणुना धर्म तेमा नहि होवाथी आ स्थाणु नथी ते तेना व्यतिरेक धर्म जाणवा, आ दुहानी अंदर मतिज्ञानना छ भेदो दर्शाव्या छे १ स्पर्शनेन्द्रियईहा, २ रसनेन्द्रियईहा, ३ घ्राणेन्द्रियईहा, ४ चक्षुरिन्द्रियईहा, ५ श्रवणेन्द्रियईहा, ६ मानसईहा) ॥ ९ ॥ वर्णगन्धादिनो निश्चय थवाथी पांच इन्द्रिय तथा मनवडे आ देवता छे, मनुष्य छे, के अमुक वस्तु छे आवो उत्तम निश्चय थाय छे ते [2]अपाय नामनो भेद समजवो. (आ दुहामां पण मति

---

१ आ धर्मो होवाथी आ पदार्थ छे तथा आ धर्मो नहि होवाथी आ पदार्थ नथी-एवी विचारणा रूप ज्ञान आ मतिज्ञाननो त्रीजो भेद.

२ आ वस्तु आज छे एवा निश्चयवालु ज्ञान अपाय-ते मतिनो चोथो भेद छे आनु स्थितिमान अन्तर्मुहूर्त्तनु छे.

ज्ञानना छ भेदो दर्शाव्या छे, १ स्पर्शनेंद्रिय अपाय, २ रसनेन्द्रिय अपाय, ३ घ्राणेन्द्रिय अपाय, ४ चक्षुरिन्द्रिय अपाय, ५ श्रोत्रेन्द्रिय अपाय, ६ मानस अपाय) ॥ १० ॥ निश्चय करेली वस्तुने स्थिर ताए ग्रहण करवी कालान्तरे पण सत्य जाणवी ते, पांच इन्द्रिय तथा मन थकी थनार ज्ञान[1] धारणा छे. आ प्रमाणे धारणानो अर्थ करेवो. (आ दुहामां मतिज्ञानना छ भेदो दर्शाव्या छे, १ स्पर्शनेन्द्रिय धारणा, २ जिह्वेन्द्रिय धारणा, ३ घ्राणेन्द्रिय धारणा, ४ चक्षुरिन्द्रिय धारणा, ५ श्रवणेन्द्रिय धारणा, ६ मानस धारणा. अहीं सुधीमां व्यञ्जनावग्रह ४, अर्थावग्रह ६, ईहा ६, अपाय ६, धारणा ६, एम अठावीश भेदोनुं वर्णन कर्युं हवे तेना अवान्तर भेदो तथा बीजी रीतना मतिज्ञानना भेदो दर्शावे छे.) ॥ ११ ॥ पदार्थने निश्चयथी जाण्या पछी अपायथी अधिक गुणवालुं अतिशय निरन्तर जे, ते वस्तुनुं ध्यान ते अविच्युति[2] धारणानुं स्थान छे ॥१२॥ अविच्युति अने स्मृतिनुं जे कार्य अने कारण होय अर्थात् अविच्युतिनुं कार्य अने स्मृतिनुं कारण एवी सङ्ख्याता असङ्ख्याता काल सुधीनी स्थितिवाली वासना[3] नामनी धारणा जाणवी ॥ १३ ॥ पूर्वदृष्ट तथा

१ निश्चितवस्तुने लांबा काल सुधी अवधारवुं, आ मतिनो पांचमो भेद, एनो काल सङ्ख्यातो अथवा असङ्ख्यातो, अहीं सुधीमां स्पर्शेन्द्रियना ५, रसनेन्द्रियना ५, घ्राणेन्द्रियना ५, चक्षुरिन्द्रियना ४, श्रोत्रेन्द्रियना ५, मानसना ४, एम अठावीस भेद थया

२ धारणाना ३ भेदोमां पहेलो भेद ३ धारणानो त्रीजो भेद,

उत्तर दर्शने करी सहित अग्राह्यवस्तुनी एकता जणावनारु असंख्याते काले पण आतेज वस्तु छे (एम याद आपनारु) ए[१] जातिस्मरण ज्ञाननु तत्त्व छे (अर्थात् ते जातिस्मरण ज्ञान कहेवाय छे अने ते मतिज्ञानांतर्गत धारणानोज प्रकार छे) ॥ १४ ॥

(बहु अवग्रहादि बार भेदोनुं स्वरूप)

वाजित्रनो नाद सांभलीने आ दुंदुभिनो शब्द छे इत्यादि (पृथक् पृथक् वाजित्रना शब्द) अवग्रहादिथी जाणे ए मतिज्ञाननो 'बहु' नामनो आल्हादकारी भेद जाणवो, ॥ १५ ॥ (बहु १)॥ अंशसामान्ये करी वात छे, तेमा पण जे सामान्यनेज जाणे, जुदी जुदी जातिना वाजित्रना शब्द जुदा न जाणे ते 'अबहु' नामनो मतिज्ञाननो भेद जाणवो ॥ १६ ॥ (अबहु २)॥ एकज वाजित्रना शब्दमां पण मधुर तरुण विगेरे जुदी जुदी जातिओने क्षयोपशमनी रचनाए करी जाणे ते 'बहुविध'नामनो मतिज्ञाननो भेद जाणवो.॥१७ (बहुविध ३)॥ शब्दादिना मधुरता विगेरे धर्मोमां थोडो विचार जाणवो (विशेष न जाणवु) ते ' अबहुविध ' नामना मतिना प्रकारनो अर्थविस्तार जाणवो ॥ १८ ॥ (अबहुविध ४) ॥ घणो विलंब थया विना तत्कालज जाणे ते मतिज्ञाननो 'क्षिप्र' भेद जाणवो अथवा तेने अविलम्ब मति जाणवी. ॥ १९ ॥ (क्षिप्र ५)॥ घणो विचार करीने पछी जाणे ते 'अक्षिप्र' भेद जाणवो. (आ सर्व

---

१ धारणानो त्रीजो भेद

परस्पर विरुद्ध भेदोमा) क्षयोपशमनी विचित्रतानो स्वभाव महा ज्ञानीओ कहे छे ॥ २० ॥ (अक्षिप्र ६)॥ ध्वजा देखवाथी आ जिनेश्वर भगवाननुं चैत्य छे ए प्रमाणे अनुमाने करी सा-पेक्षनुं ज्ञान थाय तथा पूर्वपरम्शे समारीने जाणे ते 'निश्रित' भेदनो विचार जाणवो ॥ २१ ॥ (निश्रित ७)॥ बहारनुं चिन्ह दीठा शिवाय पदार्थोनो विचार जाणे ते आभिनिबोधिक ज्ञाननो (मतिनो) 'अनिश्रित' नामनो प्रधान भेद जाणवो ॥२२॥(अनिश्रित ८)॥ सन्देहरहित निश्चयपणाए करी वस्तुनो अधिकार जाणे ते 'निश्चित' नामना मतिज्ञानना भेदनो अर्थ जाणवो ॥ २३ ॥ (निश्चित ९)॥ वस्तु जाणवामां उपयुक्त जीव आम हशे के बीजी रीते हशे ? एम सन्देह करीने युक्त अनिश्चित पणाथी जाणे ते 'अनिश्चित' भेद जाणवो. ॥२४॥ (अनिश्चित १०)॥ बहु प्रमुखभेद करी जाण्या पछी जेम एक दिवस तेम हमेशा जे प्र-रूपने बुद्धि थाय-याद रहे ते 'ध्रुव' नामना मतिना भेदनुं रहस्य जाणवुं ॥ २५ ॥ (ध्रुव ११)॥ कोइ वखत बहु विगेरे भेदे करी जाणे अने कोइ वखत अबहु विगेरे स्वरूपथी जाणे ए प्रमाणे ज्यारे जाण त्यारे ते 'अध्रुव' भेदनुं स्वरूप जाणवुं ॥ २६ ॥ (अध्रुव १२)॥

(द्रव्यादिक चार प्रकारोनुं स्वरूप)

अवग्रहादि चार भेदोमा (विषयभूत) जाणवालायक ज्ञेय पदार्थो चार भेदे करी कह्या छे, ते चार भेद द्रव्यादिकथी जाणवा. ॥ २७ ॥ तेमा द्रव्यथी आदेशे एटले सामान्य प्रकारे करी सामान्य

विशेषनी मुख्यतावाला धर्मास्तिकायादिक सर्व द्रव्योने केटलाक पर्यायो सहित जाणे ॥२८॥(द्रव्यथी १)॥ क्षेत्रथी सामान्यप्रकारे तत्त्वप्रतीतिना अनुकूलपणाए करी सर्व लोकालोकना स्वरूपने जाणे ॥२९॥ (क्षेत्रथी २)॥ कालथी सामान्ये करी अतीत अनागतकाल अने वर्त्तनाकालनो समयविशेष ते सर्वने जेमां लवलेश असत्यपणुं नथी तेवी रीते जाणे ॥ ३० ॥(कालथी ३)॥ भावथी सामान्ये करी सर्व पर्यायोनो अनन्तमो भाग जाणे अथवा सामान्यथी औदयिकादिक [1]पांच भावोने जाणे ॥ ३१ ॥ (भावथी ४)॥

(चार प्रकारनी बुद्धिनु स्वरूप)

(श्रुतनिश्रित मतिज्ञानना अवग्रहादि तथा बहु अबह्वादि भेदो कह्या) हवे अश्रुतनिश्रित मतिज्ञानना चार भेदो छे ते कहे छे तेमां पहेलो अवसरोचित [2]रोहानी माफक कोइथी कली न शकाय एवा 'औत्पातिकी'नामनो भेद जाणवो ॥३२॥ गुरुमहाराजानो सर्व गुणोमा अग्रेसर एवो विनय करवाथी जे मतिज्ञाननो विस्तार पामीए ते 'वैनयिकी' बुद्धि नामनो बीजो भेद जाणवो आ बुद्धि सर्व गुणोमा शिरोमणि छे ॥३३॥ वारवार कार्यनो अभ्यास करवाथी जे मतिज्ञाननो भलो विचार उद्भवे तेने नदीसूत्रादिसूत्रोमां 'कार्मिकी' बुद्धि कही छे (आ त्रीजो

---

१ औदयिक, औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, पारिणामिक,

२ रोहकनु दृष्टान्त प्रसिद्ध छे.

भेद) ॥३४॥ अवस्थानो परिपाक थवाथी कमळवनमां [1]महा हंसनी माफक जे भरपुर बुद्धि पामे ते सतेज 'पारिणामिकी' बुद्धि जाणवी

१ कोइ सरोवरना कीनारे कमलना वनमां एक वृक्ष उपर हंसोनु टोळु रहेतुं हतु, ते वृक्षना नीचे एक वेलडी उगी, ते वेलडी वृक्ष उपर चडवा लागी, त्यारे मोटा वृद्ध हंसे पुत्रपौत्रादिनो विनाश न थाय माटे पुत्रादिपरिवारने कहु के–' आ वेलडीने चांचथी तोडी नांखो, नहिंतो आपणु मरण थशे ' त्यारे नाना तरुण वयना हंसो हांसी करता बोल्या–आ वृद्धने तो अहीं शाश्वत रहेवु लागे छे ? त्यारे वृद्ध चूप थइने बेसी रह्यो अनुक्रमे वेलडी वधती वधती वृक्ष उपर चडी एटले एक शीकारीए ते वेलडीनु अवलंबन करी वृक्ष उपर चडीने जाल पाथरी बहार गयेला हंसो आवाने बेठा एटले ते जाळमा सपडाया पछी तेमणे वृद्ध हंसने पुछ्यु के–' हवे कांइ जीववानो उपाय छे ? ' वृद्ध हंसे कह्यु, 'म प्रथमज कह्यु हतु हवे काइ उपाय नथी ! ' छेवट बीजा हंसोए घणु विनव्या त्यारे वृद्ध हंसे कह्यु के–' तमे सौ शब जेवा थइने पडी रहो, नहिंतो आ शीकारी डोक मरडीने मारी नाखशे ' सर्वे ते प्रमाणे रह्या शीकारीए आवीने जोयु एटले बधाने मरेला जोइ नीचे नाख्या दीधा एटले वृद्ध हंसे कह्यु 'हवे उडी जाओ' एटले बधा उडी गया आ दृष्टान्तमा वृद्ध हंसने अवस्थानो परिपक्वताथी वेलडीथी मरणनु ज्ञान, वेलडी तोडवी ए बचवानो उपाय, छेवटे मृतक जेवा रहेवाथी जीवननो उपाय–ए सर्वे ज्ञान थयु

(आ चोथो भेद.)॥३५॥ [1]अठावीश [2]बत्रीश [3]बे [4]चार अने [5]त्रण-सेने चाळीश आ प्रमाणे दर्शनथी एटले अपेक्षाथी जुदी जुदी रीते विचारवाथी मतिज्ञानना भेदो थाय छे. (सम्यक्त्वथी मतिज्ञान अने मिथ्यात्व होय तो मतिअज्ञान) ते सर्व भेदो विजयलक्ष्मीरूप गुणना मन्दिर समान छे ॥ ३६ ॥

॥ श्रुतज्ञानना चैत्यवंदननो अर्थ ॥

स्वपरने जे प्रकाश कर्त्ता छे ते श्रुतज्ञानने हमेशां नमस्कार करो (मत्यादि) ज्ञानथी वस्तुने जाणे देखे छे तथा श्रुतज्ञानथी संशयो टळे छे ॥ १ ॥ वचनना विषयमां न आवे तेवा (बोली न शकाय) अनभिलाप्य अनंता भावो पदार्थोमां रहेला छे, तेनो (अनभिलाप्यनो) अनंतमो भाग वचनपर्यायमां आवे तेवो (अभिलाप्य भाव) कह्यो छे ॥ २ ॥ वळी कहेवा लायक (अभिलाप्य) पदार्थोनो अनन्तमो भाग गुणे करी स्नेह सहित गणधर महाराजाए चौद पूर्वमां गुंथ्यो छे ॥ ३ ॥ चौद पूर्वधर भगवन्तो परस्पर अक्षरज्ञाने करी सरखा

---

१ अठावीश भेदो पूर्वे बताव्या ते जाणवा

२ तेमां अश्रुतनिश्रित चार भेळवतां बत्रीश

३ श्रुतनिश्रित अने अश्रुतनिश्रित एम बे भेदो.

४ द्रव्य क्षेत्र काळ भाव ए चार भेदो.

५ अठावीश भेदोने बहु अबहु आदि बार भेदे गुणतां ३३६ तेमां अश्रुतनिश्रित चार भेळवतां ॥ ३४० ॥

छे पण भावथी (पदार्थना ज्ञानथी) १६
मतिविशेषो श्रुतनाज प्रकारो छे ।४॥ तेम
गुंथायेल छ समकितसहित श्रुतज्ञानना
जाणवा. ॥ ५ ॥ द्रव्यगुणपर्याये करी जे
सर्व प्रदेशने जाणे छे एवो नन्दीसूत्रनो उ
जिनेश्वरना उपाधिथी विमुक्त थयेला चौद
छे ॥ ७ ॥ एकान्त वस्तु कहेनारा परती
ते समकितवन्त प्राणिए ग्रहण कर्यं छेन
॥ ८ ॥ जिनेश्वर महाराज तथा श्रुतकेवली
रित्र कहे छे-तेनु वर्णन करे छे तेथी श्रुत

---

१ अनन्त भागाधिक २ असंख्येय
गाधिक ३ संख्येयगुणाधिक ४ असंख्येय
धिक ६ अथवा हानिना छ स्थान लेवा.

२ ऋषभ० ४७५०, अजित० ३
अभिनन्दन० १५००, सुमति० २४००,
२०३०, चन्द्रप्रभ० २०००, सुविधि० १
श्रेयांस० १३००, वासुपूज्य० १२००,
१०००, धर्म० ९००, शान्ति० ८००,
मल्लि० ६६८, मुनिसुव्रत० ५००, नमि
पार्श्व० ३५०, वर्धमान० ३००, कुल.
होय छे

विजयलक्ष्मीसूरि महाराजनुं चित्त थयुं छे. ॥ ९ ॥

॥ श्रुतज्ञानना स्तवननो अर्थ ॥

श्रीतीर्थंकर महाराजाए श्रुतज्ञान चौद प्रकारे वर्णव्युं छे, ते श्रुतज्ञानरूपी महाराजानी[१] उपधान वहन करवा विगेरे आचारोवडे सेवना करीए, श्रुतज्ञानने विषे मारु दिल राची रह्युं छे. सुखकर्त्ता परमात्माना आगममां दिल तथा चित्त राच्युं छे ॥ १ ॥ एक विगेरे अक्षरोना संयोग करवाथी अकार संयोगी अनन्ता छे तेमज स्वपर पर्यायोए करीने एक अक्षर गुणपर्याय स्वरूपे अनन्तो छे (जो के अक्षरो सख्याता छे, तो पण अक्षरोना वाच्य अभिधेयो तथा तेना धर्मो अनन्ता होवाथी अनन्ता संयोगो सिद्ध थाय छे) ॥ २ ॥ अक्षरनो (ज्ञाननो) अनन्तमो भाग हमेशां उघाडो रहे छे, ते भाग तो अरुरातो ज नथी. सूक्ष्म जीवनुं ए ज्ञान छे ॥ ३ ॥ शुश्रूषा,[१] (सांभळवानी इच्छा,) श्रवण[२] करवुं, फरी[३] पुछवुं, मनमां अवधारण[४] करवुं, ग्रहण[५] करवुं, विचारवुं,[६] निश्चय[७] करवो, धारण करी[८] राखवुं बुद्धिना ए आठ गुण गणाय छे. ॥ ४ ॥[२] चोवीश तीर्थंकरोना १२६२०० सर्व सभामां वादिओ छे (आ वादीओने कोइ पण वादमां जीती शके नहि) ए प्रवचननो अपार महिमा छे. ॥५॥

---

१ काल १ विनय २ बहुमान ३ उपधान ४ अनिन्हव ५ व्यंजन ६ अर्थ ७ तदुभय ८

२ ऋषभना १२७५०, अजितना १२४००, संभवना १२०००, अभिनन्दन ११०००, सुमति १०४५०, पद्मप्रभु ९६००, सुपार्श्व

जे प्राणीओ आगमने भणे छे, भणावे छे, लखे छे, लखावे छे, ते प्राणीओना विजय लक्ष्मी रूप गुणना मन्दिर समान जन्मना ब खाण करीए ॥ ६ ॥

॥ श्रुतज्ञाननी स्तुतिनो अर्थ ॥

सूर्यसमान जिनेश्वर परमात्मा त्रिगडा उपर बेशी अमृतसमान वाणी बोले छे. अनेकान्त मत एज प्रमाण छे. आत्मानो अनुभव करवानुं स्थानक[१] चार अनुयोगरूपी गुणोनी खाण परमात्मा अ रिहन्त प्रभुनुं शासन श्रेष्ठ वहाणसमान छे सर्व पदार्थो विवरीवरे जणावे छे बत्रीश दोष[२] वर्जित परमात्मानी देशना योजन प्रमाण

८४००, चन्द्रप्रभ ७६००, सुविधि० ६०००, शीतल ५८००, श्रे यांस० ५०००, वासुपूज्य ४२००, विमल ३६००, अनन्त० ३२०० धर्म २८००, शान्ति २४००, कुन्थु २०००, अर १६००, मल्लि १४००, मुनिसुव्रत १२००, नमि १०००, नेमि ८००, पार्श्व ६०० वर्धमान ४००, सर्व सख्या १२६२०० वादी मुनि होय ॥

१ चरणकरणानुयोग १ द्रव्यानुयोग २ धर्मकथानुयोग ३ गणितानुयोग ४

२ प्रकृतिथी आ सर्व ससार छे अथवा आत्मा नथी विगेरे 'अलीक' १, वेदमां कथित हिंसा धर्मने माटे थाय विगेरेनी माफक 'उपघातजनक' २, डित्थादिनी माफक निरर्थक ३, पूर्वापर

भूमिर्मा फेलावो पामे छे केवलज्ञानी प्रभुए जे कथन कर्युं ते श्रुतज्ञान, एम विजयलक्ष्मी सूरि बहु मान पूर्वक कहे छे हे सुजनो ! ते श्रुतज्ञानने तमे धारण करजो ॥ १ ॥

संबंध विनानु ते 'अपार्थक' ४, छलवाक्य विगेरे 'छल' ५, द्रोहस्वभाव होय ते द्रुहिल' ६, सारविनानु ते 'निःसार' ७, अक्षरादि करीने अधिक ते 'अधिक' ८, न्यून होय ते 'ऊन' ९, फरी फरी बोलवुं ते 'पुनरुक्त' १०, पूर्वापरविरुद्ध ते 'व्याहत' ११, युक्तिरहित ते 'अयुक्त' १२, क्रमरहित ते 'क्रम भिन्न' १३, वचन फेरफार ते 'वचन भिन्न' १४, विभक्ति फेरफार ते 'विभक्ति विभिन्न' १५, लिङ्ग फेरफार ते 'लिङ्गभिन्न' १६, सिद्धान्तमा नही कहेलु ते 'अनभिहित' १७, छंदोभंग ते 'अपद' १८, वस्तुना स्वभावथी विपरीत बोलवु ते 'स्वभावहीन' १९, प्रस्तुत वात छोडी अप्रस्तुत वातने चलावी पछी प्रस्तुत कहेवी ते 'व्यवहित' २०, काल फेरफार ते 'कालदोष' २१, वाक्य पूर्तिविना वचमांथी पद तोडी नांखवु ते 'यतिदोष' २२, अलङ्कार विशेष शून्य ते ' छविदोष ' २३, स्वसिद्धान्त विरुद्ध ते 'समयविरुद्ध' २४, हेतुशून्य ते 'वचन मात्र' २५, तात्पर्यथी अनिष्ट प्राप्ति थाय ते 'अर्थापत्तिदोष' २६, समास फेरफार ते 'असमासदोष' २७, हीनाधिक उपमा करवी ते 'उपमादोष' २८, एक देशने सपूर्ण कहेवु ते 'स्वरूपात्रयवदोष' २९, उद्देश्य पदोनी एकवाक्यता न थाय ते 'अनिर्देशदोष' ३०, वस्तुपर्यायवाचि पदनी अर्थान्तर कल्पना त 'पदार्थदोष' ३१, विपरीतसन्धि ते 'सन्धिदोष' ३२, आ प्रमाणेना ३२ दोष रहित परमात्मानी देशना होय छे. ॥

॥ श्री श्रुतज्ञानना दुहाना अर्थ. ॥

श्री श्रुतज्ञानने सर्वदा वन्दना करो के जेना चौद अथवा वीश भेदो छे. ते बन्नेमांथी हु चौद भेदोनु वर्णन करु छु. जे सर्व श्रुतना स्वामी ते श्रुतकेवलि कहेवाय छे ॥१॥ अकारना अढार[1] भेदो छे तेम प्रमाणे सर्व अक्षरोना भेदो जाणवा. लब्धि,[2] संज्ञा[3] अने व्यञ्जन[4] एम त्रण प्रकारना अक्षरोने अक्षरश्रुत जाणवु ॥२॥(पहेलो भेद)॥ प्रवचन १ श्रुत २ सिद्धान्त ३ आगम ४ समय ५ ए सर्व जेना पर्यायी नाम छे एवा श्रुतज्ञाननु व्याख्यान करीने तेमज तेना व्याख्यान करनारा श्रुतज्ञानीना चरणकमलोने चित्तमां लावीने घणा प्रकारना स्नेहथी तेनी पूजा करो ॥३॥ हस्तरूपी[5] लतानी चेष्टा (खोंखारो उधरस उच्छ्वासादि) विगेरेए करी अन्तर्गत भाषा जणावे ए

१ अकारना ह्रस्व दीर्घ अने प्लुत एम त्रण भेदो छे, वली ते दरेकना उदात्त अनुदात्त अने स्वरित एम त्रण त्रण भेदो छे, एटले नव, ते नवने सानुनासिक निरनुनासिक एम बे भेदे गुणतां अढार भेदो जाणवा

२ पुस्तकमां लखेला अक्षरो वाचवाथी तथा मोढेथी बोलाता अक्षरो सांभळवाथी थतु ज्ञान.

३ पूर्वे वर्णवेली अढार प्रकारनी लिपीरूपी अक्षरो.

४ वचन योगे करी मोढेथी बोलाता अक्षरो.

५ आ कर्मग्रंथ टीकानो मत छे, विशेषावश्यकादिकमां चेष्टामां श्रुतनु लक्षण नहि होवाथी चेष्टाने श्रुतपणु कहेता नथी

अनक्षर श्रुतने प्रकाश करनारो सत्य अर्थ जाणवो. ए बीजु अनक्षर श्रुत ॥४॥ (बीजो भेद)॥ जे दीर्घकालिकी नामनी संज्ञा छे तेणे करीने (सहित) संज्ञि जीवो जाणवा ते संज्ञि जीवो मन इन्द्रियथी उत्पन्न थयेला संज्ञिश्रुतना स्थानक जाणवा ॥ ५ ॥ (त्रीजो भेद) ॥ जे जीवोने मनोरहित इन्द्रियो मात्रथी तेने आवरण करनारा कर्मना क्षयोपशमवडे जे ज्ञान थाय ते असंज्ञिश्रुत जाणवु ॥ ६ ॥ (चोथो भेद) ॥ जे सिद्धान्त सम्यक्त्व विनानो होय ते विपरीत सिद्धान्त जाणवो ने जे सिद्धान्तमा सम्यक्त्व होय ते प्रत्यक्ष (सत्य) सिद्धान्त जाणवो. ॥७॥ सुंदर त्रिभंगीथी[१] भरपूर घणा नैगमादि नयो जेमा छे अने जे वचनथी शुद्ध शुद्धतर अतिशय तेजवालु छे ते समकितश्रुत जाणवु ॥ ८ ॥ (पांचमो भेद)॥ बालबुद्धि मनुष्यो अनेक प्रयत्नथी भगवालो रचे तेमां सम्यग्दर्शनना दृष्टान्तनो (देखावनो) भास पण नथी. ॥ ९ ॥ सद्‌असद्‌ना विवेचन विना एकान्त पक्ष अंगीकार करे अने जे (ज्ञानवालाओ) ज्ञानतुं फल पामे नहि ते मिथ्याश्रुततुं स्वरूप जाणवु ॥१०॥ (छट्ठो भेद) ॥ [२]पांच भरत तथा पांच ऐरवत ए दश क्षेत्रोमां आदिसहित (सादि) श्रुत जाणवु. (जे जे तीर्थंकरनु तीर्थ प्रवर्त्ततु होय) ते ते प्रभुनो आधार (त्रिपदी) पामीने तेमना गणधरोए रचेलु ते श्रुत जाणवु ॥ ११ ॥(सातमो भेद)॥

---

१ त्रिभंगीनु स्वरूप गीतार्थ गुरु महाराज पासेथी जाणवु.

२ एक जंबुद्वीपनो, बे धातकी खंडना, अने बे पुष्करार्धना,

दुप्पसह सूरीश्वर सुधी वर्त्तमान श्रुतज्ञाननो आचार प्रवर्त्तशे तेथी सान्त श्रुत जाणवु अथवा एक जीवन उद्देशीने पण श्रुतनुं सादि सान्तपणु होय छे तेथी सान्त जाणवु. ॥ १२ ॥ (आठमो भेद)॥ द्रव्यनयथी शाश्वत भावे वर्त्तनारु श्रुत अनादि जाणवु तेवु (शाश्वत भावे वर्त्तनारु) उत्तम आगमरूप रत्न महाविदेह क्षेत्रमा सदा काल वर्त्ते छे ॥ १३ ॥ (नवमो भेद) ॥ अनेक जीवने अपेक्षी श्रुत अनादि अनन्त छे ते अनादि अनंत श्रुत जाणवु द्रव्यादि[१] चार प्रकारे सादि सान्त अनादि अनन्त सरखी दृष्टान्त समजवो ॥१४॥(दशमो भेद)॥ जे सूत्रमां सरखा पाठ (आलावा) छे ते सिद्धान्त गमिक श्रुत जाणवु अनेकान्त गुणे शोभित एवा पाठो घणु करीने दृष्टिवाद नामना बारमा अंगमा होय छे ॥१५॥ (अगी यारमो भेद)॥ सरखा पाठ (आलावा) जेमां न होय ते अगमिक श्रुत जाणवु तेवा कालिक श्रुतने त महात्माओनी हे सज्जन पुरुषो!

१ द्रव्यथी एक जीवनी अपेक्षाए सम्यक्त्वनी प्राप्ति थवाथी सादिश्रुत जाणवु, अने मिथ्यात्व, भवान्तर, केवलज्ञान, ग्लानि, प्रमाद विगेर कारणोथी ज्यारे ते नाश पामे त्यारे सान्तश्रुत जाणवु. तथा अनेक जीवनी अपेक्षाए अनादि अनन्त जाणवुं १. क्षेत्रथी भरत ऐरवतनी अपेक्षाए सादिसान्त, अने विदेहनी अपेक्षाए अनादि अनन्त जाणवु २ कालथी उत्सर्पिणी अवसर्पिणी कालनी अपेक्षाए सादिसान्त अने नो उत्सर्पिणी नोअवसर्पिणी कालनी अपेक्षाए अनादि अनन्त जाणवु ३ भावथी भवसिद्धिकपणानी अपेक्षाए सादिसान्त अने अभव्यपणाने आश्री अनादि अनन्त जाणवु ४.

त्रिकरण योगथी अथवा त्रिकरण योगना हर्षोल्लासथी पूजा करीए ॥१६॥(बारमो भेद)॥ अढार हजार पदे करीने युक्त आचाराङ्ग सूत्र वखाणीए. तेथी आगळना अगीयार अंगो बमणा बमणा पदोवाळा जाणवा. ते सर्व अंगप्रविष्ट श्रुतज्ञान छे. ॥ १७ ॥ (तेरमो भेद)॥ जे बार उपाङ्गो छे ते अङ्गबाहिर श्रुत कहीए. तेना अनङ्गप्रविष्ट श्रुत रूपे वखाण करीए (चौदमो भेद)॥ आ सव भेदो श्रुतरूपी लक्ष्मी देवीना मन्दिरतुल्य छे. ॥ १८ ॥

॥ श्री अवधिज्ञानना चैत्यवन्दननो अर्थ ॥

अवधिज्ञान प्रभुए कहेलु छे के जे अवधिज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम थवाथी इन्द्रियोनी अपेक्षा विना आत्मप्रत्यक्षरूपे प्रकट थाय छ ॥ १ ॥ जे जीवो देव तथा नरकभवने प्राप्त करे छे तेओने तो अवधिज्ञान अवश्य थाय छे, तेमा श्रद्धावत समकिती जीव अवधि ज्ञान पामेछे अने मिथ्यात्वथी तो विभंगज्ञ थाय छे. एटले मिथ्यात्वी विभग ज्ञान पामे छे.॥२॥मनुष्य अने तिर्यचना भवमा गुण (अध्यवसायनी निर्मलतारूप) थी उत्तम परिणामना सयोगे जीव अवधिज्ञान पामे छे (गुणथी प्राप्त थयेल्ग) अवधिज्ञाननो उपयोग [१]एक मुनिने

[१] एक मुनिने कायोत्सर्ग ध्यानमा अध्यवसायनी विशुद्धिथी तदावरणीय कर्मनो क्षयोपशम थवाने लीधे अवधिज्ञान उत्पन्न थयु, तेना प्रभावथी तेणे सौधर्मेन्द्रनी सभाने साक्षात् जोइ. त्या रीसायेली इन्द्राणीने मनावता इन्द्रने जोइने तेमने हासी आववाथी तदावरणीय कर्मनो उदय थतां अवधिज्ञान जतु रह्यु.

काउसग्गमां हास्य आववाथी नाश पाम्शे इतो. ॥ ३ ॥ अवधिज्ञानी जघन्यथी अनन्ता रूपी द्रव्यने सामान्य विशेषोपयोगे जाणे देखे छे उत्कृष्टथी सर्व मूर्त्तिवन्त पुद्गळ वस्तुने जाणे छे ॥४॥ (द्रव्यथी १)॥ क्षेत्रथी जघन्यमां जघन्य अंगुलना असंख्यातमा भागने देखे (एटले के) तेटला क्षेत्रमा जे पुद्गल स्कन्धो छे तेने जाणे अने देखे ॥ ५ ॥ उत्कृष्टथी (चौदराज) लोकना प्रमाण जेवडा अलोकमा असख्याता खाडवा(भागो)देखे,(२)॥ काळथी जघन्यपणे आवलिकानो असख्यातमो भाग देखे, ॥ ६ ॥ उत्कृष्टथी असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी भूत भविष्यत् काळने जाणे देखे,(३)॥ हवे भावना विचार सामळो ॥७॥ जघन्यथी एकेका द्रव्यमां चार (रूप, रस, गन्ध, स्पर्श) भावो (पर्यायो) देखे, उत्कृष्टथी प्रत्येक द्रव्यमां असख्याता पर्यायो जाणे(४) ॥ ८ ॥ आ (द्रव्यथी, क्षेत्रथी, काळथी, भावथी) चार भेदो सक्षेपथी नन्दीसूत्र बतावे छे जेओ ज्ञाननी भक्तिमां रमणता करे छे तेओ विजय लक्ष्मीरूप देवीने प्राप्त करे छे. ॥ ९ ॥

-॥ श्री-अवधिज्ञानना स्तवननो-अर्थ -॥

हे प्राणिओ ! तमे अवधिज्ञाननी पूजा करो, सम्यग्दृष्टि जीवोने आ गुण (अवधि) थाय छे, सर्व तीर्थंकरो आ (अवधि) ज्ञान स हित जन्म लइने मनुष्य भवसबन्धी मोटा उदयने देखे छे (पामे छे)॥ १ ॥ (असख्याता द्वीप-समुद्र छता) सातज द्वीप अने सातज

समुद्र छे, आ प्रमाणे अगलु देखनारा शिवराजर्षिनो विभंगदोष वीर प्रभुनी प्रसन्नताथी नाश पाम्यो अने प्रसिद्ध अवधिगुण प्रगट थयो ॥ २ ॥ अवधिज्ञाननी उत्कृष्टी स्थिति काइक अधिक छासठ सागरोपमनी जाणवी अने जघन्यथी कोइक जीवने आश्रीने एक समयनी जाणवी. (अवधिज्ञानना क्षयोपशमनी तरतमताथी अथवा द्रव्यादिकनी) विचित्रताना सम्बन्धथी तेना असंख्याता भेदो छे, ए संबन्धी विशेषावश्यकमां विशेष व्याख्यान करेलु छे. ॥ ३ ॥ ऋषभदेव भगवान् विगेरे चोवीश तीर्थंकरोना चरणकमलने जेओ नमस्कार करे छे तेवा अवधिज्ञानी [1]मुनिवरोनी संख्या एकलाख तेत्रीशहजारने चारसेंनी छे. ॥ ४ ॥ अवधिज्ञानी आनन्द श्रावक (वीरप्रभुना १० श्रमणोपासकोमा पहेला)ने गौतमस्वामीजीए मिच्छामि दुक्कड आप्यो हतो, (ते माटे) विजयलक्ष्मीरूप सुखना मन्दिर तुल्य ज्ञान अने ज्ञानवन्त प्राणीओनी आशातनानो त्याग करो ॥ ५ ॥

---

१ ऋषभ–९०००, अजित–९४००, संभव–९६००, अभिनन्दन–९८००, सुमति–११०००, पद्मप्रभ–१००००, सुपार्श्व–९०००, चन्द्रप्रभ–८०००, सुविधि–८४००, शीतल–७२००, श्रेयांस–६०००, वासुपूज्य–५४००, विमल ४८००, अनन्त–४३००, धर्म–३६००, शान्ति–३०००, कुंथु–२५००, अर–२६००, मल्लि–२२००, मुनिसुव्रत–१८००, नमि–१६००, नेमि–१५००, पार्श्व–१४००, वर्धमान १३००, कुल–१३३४०० अवधिज्ञानीनी संख्या छे,

॥ श्री अवधिज्ञाननी स्तुतिनो अर्थ ॥

सर्वे तीर्थंकरो अवधिज्ञान सहित (देवादि भवमांथी) च्यवीने माताना कुक्षीमां अवतार लेछे जे प्रभुना नामे करी सुख दुःखने प्राप्त करीए, अने जे प्रभु सर्वे ईति (अतिवृष्टि अनावृष्टयादि) उपद्रवोने टाळनारा छे तेमज इन्द्र तथा अध्यापकना संशयने दूर करनारा थी वीरप्रभु महिमा तथा ज्ञानना आकर छे. तेज माटे ते वीरप्रभु विश्वना पालक तथा विजय सहित लक्ष्मी सुखने प्राप्त करावनारा छे. ॥ १॥

॥ श्री अवधिज्ञानना दुहाना अर्थ ॥

अवधिज्ञानना असंख्य[1] भेदो छे तेमा सामान्ये करी छ भेदो छे, जघन्यथी अवधिज्ञाननु क्षेत्र सूक्ष्म पनकनी अवगाहना (शरीर प्रमाण जेटलु छे अने उत्कृष्टथी असंख्य लोक प्रमाण छे. ॥ १ ॥ लोचननी माफक साथे रहेतु ते ' अनुगामिक ' नामना अवधिज्ञानतु नेत्र छे. एक जीवने अपेक्षी उत्कृष्ट अवधिज्ञाननी स्थिति छासठ सागरोपमथी वधारे छे ॥ २ ॥ (पहेलो भेद)॥ नहीं विकार पामेलो (मिथ्यात्वकृत मालिन्य रहित) एवो अवधिज्ञाननो गुण जे जीवोने उत्पन्न थयो छे ते जीवोने एक श्वासमां सो वखत[2] मारी वन्दना

---

१ कालनी अपेक्षाए अथवा क्षेत्रनी अपेक्षाए, द्रव्य अथवा पर्यायनी अपेक्षाए अनन्ता भेदो पण छे

२ उपलक्षण सो पद छे तेथी हजार लक्ष कोटी असंख्य अने अनंतीवार वन्दना थाओ.

यामो. ॥ ३ ॥ जे क्षेत्रमां अवधिज्ञान उत्पन्न थयु होय तेटलाज क्षेत्रमां रह्यो थको पदार्थो देखे ते अननुगामि अवधिवालो जाणवो, ते 'अननुगामी' ज्ञान स्थिरदिवानी उपमाने पामे छे ॥ ४ ॥ (बीजो भेद)॥ अंगुलना असंख्यातमा भागथी अनुक्रमे वधतु वधतु असख्य लोक प्रमाण वृद्धि पामे छे ते तथा लोकावधि परमावधि विगेरे 'वर्धमान' अवधिज्ञान कहेवाय छे. ते गुण चाछा उत्कट थवाथी थाय छे ॥ ५ ॥ (त्रीजो भेद)॥ योग्य सामग्री न होवाने लीधे घटना परिणाम थवाथी पूर्वप्राप्ति करता नीचे नीचे घटतु जाय ते 'हीयमान' अवधिज्ञान कहेवाय छे. ए मननु कार्य छे. ॥ ६ ॥ (चोथो भेद)॥ सख्याता असख्याता योजन सुधी यावत् उत्कृष्ट लोकान्त सुधीना एकला पुद्गल द्रव्यो देखी (तेटलु ज्ञान थइने पाछु) पडिवाइ थाय ते 'प्रतिपाति' ज्ञान कहेवाय छे ॥ ७ ॥ (पांचमो भेद)॥ जे अवधिज्ञान अलोकनो एक प्रदेश देखे ते 'अप्रतिपाति' कहेवाय छे. ते अवधिज्ञान अनुक्रमे केवल ज्ञान (अवश्य) आपे छे. ॥ ८ ॥ (छट्ठो भेद)॥

॥ श्री मनःपर्यवज्ञानना चैत्यवन्दननो अर्थ ॥

चतुर्थ श्रीमन.पर्यवज्ञान छे, गुणनिमित्ते थनारु ते ज्ञान अप्रमत्त ऋद्धिना निधान चारित्रधारी कोइक मुनिने शुभपरिणामनी

॥ श्री अवधिज्ञाननी स्तुतिनो अर्थ ॥

सर्व तीर्थकरो अवधिज्ञान सहित (देवादि भवमांथी) च्यवीने मातानी कुक्षीमां अवतार लेछे जे प्रभुना नामे करी सुख दृक्षने प्राप्त करीए, अने जे प्रभु सर्व ईति (अतिवृष्टि अनावृष्टयादि) उपद्रवोने टालनारा छे तेमज इन्द्र तथा अध्यापकना संशयने दूर करनारा श्री वीरप्रभु महिमा तथा ज्ञानना आकर छे. तेज माटे ते वीरप्रभु विश्वनः पालक तथा विजय सहित लक्ष्मी सुखने प्राप्त करावनारा छे. ॥ १॥

॥ श्री अवधिज्ञानना दुहाना अर्थ ॥

अवधिज्ञानना असख्य[1] भेदो छे तेमा सामान्ये करी छ भेदो छे, जघन्यथी अवधिज्ञाननु क्षेत्र सूक्ष्म पनकनी अवगाहना (शरीर प्रमाण जेटलु छे अने उत्कृष्टथी असख्य लोक प्रमाण छे ॥ १ ॥ लोचननी माफक साथे रहेतु ते ' अनुगामिक ' नामना अवधिज्ञानतु तेम छे एक जीवने अपेक्षी उत्कृष्ट अवधिज्ञाननी स्थिति छासठ सा गरोपमथी वधारे छे. ॥ २ ॥ (पहेलो भेद)॥ नहीं विकार पामेलो (मिथ्यात्वकृत मालिन्य रहित) एवो अवधिज्ञाननो गुण जे जीवोने उपन थयो छे ते जीवोने एक श्वासमां सो वखत[2] मारी वन्दना

१ कालनी अपेक्षाए अथवा क्षेत्रनी अपेक्षाए, द्रव्य अथवा पर्यायनी अपेक्षाए अनन्ता भेदो पण छे

२ उपलक्षण सो पद छे तेथी हजार लक्ष कोटी अथवा अनतीवार वन्दना थाओ.

यामो. ॥ ३ ॥ जे क्षेत्रमां अवधिज्ञान उत्पन्न थयु होय तेटलाज क्षेत्रमां रह्यो थको पदार्थो देखे ते अननुगामि अवधिवालो जाणवो, ते 'अननुगामी' ज्ञान स्थिरदिवानी उपमाने पामे छे ॥ ४ ॥ (बीजो भेद)॥ अंगुलना असंख्यातमा भागथी अनुक्रमे वधतुं वधतुं असंख्य लोकप्रमाण वृद्धि पामे छे ते तथा लोकावधि परमावधि विगेरे 'वर्धमान' अवधिज्ञान कहेवाय छे. ते गुण वाळा उत्कट थवाथी थाय छे ॥ ५ ॥ (त्रीजो भेद)॥ योग्य सामग्री न होवाने लीधे घटता परिणाम थवाथी पूर्वप्राप्ति करता नीचे नीचे घटतु जाय ते 'हीयमान' अवधिज्ञान कहेवाय छे. ए मनन्नु कार्य छे. ॥ ६ ॥ (चोथो भेद)॥ संख्याता असंख्याता योजन सुधी यावत् उत्कृष्ट लोकान्त सुधीना एकला पुद्गल द्रव्यो देखी (तेटलु ज्ञान थइने पाछु) पडिवाइ थाय ते 'प्रतिपाति' ज्ञान कहेवाय छे ॥ ७ ॥ (पांचमो भेद)॥ जे अवधिज्ञान अलोकनो एक प्रदेश देखे ते 'अप्रतिपाति' कहेवाय छे. ते अवधिज्ञान अनुक्रमे केवल ज्ञान (अवश्य) आपे छे. ॥ ८ ॥ (छट्ठो भेद)॥

॥ श्री मनःपर्यवज्ञानना चैत्यवन्दननो अर्थ ॥

चतुर्थ श्रीमनःपर्यवज्ञान छे, गुणनिमित्ते थनारु ते ज्ञान अप्रमत्त ऋद्धिना निधान चारित्रधारी कोइक मुनिने शुभपरिणामनी

(आपे छे ते दान) कइने देवो तथा मनुष्यो हर्ष पामे छे. ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ आ विधिए करी सर्व अरिहंत भगवंतो ज्यारे सर्वविरति (चारित्र) उच्चार करे छे ते वखते निर्मळ मनःपर्यवज्ञान तेमना आत्माने अनुसरे छे (पामे छे) ॥ ३ ॥ जे मुनिओने विपुलमतिमन पर्यव ज्ञान उत्पन्न थाय छे ते अप्रतिपाती होय छे. आ चोथु ज्ञान अप्रमत्त ऋद्धिवन्त गुणस्थानके जाणवु ॥ ४ ॥ चोवीश जिनेश्वर भगवन्तना [1]एकलाख पीसतालीस हजार पांचसे ने एकाणु मनःपर्यवज्ञानी मुनिराजोने जाणी तेमने वखाणीए ॥ ५ ॥ जे ज्ञान मनना सर्व संशयोनो नाश करे छे ते ज्ञानने हु स्नेह धारण करीने वंदन करुं विजयलक्ष्मी, कल्याणकारी भाव विगेरे अनुभव ज्ञानना अनेक गुणो छे. ॥ ६ ॥



---

[1] ऋषभ–१२७५०, अजित–१२५००, संभव–१२१५०, अभिनंदन–११६५०, सुमति–१०४५०, पद्मप्रभ–१०३००, सुपार्श्व–९१५०, चन्द्रप्रभ–८०००, सुविधि–७५००, शीतल–७५००, श्रेयांस–६०००, वासुपूज्य–६०००, विमल–५५००, अनन्त–५०००, धर्म–४५००, शान्ति–४०००, कुन्थु–३३४०, अर–२५५१, मल्लि–१७५०, मुनिसुव्रत–१५००, नमि–१२५०, नेमि–१०००, पार्श्व–७५०, वर्धमान–५००, कुल–१४५५९१ मनःपर्यवज्ञानीओनी संख्या छे.

॥ श्री मनःपर्यवज्ञाननी स्तुतिनो अर्थ ॥

तीर्थंकर प्रभु अभिमानने निवारण करी सिद्ध भगवन्तोने नमस्कार करी सर्वविरति सामायिकनो उच्चार करे छे, अने ज्यां सुधी छद्मस्थ अवस्था रहे छे त्यां सुधी योगासन अने तप धारण करे छे. ते वखते मनुष्यक्षेत्रमां विस्तार पामनारु चोथु मनःपर्यव ज्ञान तेओ प्राप्त करे छे. विजयलक्ष्मी अने सुखने करनारा ते प्रभुने हे भव्यप्राणि ! तमे नमस्कार करो. ॥ १ ॥

॥ श्री मनःपर्यवज्ञानना दुहानो अर्थ ॥

संयम गुणनी शुद्धता पामवाथी थनारु संज्ञि जीवना मनोगत पदार्थोने जे प्रकट रीते विशुद्धपणे जाणे छे ते मनःपर्यव ज्ञान कहेवाय. ते ज्ञान बे भेदे छे ॥ १ ॥ आ पुरुषे घडो चिन्तव्यो छे एम सामान्य धर्मे जाणे–पण्ु करीने विशेष धर्मथी शून्य जाणे ते ऋजुमति मन पर्यव जाणवु ॥ २ ॥ (पहेलो भेद) ॥ सर्वविरति गुणस्थानकने विषे आ (मनःपर्यव ज्ञानरूप) गुण जे मुनिओने उत्पन्न थयो छे ते मुनिओना चरणकमलने प्रेमथी मनमा धारण करीने हु नमस्कार करु ॥३॥ अमुक नगरनो, अमुक जातिनो, सुवर्णनो, आवा स्वरूपवालो घट चिन्तव्यो छे, एम विशेष धर्मवाला मनने जाणे ते विपुलमतिनु स्वरूप जाणवु ॥ ४ ॥ (बीजो भेद) ॥

॥ श्री केवलज्ञान संबधी चैत्यवन्दननो अर्थ ॥

श्री जिनेश्वर प्रभु चार ज्ञानी थइ शुक्ल ध्यानना अभ्यासे करी अधिक अधिक आत्मस्वरूपने क्षणे क्षणे प्रकाशे छे. ॥ १ ॥ [१] सुषुप्ति (निद्रा), स्वप्न, अने जागृत ए त्रण दशा दूर थाय छे अने चोथी जे उज्जागर दशा तेहना अनुभवने जुए छे ॥ २ ॥ अपूर्व शक्तिना सत्त्वथी क्षपक श्रेणिए चढी, चोथा (सञ्ज्वलन) कषायना वियोगे करी बारमु (क्षीणमोह गुणठाणु पामी, ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय ने अंतराय ए चार दुष्ट निबिड घातिकर्मनो क्षय करी, परमात्मज्योति थया छे ॥ ३ ॥ ४ ॥ सर्ववस्तुमां बे धर्म

---

१ मिथ्यादृष्टि जीवोने अतिशय शयन करवारूप सुषुप्ति नामनी प्रथम अवस्था होय छे ॥१॥ शयनरूप बीजी स्वप्न अवस्था सम्यग्दृष्टि जीवोने होय छे ॥२॥ अप्रमत्त मुनिने त्रीजी जागृत अवस्था होयछे॥३॥ अने चोथी उज्जागर दशा अनुभवनी वृद्धिथी आगल आगल चढतां यावत् सयोगि केवलि गुणठाणा सुधी होय छे ॥४॥ प्रथमनी सुषुप्ति अवस्था मोह मूढ आत्माने थती होवाथी अनुभववन्त महात्माओने ते नथी होती, तेमज बीजी स्वप्न अने त्रीजी जागर दशाओ पण कल्प नामां गुथायेला जीवोने उत्पन्न थती होवाथी कल्पना वर्जित अनुभवि महात्माओने होती नथी मात्र अनुभव ज्ञानमा तो चोथी उज्जागर दशाज होय छे कह्यु छे के

न सुषुप्तिरमोहत्वान्नापि च स्वापजागरौ ॥
कल्पनाशिल्पविश्रान्तेस्तुर्यैवानुभवे दशा ॥१॥

छे. तेनो प्रभुने समयान्तर उपयोग छे, (तेथी) पहेला समये विशेषपणे जाणे छे अने बीजे समये सामान्य धर्मनो सम्बन्ध होय छे ॥ ५ ॥ सादि अनन्त भागाए करी अनन्त दर्शन, ज्ञान अने तेरमु गुणगणु पामीने भावजिनेन्द्र जयवता वर्ते छे ॥ ६ ॥ (ते वखते) कर्मनी मूळ (आठ) प्रकृतिमानी एक (वेदनीय) प्रकृतिनो बन्ध थाय छे अने सत्ता तथा उदयमा चार (वेदनीय, नाम, गोत्र ने आयु)प्रकृति होय छे.उत्तर प्रकृति, (१२०)मांथी एक (शाता)नो बन्ध होय छ,उदयमा (१२२ मांथी) बेंताळीश प्रकृति रहे छे, ॥७॥ सत्ता (१४८ माथी) पचाशी प्रकृतिनी छे. (ते वखते) कर्म बाळेली दोरडीना छार जेवा होय छे. जे प्रभुना मन वचन कायाना योगो अचल तथा विकार रहित छे, तेओ सयोगि केवलिनी दशाने प्राप्त करी ते दशामां विचरे छे केवलज्ञानना अक्षय विजय ल,मीरूप गुणो कहेवाय छे. (अथवा विजयलक्ष्मी सूरि-अक्षय केवल ज्ञानना गुणो कहे छे.) ॥ ८ ॥ ९ ॥

॥ श्री केवलज्ञानना स्तवननो अर्थ ॥

श्री जिनेश्वर भगवतने क्षायिकभावे प्रगट थयेलु ज्ञान तथा [1]अढार दोषनो नाश थवाथी उत्पन्न थया जे गुणो ते प्रमाण छे

---

१ हास्य, रति, अरति, भीति, जुगुप्सा, शोक, काम, मिथ्यात्व, अज्ञान, निद्रा, अविरति,- दानान्तराय, लाभान्तराय, वीर्यान्तराय, भोगान्तराय, उपभोगान्तराय, राग, द्वेष, ए १८. अथवा अज्ञान,क्रोध, मद, मान, लोभ, माया, रति, अरति, निद्रा, शोक, अलीक, चौर्य, मत्सर, भय, प्राणिवध, प्रेम क्रीडाप्रसग, हास्य, ए १८ दोष जाणवा

(यथार्थ छे) हे भव्यजीवो ! तमे केवलज्ञानने वन्दना करो पचमीनो दिवस गुणनी खाण छे ॥ १ ॥ अनामी प्रभुना नाम संबधी शो विशेष कहेवाय ? परतु ते (विशेष) [1]मध्यमा तथा वैखरी (भापाना भेदो) वडे वचनना उल्लेखमां स्थापन करी शकाय ॥ २ ॥ हे प्रभु ! आप ध्यान अवसरे लक्ष्यमां न आवी शको तेवा अगोचर स्वरूप धाओछो, तोपण मुनिना राजा (योगि महात्माओ) परा तथा पश्यन्ती (भापाना भेदो) पामीने तेनो काइक निश्चय करे छे ॥ ३ ॥ ज्ञाननी विद्यमान जे सत्पर्यायो ते तो पलटाती नथी, परन्तु ज्ञेय (विपय) नी जुदी जुदी नव पुराणादि सर्व वर्त्तनाओ एक समयमा जणाय छे ॥ ४ ॥ बीजा (मत्यादि चार) ज्ञाननी सर्व प्रभानो आ ज्ञानमा समावेश थइ जाय छे केमके सूर्यना तेजथकी नक्षत्रादि ज्योतिष्चक्रनो समूह काइ अधिक नथी ॥ ५ ॥ ज्ञानना अनन्ता गुण

---

१ आ चार भापानु स्वरूप जुदा जुदा रूपे आ नीचे लखेल श्लोकोथी अन्य ग्रन्थोमा प्रतिपादन कर्यु छे

वैखरी शक्तिनिष्पत्तिर्मध्यमा श्रुतिगोचरा ॥
द्योतितार्था तु पश्यन्ती सूक्ष्मा वागनपायिनी ॥ १ ॥
मूलाधारात् प्रथममुदितो यस्तु तारः पराख्य. ।
पश्चात्पश्यन्त्यथ हृदयगो बुद्धियुङ्मध्यमाख्य ॥
वक्त्रे वैखर्यथ रुरुदिषोरस्य जन्तो· सुषुम्णा ।
बद्धस्तस्माद्भवति पवनप्रेरितो वर्णसङ्घ ॥ २ ॥

जे जाणे छे तेज धन्य पुरुष, ज्ञान अने महान् उदयना मन्दिर समान विजयलक्ष्मी देवीने प्राप्त करे छे ॥ ६ ॥

॥ श्री केवलज्ञाननी स्तुतिनो अर्थ ॥

त्रण छत्र, चामर, सुखकर्ता अशोकवृक्ष, देव वानि, दुदुंभि (देव वाजिंत्र), तेजेकरी झलहलतु भामंडल, देवकृतपुष्पनी वृष्टि अने सिंहासन (ए आठ प्रधान प्रातिहार्यो) जिनेश्वर प्रभुना छे. तेज प्रभुना उदार केवलज्ञानने विजयलक्ष्मीसूरि वन्दना करे छे. ॥ १ ॥

॥श्री केवळ ज्ञानसंबंधी दुहानो अर्थ ॥

बहिरात्मपणानो त्याग करवाथी अन्तरात्म स्वरूपने अनुभवी,जे परमात्मा थाय छे तेमना ज्ञान स्वरूपनो एकज भेद छे. ॥ १ ॥ पुरुषोमां उत्तम परमेश्वर स्वस्वभावनी रमणतानु सुख भोगववारूप परमानन्द उपयोगे करी सर्व पदार्थोने विशेष धर्मे करी तथा सामान्य धर्मे करी जाणे छे. ॥ २ ॥ प्रतिपादन कर्यु छे भव्य तथा अभव्य पण जेमणे एवा त्रिकाल स्वरूपने जाणनारा जिनेश्वर परमात्मा गुणपर्यायोना अनतपणावाला सर्व द्रव्योने जाणे छे ॥ ३ ॥ असख्य प्रदेशी आत्माना एक प्रदेशमां पण, अनन्ता अलोकाकाशने उपाडीने लोकाकाशमा स्थापन करवाने समर्थ थवाय तेवुं अनन्तु- प्रशस्त वीर्य रहेलु छे. ॥ ४ ॥ कल्याणरूप विजयलक्ष्मीने प्राप्त करवा माटे ज्ञान पचमीने दिवसे केवलदर्शन तथा केवलज्ञानना चिदानद स्वरूप तेज पुजनी पूजा करीए ॥ ५ ॥

॥ इति श्री विजयलक्ष्मीसूरिकृत ज्ञानपंचमीना देववदननो अर्थ सपूर्ण ॥

॥ उजमणानो विधि ॥

कोइपण प्रकारना तप संबंधी फळनी वृद्धि माटे उद्यापन करवानी आवश्यकता छे उद्यापन (उजमणु) करवाथी तपनु फळ वृद्धि पामे छे अन्य दर्शनोमा पण तपनु उद्यापन करवानी प्रवृत्ति छे उजमणु तप पूर्ण थया पछी करवामां आवे छे, तेमज तपना मध्यमां पण करी शकाय छे तप पूर्ण थया पछी पण ज्यां सुधी उजमणु करवानी जोगवाइ प्राप्त न थाय त्यां सुधी केटलाक भव्यो तप करवानु चालु राखे छे अने पहेली जोगवाइए अवश्य उजमणु करे छे.

उजमणु करवामा सारी शक्तिवाळा—श्रीमत गृहस्थ तो पोते एकला करे छे. अने ते प्रसगे कोइपण तीर्थनी के समवसरणनी रचना करी अठाइ महोत्सव करे छे. अने स्वामीवात्सल्यादि पण पोतेज करे छे बीजा सामान्य स्थितिवाळाओ ते प्रसगनो लाभ लइने पोते करवा धारेला एक बे के पांच छोड तेनी साथेनी वस्तुओ सहित ते मंडपनी अदरज पधरावे छे

उजमणु करवामां मुख्य तो चदरवो, पुठीयु, तोरण ने रुमाल—अतलस, साटम, कीनख्वाब, छपेटो अथवा झीक चळक विगेरेना भरावीने कराववामां आवे छे उपरांत बीजी जे जे वस्तुओ मुकवामां आवे छे तेमां ज्ञान, दर्शन ने चारित्रना उपकरणो मुकवामां आवे छे तेनी अंदर जो ज्ञानना आराधन निमित्तनु उजमणु होय छे तो ज्ञानना उपकरणो, दर्शनना आराधन निमित्तनु होय तो दर्शनना उपकरणो अने चारित्रना आराधन निमित्तनु होय तो चारित्रना उपकरणो

विशेष मुकवामां आवे छे दर्शन एटले समकित तेना आराधनमां मगळ कारणभूत जिनचैत्य ने जिनबिंब समजवा. एटले ते संबंधी उजमणामां देरासरमां वपराता उपकरणो विशेष मुकवा.

ज्ञानपचमीना उजमणामां छोड तेमज वस्तुओनी संख्या जघन्ये पांच, मध्यमे पचवीश ने उत्कृष्टे एकावन मुकवामा आवे छे. अथवा तो किंमतना प्रमाणमा वधारे किंमतवाळी पांच, मध्य किंमतवाळी पच-वीश अने सामान्य किंमतवाळी एकावन मुकवामां आवे छे.

॥ उजमणा निमित्ते मुख्य करवाना कार्यो ॥

१ पाच नवा चैत्यो कराववा

२ पाच पांच रत्ननी, सुवर्णनी, धातुनी, हीरानी, माणेकनी, मोतीनी, नीलमनी, परवाळानी, स्फटिकनी, आरसनी—एम उत्तम उत्तम अने किंमती वस्तुओनी प्रतिमाओ नवी भरावची

३ पाच अंजनशलाकाओ करावची.

४ पांच पोसहशाळाओ (उपाश्रय) करावची.

५ पाच दीक्षा महोत्सव करवा.

६ पांच वडी दीक्षाना, पन्यास पदवीना अने आचार्य पदवीना महोत्सवो करवा.

७ पांच वखत संघ काढी तीर्थयात्रा करवी-कराववी

८ पांच महातीर्थोनी यात्रा करवी

९ पांच मोटा स्वामीवात्सल्य (नवकारशी) करवां

१० पांच जैन शास्त्रोनो अभ्यास करावनारी जैन विद्याशाळा-ओ स्थापवी.

११ पांच चैत्योपर ध्वजारोपण दंडकळशारोपण करवां.

१२ श्री संघने (श्रावक श्राविकाओने) पहेरामणी करवी.

१३ श्रीफळादि उत्तम उत्तम वस्तुओथी प्रभावनाओ करवी

उपर बतावेली सर्व करणी श्रीमंत गृहस्थे तेमज राजा अने दीवान विगेरे जो ए तप करता होय तो तेमणे उजमणाना प्रसंगे करवानी आवश्यकता छे तेमज उजमणामां मुकवानी वस्तुओमां पण शक्ति अनुसार सोनानी, चांदीनी,जर्मन सील्वरनी तेमज अन्य धातुनी[1] वस्तुओ मुकवी, तेमज वस्त्रादि पण विभव अनुसार कशबी, रेशमी तेमज सुतर मुकवां।

॥ उजमणामां मुकवानी वस्तुओ. ॥

(ज्ञानना उपकरणो)

१ पुस्तक (जैन सिद्धांतो, पंचांगी, ग्रंथो विगेरे लखावीने मुकवा अथवा छपावेली उपयोगी बुको मुकवी)

---

१ लोढानी कोईपण वस्तु न मुकवी

चोवीशीना रंगीत गटाओ, ३९ पाटलुणा, ४० अगलुहणा, ४१ वाळा-कुची, ४२ ओरशीआ, ४३ सुखडना ककडा, ४४ केशरना अने बरासना पडीका, ४५ धूपना–अगरबत्तीना पडीका, ४६ दडासण, ४७ मोरपींछी, ४८ पुंजणी, ४९ रेशमी सावरणी, ५० नरघां अथवा मृदग, ५१ कांशी जोडा, ५२ उत्तम जातिना वाजींत्रो, ५३ पुरुषने पहेरवाना पूजाना वस्त्रोनी जोड (धोतीयुं, उत्तरासण, रुमाल), ५४ स्त्रीओना पूजाना वस्त्रो, ५५ कामळी, ५६ तोरण (गर्भगृहे बांधवाना–चांदी सोना विगेरेना), ५७ मुगट, कुंडल, बाजुबंध, कडली, सांकळां, कदोरा, बीजोरा, कंठो [अश], हार, कलगी विगेरे जिनबिंबना आभूषणो, ५८ चक्षु, तिलक, चाडला विगेरे, ५९ सोना चांदीना वरख,कटोरा, चाडलु विगेरे, ६० हिंगळोकना पडीकां[१]

(चारित्रना उपकरणो)

साधु मुनिराजना उपयोगमां आवे तेवां–१ ओघा (पाटा, दशी, दांडी,निशीथीया,ओघारीया सहित तैयार करेला),२मुहपत्ति, ३ चोळपट्टा ४ कपडा, ५ खभे नाखवानी कामळी,६ओढवानी कामळी,७ झोळी, ८ पल्ला, ९ कटासणा (सथारीया),१० दांडा, ११ पात्रानी जोड, १२ तरपणी, १३ चेतना, १४ लोट (मोटो काष्टनो पाणी भरवानो), १५ नानी सुपटी, १६ नानी पाटली,१७नानी चरवळी, १८ दडासण (पग लुछवाना ने गजे वापरवाना), १९ स्थापनाचार्य, २० स्थापनाचार्यनी मुहपत्तिओ विगेरे, २१ गुच्छा, २२ वासक्षेपना वाबटा, २३ कदोरा विगेरे करवाना दोरा.

१ तर्पोळादि माटे राळ तैयार करवा.

श्रावकना उपयोगमां आवे तेवा-१ चरवळा, २ मुहपत्ति ३ कटासणा, ४ नवकारवाळी (सोनानी, चांदीनी, परवाळानी, स्फटिकनी, अकलबेरनी, सुखडनी, सुतरनी, अगरनी, केरवानी, रुद्राक्षनी विगेरे.) ५ धोतीआ, ६ उत्तरासण, ७ घडी, ८ घडीयाळ, ९ पाचपदनी टीप, १० नवपदनी टीप, ११ देरे लइ जवाना वाटवा, १२ झोरणी, १३ नवकारवाळीनी खलेची

त्रणेना मिश्र उपकरणो.

ज्ञाननी पाठळ, प्रभुनी पाछळ तेमज गुरुनी पाछळ वपराय तेवा तेमज तेनी साथेज करावयामां आवे छे तेवा उपकरणोने मिश्र उपकरणो गणवामां आव्या छे.

१ पुठीयु, २ क्षरमर चंद्रुओ, ३ तोरण, ४ रमाल.

आ चार वानांनी साथेज पाठा, पाटली, वाटवा, झोरणी, खलेची, कवळी, चाबखी, देरे लइ जवानी कोथळी विगेरे करावयामां आवे छे ने ठवणी वधाववामां आवे छे.

आ सघळी चीजोनी सख्या ज्ञानपचमी तपना उजमणा माटे उपर जणावी छे. उपरांत नवपदनु उजमणु होय तो नव नव, मौन अग्यारशनु होय तो अग्यार अग्यार ने वीस स्थानक तपनु होय तो वीस वीस, कर्मसूदन तपनु होय तो आठ आठ अथवा चोसठ चोसठ ए प्रमाणे समजवी.

उजमणु करवाथी तपना फळनी वृद्धि थवा संबंधी श्री प्रवचन सारोद्धारादि ग्रथोमां कह्यु छे तेमज श्री पद्मविजयजी महाराज नवपदनी पूजामां अने श्री वीरविजयजी चोसठ प्रकारी पूजाना कळशमां जणाव्या छे. माटे ॥ यथाशक्ति उजमणु करवु

ज्ञानपचमी तपना

आ तप केटली मुदत सुधी करवो
प्रकार छे लघु पचमी तप, उत्कृष्ट पचं

१ लघुपचमी तप—आ तप पोस
कोइपण मासनी शुक्लपचमीथी शरू करवे
कृष्ण वने पक्षमां पचमीने दिवसे उपवास
पर्यंत २९ उपवास करवा बीजी विधि
पचमीना तप प्रमाणे करवु

२ ज्ञानपचमी तप—आ तप मागश
ज्येष्ठ अने अषाढ ए छ मासमाथी कोइप
करवो अने पांच वर्ष ने पांच मास पर्यं
आ तप पूर्ण थाय छे. आ तपना माटे
दर मासनी शुक्लपचमीएज करवाना आ
मारभमांज लखवामां आवी छे जो
करवामा न आवे तो जिनभक्ति सविशे
भणाववी, फळ नैवेद अनेक प्रकारना उ
अने पछी चैत्यवदन स्तवनादि वडे भाव,

३ उत्कृष्ट पचमी तप—आ तप यावज्
अने दरेक शुक्लपचमीए उपवास करवाम
बताव्या प्रमाणेज छे

ज्ञानपंचमी तपना त्रण प्रकार

आ तप केटली मुदत सुधी करवो तेना प्रमाणने अगे तेना ३० प्रकार छे लघु पचमी तप, उत्कृष्ट पचमी तप.

१ लघुपचमी तप–आ तप पोस अने चैत्र मास वर्जीने बीजा कोइपण मासनी शुक्लपंचमीथी शरु करवो. अने दरेक मासना शुक्ल ने कृष्ण बने पक्षमां पचमीने दिवसे उपवास करवो ए प्रमाणे एक वर्ष पर्यंत २१ उपवास करवा बीजी विधि अने उजमणु विगेरे ज्ञान पचमीना तप प्रमाणे करवु

२ ज्ञानपचमी तप–आ तप मागशर, माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ अने अषाड ए छ मासमाथी कोइपण मासनी शुक्लपचमीए ग्रहण करवो अने पाच वर्ष ने पांच मास पर्यंत करवो एटले ६५ उपवासे आ तप पूर्ण थाय छे. आ तपम माये विशेष करवामां आवे छे ते दर मासनी शुक्लपचमीएज करवामा आवे छे तेनी विधि आ बुकना प्रारभमांज लखवामा आवी छे जो ए उपवासने दिवसे पोसह करवामा न आवे तो जिनभक्ति सविशेषे करवी पचज्ञाननी पूजा भणाववी. फळ नैवेद्य अनेक प्रकारना उत्तम उत्तम प्रभु पासे ढोवा अने पछी चैत्यवदन स्तवनादि मंडे भाव पुजा करवी

३ उत्कृष्ट पचमी तप–आ तप यावज्जीवित करवामां आवे छे. अने दरेक शुक्लपचमीए उपवास करवामा आवे छे तेनो विधि पूर्वे बताव्या प्रमाणेज छे